गपक पियाहुल लोक

गपक पियाहुल लोक

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

GAPAK PIYAHUL LOK (गपक पियाहुल लोक)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-74-2
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2018)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मढ़ि-मढ़ि मणि मनकेँ

प्रज्वलित करू तनकेँ

धुआ-काया पकैड़-पकैड़

दिव्यभूमिक चिन्हू धनकेँ।

जखने मन मणि बनत

छिटकत ज्योति धरतीपर

अपन बाट अपने देखब

हँसैत चलब पृथ्वीपर।

अनुक्रम:

ठका गेलौं

पाँच बजे भोरमे बससँ उतैरते बुझि पड़ल जे भिनसर भऽ गेल। आब सुतैक समय नहि अछि। बरियातीसँ घुमि कऽ आएले रही। कपड़ा बदैलते विचार भेल जे पर-पैखानासँ पहिने भऽ आबी। सएह केलौं। ओना, मनमे दुगदुगी बनले रहए जे जखन बरियातीसँ एलौं हेन तखन जे कियो भेटता ओ बरियातीक समाचार पुछबे करता। मनकेँ सक्कत बनेलौं जे जँ कियो बरियातीक समाचार पुछबे करता तँ जेना-जेना भेल तहिना-तहिना सभ बात साफ-साफ कहि देबैन। कियो अप्पन गलतीक ने जिम्मेवार हएत, अनकर गलतीक जिम्मेबार आन थोड़े होइए। लोटामे पानि लेलौं आ दच्छिन मुहेँक रस्ता पकैड़ विदा भेलौं।

अपना घरसँ दच्छिन जीयालाल कक्काक घर छैन। ओ सभ दिन सबेरे उठि अपन दैनिक कर्म–पर-पैखानासँ आबि, मुँह-हाथ धोइ चाह पीब माल-जालक सेवामे लगि जाइ छैथ। रस्ते कातमे घरो छैन आ रस्ते रूखिये दरबज्जाक मुहोँ छैन्हे। ओना, जखने घरपर सँ विदा भेलौं, तखने मनमे उठि गेल जे आन-आन तँ सुतलो हएत मुदा जीयालाल काका तँ जरूर उठि कऽ अपन माल-जालक नेकरममे लागल हेता। देखिते बरियातीक हाल-चाल पुछबे करता।

जएह शंका छल सएह भेल। जखने जीयालाल कक्काक घरक सोझे पहुँचलौं कि देखलयैन जे गाइयक नादिमे कुट्टी लगा रस्ता दिस तकलैन तँ हमरेपर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते बजला-

“केहेन बरियाती रहलह गणेश?”

ओना, बरियातीमे ठका गेल रही। ठका ई गेल रही जे तेहेन गाम बरियाती गेल छेलौं जइमे बरियातीकेँ खाली एकबेर खाइले भेटैए। बाँकी किछु ने। माने दरबज्जापर गेला पछाइत ने एकोबेर चाह-पान भेटल आ ने जलखैये शरबत भेटल। दरबज्जापर पहुँच चुपचाप पण्डालमे बैसल रहू। लड़का-लड़कीक बिआहक प्रकिया होइत रहत, जखन सिनुरदान भऽ जाएत तखन बरियातीकेँ खाइले भेटत। खेला-पीला पछाइत सवारी पकैड़ अपन घरमुहाँ हौउ। सएह भेल रहए। ओना, जीयालाल काकाकेँ ओइ गामक सभ भाँज बुझल रहैन तँए ने बरियाती गेलैथ।

बजलौं- “काका, सालो भरि जेते बरियाती पुरने छेलौं से सभ निकैल गेल।”

जहिना कोनो बात बुझल रहला पछाइत लोक बिटिया-बिटिया पुछैए तहिना जीयालाल काका आरो बिटिया-बिटया पुछए लगला-

“से की गणेश?”

ओना, ऐ सालक एगारहम बरियाती छल। ऐसँ पहिने दसठाम बरियाती पूरि चुकल छेलौं। दसोठाम खूब मानो-दान भेल आ खेनाइयो-पीनाइ भेल छल, तँए मनमे वएह चपचपी रहए। मुदा भेल तेकर विपरीत। विपरीत होइक कारण भेल जे ओ गाम गदाल अछि, घर-पर-घर छइ। जइसँ बाड़ी-झाड़ीक अभाव सेहो छै आ अग-अगवास सेहो कम छइ। एकचलिया लोक अछि। सौंसे गौआँ मिलि कऽ एहेन नियम बनौने अछि जे जे बड़ैत[1] नगद-नारायण लेत ओइ बरियातीकेँ खूब ठठाएब। से सभ भाँज पण्डालमे बैसते लगि चुकल छल। मुदा गेला पछाइत घुमियो केना जइतौं। तहूमे बससँ गेल छेलौं,

[1] बरक पिता

दस-बारह कोसक दूरी सेहो अछिए। जीयालाल कक्काक प्रश्नक उत्तर दइक विचार कइये रहल छेलौं कि बिच्चेमे मन कड़ुआ गेल जइसँ कनी तामसो लहैर गेल। कहलयैन-

“काका, गामो-गाम कि सभ एक्के रंग अछि। कोनो गाम गामक मुँह होइए ते कोनो गाम एहनो तँ अछिए जे गामक नाँगैर होइए।”

मन गरमा गेले रहए, तँए एना बजा गेल। मुस्की दैत जीयालाल काका बजला-

“से की गणेश?”

बजलौं-

“काका, परसुए जे बरियाती पुरने छेलौं से की कहब। वाह रे सोनबरसा गाम! जाइते देरी पण्डाल देखि मन तेते खुशी भऽ गेल जे खाइ-पीबैले किछु नहियोँ दइत तैयो एको रत्ती मुँह मलिन नइ होइत, तेहेन सजाबट आ बैइसैक बेवस्था केने रहए। मुदा...।”

जीयालाल काका बजला-

“‘मुदा’ की गणेश?”

ओना, जीयालाल कक्काक मुँहक चुहचुहीसँ बुझि पड़ए जे जेना हुनका सभ बात बुझल छैन तँए मन बेसी खुशी छैन, मुदा अपन मन तँ रौतुका ठठाएल छल तँए तामस उठब सोभाविके अछि। तहूमे तेहेन अँठियाहा रसगुल्लो आ लालमोहनो बनौने छल जे जेते खेलौं तइसँ बेसी मन रबरबाइये गेल। मुदा तैयो जी-जाँति कऽ कहलयैन-

“काका, सुआइत पैछला पुरखा सभ अल्लापुर परगानाकेँ ढठने छल।”

ओना, अपना जनैत तरसँ उखाड़ि-उखाड़ि ओइ गामक

हँसारत करए चाहै छलौं मुदा जेना जीयालाल काका ओकरा पक्षमे ठाढ़ भेल होथि तहिना लछन-करमसँ बुझि पड़ए। ओना, बुझियो कऽ की करितौं। एक तँ राघोपुरबला सभ बरियातीक पानि उतारि देलक, तैपर जँ अपनो गौंआँ-घरूआसँ मुहाँ-ठुठी कऽ लेब, तखन रहब केतए। अधलो वृत्ति किए ने केने हुअए मुदा जँ ओकरा रहैक ठौर आ बसैक गाम भेट जाएत तखन के केकर की उखाड़लक जे हमरे कियो ओधि उखाड़ि लेत।

राघोपुरबलाक पक्षमे आ अपन गौंआँक विरोधमे जीयालाल कक्काक विचार जेना बनिगेल छैन तइसँ बुझि पड़ए जे जरूर चोरनुकबा घूस-घास किछु भेटल छैन। मुदा सेहो बिनु देखने उचित बुझब थोड़े भेल। एक तँ ओहुना जीयालाल काका चौरीक केशौरक सोर जकाँ पताल तक खुनै छैथ, तैपर जँ अपनो घोड़ी घास जकाँ– माने फुलही घास जकाँ जे हाथेसँ फुर-फुर उखड़ैए, अपने उखैड़ जाइ, सेहो बुड़िपना छोड़ि आर हएत की? मुदा लगले जेना मनक बेहोशी हटि कनी-मनी होशी आबए लगल। जहिना कोर्टमे वकील सभ अपन पक्ष मजगूत बनबै दुआरे आन-आन राज्य सबहक कानूनक उदाहरण दए-दए अपन पक्ष रखैए तहिना अपन दलीलकेँ सलील बनबैत कलील जकाँ मुँह बिहसेलौं। जे जीयालाल काका परेख लेलैन। अपनाकेँ निष्पक्ष होइत बजला-

“गणेश, ओ गौंआँ ओते थेथर कहाँ बुझि पड़ैए जे पत्थर बनत। ओ तँ उत्थर जकाँ पीछड़ बुझि पड़ैए।”

जहिना घावपर नून छीटने वा कुत्ताक नाँगैरमे पेट्रौल ढारने कछमछी अबै छै तहिना अपन मन कछमछाए लगल। सामंजस करैत कहलयैन- “काका, जेना-जेना भेल तहिना-तहिना सभ खोलि कऽ कहि दइ छी, तखन जे अहाँ निर्णय स्वरूप कहि देब, ओ सोल्होअना किए चौंसैठोअना मानि लेब।”

बजा तँ गेल मुदा लगले मनमे उठि गेल सोलहअनाक माने भेल चौंसैठ पाइ, से केना आना बनि गेल? माने पाइ आना केना बनि गेल? जेते मनक घुरछी छोड़बए चाहै छेलौं तेतबे अम्मत अमतीक झोंझमे ओझराएल जा रहल छेलौं। मुदा जहिना बारह बजे रातिमे डिबियाक तेल नइ रहने तेल बँटनिहार–डीलर–केँ बारहो बिरह बेदना बिरहिनीक मन उकटए लगैए तहिना दू-दिशिया बाट सुझए लगल। अपने मन गवाही देलक जे जीयालाल काका लग कबूल ली जे ‘काका हम ने ऐ घरवारीक कर्ता छेलौं आ ने ओइ घरवारीक धर्ता छेलौं। सामाजिक रूपमे बरियाती रही तँए निष्पक्ष जे बुझि पड़त तेतबे बाजब।’ मुदा ई बात बजैले जहाँ मन सुरखुराएल कि परसुका बरियाती- जे टटका छल, वएह मनमे आबि बजा गेल-

“काका, परसू जे बरियाती गेल छेलौं ओ जिनगी भरि मन रहत।”

खट्-मधुरक चपचपीमे बजा तँ गेल मुदा पछाइत मनमे उठल जे जँ कहीं काका अही चपचपीमे चापि देलैन तखन की करब? फेर हारल नटुआ जकाँ झुटका बीछब..! खाएर, जे राम से राम कहि मनकेँ दबलौं। आब बुड़िबक आकि बेकूफ बुझि काका आरो अथाह पानिमे भँसियाबैथ आकि बुड़िपना बुझि सम्हारैथ, ई हुनकर मनक बात हेतैन। चुपचाप जीयालाल कक्काक मुँह दिस देखए लगलौं। बजला-

“गणेश, आब विचारकेँ पाटि कऽ पटियाबह।”

बजलौं-

“काका, परसू भौर परगनाक सोनबरसा गाम बरियाती गेल छेलौं। एँह की कहब! अखनो मोन पड़ैए तँ सतमसू गढ़ूआर जकाँ जीह चटपट करए लगैए।”

आरो चपचपी दैत जीयालाल काका बजला- "एहेन-एहेन विचार मनमे दाबि कऽ रखबह ते मनरोग भऽ जेतह। तँए जेते बोकैर-बोकैर उल्टी कएल हुअए तेते कइये लएह।"

बजैक क्रममे मन तेतेक उधिया गेल छल जे चप-उनारपर सँ नजरिये हटि गेल। चपचपाइत बजलौं-

"काका, जिनगी भरि बिसरैबला बात नहि अछि। एहेन ठकान जिनगीमे कहियो ने ठकाएल छेलौं।"

बजिते रही कि जीयालाल कक्काक आँखि जेना उनार-चप हुअ लगलैन, जइसँ अपनो मन झुरझुराए लगल जे भरिसक काका केतौ चालैनक भूर देखि रहला अछि। मुदा बजला किछु ने तँए अपन विचारक कड़ीकेँ कड़ियबैत कहलयैन-

"काका, परसुका बरियाती मनमे अबिते विचार तनतनाए लगैए।"

जीयालाल कक्काक मनमे जेना तमस बढ़ि गेल होनि तहिना कडुआइत बजला-

"गणेश, अखन भिनसुरका समय छी, अही समयपर औझुका दिन ठाढ़ हएत, तँए गप-सप्पकेँ समेट कऽ बाजह।"

ओना, अपनो मनमे सएह रहए, किएक तँ ग्रह मंगल हुअए आकि शनि, मुदा ग्रह तँ ग्रहे भेल! तँए जेते जल्दी कटि जाएत ओते ने मनक संग देहो हल्लुक हएत जइसँ देह झाड़ि काज करैमे नीक हएत। जखने मनुक्ख देह झाड़ैक लूरि सीख लेत तखने ओकर जिनगी झड़-झड़ाइत आगू चलबे करत किने...। मनमे अबिते बजलौं-

"भेल तँ तीने दिनक गप। पहिने परसुका कहि दइ छी तखन कौल्हुका कहब।"

हमर विचार जेना जीयालालो काकाकेँ नीक लगलैन। किएक तँ जहिना गाछमे सुभ्भर फूल वा फल वा दाना लगला पछाइत ओकर शोभा द्विगुणित भऽ जाइ छै तहिना जीयालाल कक्काक मुखमण्डल बुझि पड़ल। मुदा बाजि किछु ने रहल छला, खाली मुँह बेर-बेर बिहैस रहल छेलैन...। मौका पेब मौका परस्त बनि मौकासँ लाभ लैत बजलौं-

"काका, सोनबरसाक बरियातीमे एक तँ पण्डाले देखि मन तीरपित भऽ गेल तैसंग लगले ठण्ढ़ा, लगले गरम सेहो पीठेपर..!"

जीयालाल काका बजला-

"मुँह किए बन्न केलह? जखन खाइ-पीबैक विचार करै छह तखन जँ मुहेँ बन्न कऽ लेबह तँ देवता जकाँ की फूल सूँघि रहबह।"

जीयालाल कक्काक विचारसँ बुझि पड़ल जे जहिना कोर्टमे कोनो केस जज अपने हाथे फैसला करए चाहै छैथ, जइसँ केसक सुनवाहि पतिआनी लगा शुरू करै छैथ, भरिसक तहिना जीयालाल काकाकेँ भऽ रहल छैन। परसुका बातकेँ सेरियबैत बजलौं-

"काका, ठण्ढा-गरम पीला पछाइत नीक जकाँ मन थीरो ने भेल छल कि तेहेन फुलडाली नुमा प्लेट हाथमे आएल जे धियान प्लेटक पेट दिस किए जाइत जे बाहरे-बाहर तेहेन रंग-टीप देखलिऐ जे ओहीमे ओझरा गेलौं।"

जीयालाल काका बजला-

"प्लेट कोन छल- डोमौआ डाली आकि सिकीया पहलवानक बनौल सिकीबला मौनी आकि आन कथूक?"

बजलौं- "काका, पहिने तँ बुझि पड़ल जे चानीक बानिपर सोनाक रंग चढ़ल छै, मुदा टोबि-टोबि जखन देखलिऐ तखन बुझलौं प्लास्टिकक प्लेट छी।"

‘प्लास्टिक’ नाओं सुनि जीयालाल काका मुस्कुराइत बजला-

“नीके छेलह, कोनो कि केमिकलसँ बनौल वस्तु थोड़े छेलह जे अपन गुणसँ ओकर रसपान करैत। प्लास्टिकक प्रदूषन होइ छै हाट-बजारसँ जे खोंइचाबला तीमन-तरकारी प्लास्टिबला झोरामे अनबह तइमे। रसायनवती आ रसायनिक ‘घी’मे थोड़े प्रदूषन होइ छइ। अच्छा, जल्दी आब बरियातीक नाँगैर समटह।”

जीयालाल कक्काक बात सुनि मनमे भेल जे हो-न-हो मृत्यु सज्जापर सजल मृत्युवान जकाँ जँ कोनो विचार मनेमे रहि बिच्चेमे प्राण छुटि गेल तखन तँ.., तँए नीक हएत जे जीयालाल काकाकेँ पहिने समयमे बान्हि ली, पछाइत अपन विचारकेँ ओइ अनुकूल सेरिया कऽ व्यक्त करब...। यएह सोचि कहलयैन-

“काका, आन-आन बरियातीमे जे जलखैक पैकेट भेटल ओइमे रसगुल्ला, लालमोहनक संग केरो आ अंगुरो रहै छल आ तैसंग दालमोट आ लिट्टी सेहो रहै छल मुदा सोनबरसाक तँ अजीव छल!”

विचारक बात नइ बजाएल आकि की, एकाएक तुरैछ कऽ जीयालाल काका बजला-

“अजीवकेँ जल्दी सजीव बना बाजह। काजक बेर भऽ गेल, जे गप बाँकी रहि गेलह से साँझमे निचेनसँ करिहह।”

ले बङ्गौर! रीब-रीबेमे समय बीत गेल। दुनू हाथे जीयालाल काकाक दुनू बाँहि पकैड़ बैसबैत बजलौं-

“काका, परसुका बरियातीमे एक्के किस्मक सत्तरहटा विन्यास छल..!”

ऐगला बात पेटेमे छल कि बिच्चेमे जीयालाल काका अधडरेरेपर बजला- “एक किस्मक सत्तरहटा!”

कहलयैन- “एना किए चकोना होइ छी काका, ओ छल मुड़-मुड़ मोलाइम मोरब्बा। जे धात्रीसँ लऽ कऽ कुम्हर तकक बनल छल। जेते खाइत-खाइत आगू बढ़ैत जाइ तेते जीहक पतलिया पानि छुटैत जाए।”

ओना, कुम्हरक मोरब्बा सुनि जीयालाल कक्काक नजैर उठलैन, मुदा बजला किछु ने। भऽ सकैए हुनका मनमे कुम्हरक अछुतपना रहल होनि। तँए ओइ बातकेँ छोड़ि कऽ बजला-

“अच्छा, रौतुका बरियातीक बात बाजह?”

रौतुका बरियातीक नाओं सुनि जेना अपन भक्-मच्छर छुटए लगल। किएक तँ केतए-सँ बात शुरू करब से मनमे सेरियाएले नइ छल। मुदा तैयो मोन पाड़ैत कहलयैन-

“काका, राघोपुरबला एहेन ऐंठल लोक अछि से पहिने दिन भेँट भेल।”

जिज्ञासा करैत जीयालाल काका पुछलैन-

“की ऐंठल लोक राघोपुरबला अछि?”

बजलौं-

“जखने दरबज्जापर पण्डाल लगल देखलिऐ तखने बुझि पड़ल जे सुगरक खोबहारी जकाँ बनल अछि। मुदा मनकेँ कहुना कऽ जतलौं जे बरियाती आएल छी खाइले आकि ओकर पण्डालक कलाकारी देखैले।”

मुस्की दैत जीयालाल काका बजला-

“ई तँ विचारवानक विचार केलह।”

जीयालाल कक्काक विचार सुनि मनमे कनी भरोस भेल जे जखन काका विचारवान कहि देलैन तखन जरूर विचारवान छी।

तँए आब जे बाजब ओ गहीरतासँ बुझता।

बजलौं- “काका, ने कियो कुशल पुछनिहार आ ने कियो चाहे-पान खुऔनिहार-पियौनिहार। दू बजे रातिमे एक्केबेर खाइले देलक। सेहो बाट-बटोही जकाँ..!”

हमर बात सुनि जीयालाल काका बजला-

“गणेश, तूँ ते अपने गणेशजी छह। बखारी जकाँ पेट छह। एना किए भेलह से तँ भाँज लगौने हेबह किने?”

बजलौं-

“सभ भाँज लागल काका। अपन समाजक बात छी तँए अखन तक मुँह बन्न केने रहलौं। मुदा अपनो समाजकेँ नइ जना देब सेहो केहेन हएत, तँए अहाँकेँ कहै छी।”

“जहिना ढेनुआर सहठूल गाए दुहैकाल एहेन बनल रहैए जेना कामधेनु हुअए। मुदा तँए कि लथराह आकि चोरनी गाए नइ होइए सेहो केना नइ कहल जाएत। समाजो तँ समाज छी कोनो प्रशान्त सागर जकाँ अछि तँ कोनो गंगासागर जकाँ, कोनो लालसागर जकाँ अछि तँ कोनो कालासागर जकाँ सेहो अछिए। तहिना अकासमे केतौ करिया मेघ अछि, केतौ लाल मेघ, केतौ चानसँ सजल अधकट्टीसँ पूर्णकट्टी आ केतौ पूर्णकट्टीसँ पूर-पूरनिमा सेहो अछि आ केतौ सुर्ज सजल सेहो अछिए।” तही बीच जीयालाल काका बजला-

“जल्दी अन्त करह बरियातीक बात। एक दिस समयक अभावमे एकसंझू बरियाती भेल, मुदा पान साएसँ हजार बरियाती जाएब असान भऽ गेल अछि। तहिना खाइ-पीबैमे सेहो पाँच गुणासँ पचीस गुणा धरि बढ़िये गेल अछि।”

बजलौं- “काका, समाजमे बेटीक बिआहकेँ जे लेन-देन भारी

समस्या बना देने अछि तइ विरोधमे राधोपुरबला सभ समाधानक रस्ता बरियाती सभकेँ बेइज्जत करैत पुछि रहला अछि। तँए, आन गामक बरियाती सभकेँ खाइ-पीबैमे ठठेबो करैए आ पुछबो करैए जे लेन-देनमे घरवारी दोखी आकि समाज दोखी जे बिआहक गवाही दइले जाइए।"

❑

शब्द संख्या : 2052, तिथि : 18 जून 2018

हारि-जीत

विश्रामान्त समय। जीवन काका एकान्त, एकाग्र एकवनांग बीच बैस सरयुग नदीक तीरपर बैसल तुलसी बाबा जकाँ नहि आ ने काशी स्थान पेब कबीर बाबा सदृश बल्कि, राहुल भाय आ यात्री भाय सदृश जे सदिकाल अपन ओछाइन-बिछाइन समेट कन्हेठ एक बनसँ दोसर बनक बीच बिचड़ैत अनेक जिनगीक रूप-रंग देखनिहार यायावर जकाँ देशक कोण-कोण तँ नहि मुदा कोणे-काणी घुमि-घुमि साठि बर्खक जिनगी खपा चुकल छैथ। अपन बनल-बनौल जिनगीक कोण-कोणकेँ झाँकि-झाँकि देखैक परियास कऽ रहल छैथ। भाय, दुनियाँमे केकरा एते पलखैत छै जे अनकर जिनगीक पनचैती करैमे समय लगौत? पनचैतियो तँ पनचैती छी किने जे कि ओहुना- माने बिनु बुझलो कएल जाइए आ बुझियो-गमि-सुगैम कऽ कएल जाइए। मुदा अपनो अपन दायित्व तँ सभकेँ अछिए। जँ अपनो पनचैती अपने नइ कऽ लेब तँ तेहेन खच्चर दुनियाँ अछि जे दोखीकेँ निरदोखी आ निरदोखीकेँ दोखी बना बना अनेरे चौरासी लाखक मत्यभूमिमे टहलबैत रहत। कियो ऐ दुनियाँक भलेँ ने राजा छी आ ने रंक, मुदा अपन-अपन दुनियाँमे तँ सभ राजो छी आ रंको नइ छी से केना नइ कहबै। छुच्छे हाथे आ खालिये बुधिये ने इजोत-अन्हारक दुनियाँमे आएल छेलौं। तखन तँ भेल जे 'खेलौं-पीलौं धौलौं हाथ, भाय तोरा-हमरा कोन साथ।' जानह तू आ जानी हम, दुनियाँ जनलक सेहो बड़बढ़ियाँ नइ जनलक सेहो बड़बढ़ियाँ..! बिना

महिमा जनने जँ महिमावाने बनि जाएब सेहो बड़ बढ़ियाँ आ महिमा (महि+माँ) महिमावान बनब सेहो बड़बढ़ियाँ, आनी वा मानी सेहो बड़बढ़ियाँ आ नइ जानी सेहो आ नइ मानी सेहो अहाँक बुधिपन भेल। कियो अपना हाथीकेँ अंकुशसँ वश करए वा कियो अपना हाथीकेँ काने छेद कनौसी पहिरा दिअए सेहो बड़बढ़ियाँ...।

अपन जिनगीक पंचनामा लिखैत जीवन काका अपन गामक स्कूल आरम्भसँ शुरू केलैन। जहिना पढ़ल-लिखल परिवारक अग्रिम बच्चा स्वत: अपन अग्रिम भाए-बहिनक अनुकरण करैत ओइ बच्चा सभ जकाँ नहि जे स्कूल जाइ दुआरे कियो नारक टाल आ कियो जनिजातिक बनौल तौला-खपटा फेकल गाड़ा[2]-गहबरक अढ़मे नुकाएत। मुदा मिडिल स्कूल टपला पछाइत हाइ स्कूलक प्रवेश द्वारपर जीवन कक्काक परिवारमे भुमकम भेल।

चारि पीढ़ीसँ अबैत जीवन कक्काक एक पुरखियाह परिवारमे पिताक मृत्यु तहिये भेलैन जहिया जीवन काका तीन बर्खक छला। मुदा परिवारक जे रूपरंगक रोहाणी छल ओ एक समृद्धतम रूपमे छल। ओना, जीवन कक्काक माइक उम्र मात्र तेइस बरख छेलैन, जहिया ओ वैधव्य जिनगीमे प्रवेश केली। मुदा दू सन्तानक (बेटाक) आशा भविसक ड्योढ़ीपर प्रहरीक रूपमे आँखिक सोझ रहबे करैन। तैसंग दोसर आशा ईहो बनले छेलैन जे सिंहासिनीक (माने जीवन कक्काक भाए) अपन खास मौसी विघ्नवासिनी (सात भाए-बहिनमे सभसँ जेठ मृदुराशनी, बीचमे पाँच भाए, सभसँ छोट विघ्नवासिनी) विघ्नवासिनी सेहो अही गाममे (माने जीवन कक्काक गाममे) बसै छेली। सासुर एला साले भरिक पछाइत विघ्नवासिनी वैधव्य बनि अपन जिनगीक साठि बरख बिनु सन्ताने बीता चुकल छेली। मुदा

---

[2] गाड़ा माने अशौच वस्त्र फेकल

माए सदृश सिंहासिनीक आगूमे ठाढ़ भेली। गोर-नार रंग, चौरस देह, मध्यम कद रहने भरल-पुरल शरीर विघ्नवासिनीक। कसमीरा सोन जकाँ माथक सभ केश अपन समरथाइक रंग बदैल चुकल छेलैन। आर्थिक रूपेँ सम्पन्न सेहो आ सामाजिक रीत-रिवाजक सेहो सम्पन्ता छेलैन्हे। तँए गामक अधिकांश लोक 'मैयाँ' नामसँ सम्बोधित करैत रहैन। जेकरा जीवन काका दुनू भाँइ 'नानी मैयाँ' कहैत छेलैन। ओना, आजुक समाजक परिवेशमे अबैत बदलाउसँ लोक-लाजमे ह्रास भेल अछि। मुदा जइ सामाजिक परिवेशक चर्च छी ओइ समाजमे लोक-लाज निष्कलुष विशाल रूपमे जीव रहल छल।

ओना, गाम समाजक बेवहारमे विविधता रहने समाजक हर मनुक्खकेँ शुभ्र जिनगी जीबैक धारणा सेहो अछिए। समुद्रे जकाँ समाज सेहो होइते अछि, जइमे घोंघा-सितुआक संग लाल-मोतीक बेवहार सेहो सभ दिनसँ आबिये रहल अछि। मुदा समाजक जे मूल रीत-रिवाज अछि सेहो कोनो-ने-कोनो रूपमे नइ जीवित अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। महजालक सूत जकाँ जँ कोनो टुटल अछि तँ कोनो-ने-कोनो जोड़ल सक्कत सेहो अछिए।

पिताक मृत्युक समय जीवन काका तीन बर्खक आ जेठ भाय-उमेदलाल पाँच बर्खक छल। मनुक्खक रूपमे माने परिवारमे जन संख्याक हिसाबसँ सेहो जीवन कक्काक परिवार सम्पन्न छेलैन्हे। जीवन कक्काक पिता- रघुवंशलाल दू भाए-बहिन। जेठ रूक्मिणी आ छोट रघुवंशलाल। ओना, समाजमे बाल-बिआहक चलैन रहने रघुवंशोलालक बिआह भऽ गेल छेलैन आ रूक्मिणीक बिआह सेहो भऽ गेल छल।

चालीस बर्ख पूर्व रूक्मिणीक सासुर-गाम कोसीक चपेटमे आबि गेल। शुरूमे पाँच-सात बेर सालमे बाढ़ि गाममे आएब शुरू

भऽ गेल। कोसी धारसँ पच्छिम किसानपुर गाम! कोसी धारक झुकाव माने बाढ़िक बहाव, पच्छिम रूखिये होमए लगल। शुरूमे खेतक अन्न-पानिक क्षति होइत रहल, पछाइत गाछ-बिरीछ सुखए लगल। जे किसानपुर गाम गाछ-बिरीछसँ सुन्दर वन सदृश छल ओ धीरे-धीरे सुखि-सुखि उजाड़ हुअ लगल। ओना, किसानपुरमे जहिना जामबन्तो फलक गाछ छल तहिना जामबन्तो फूलो आ काठ-सुकाठक गाछ सेहो छेलैहे। तैसंग सुन्दरे वन जकाँ चन्दनसँ लऽ कऽ बगुरबोनी धरि सेहो छेलैहे। जनकक फुलवारी-फलवारी जकाँ फुलवारी-फलवारी सेहो छेलैहे। फलोमे आम-जामुन, लताम, बेल वनक संग खेतमे साले-साल उपजैत खीरा-गुरमीक संग फुइट-काँकैड़-तरभुज सेहो लुबैधते रहै छल। बारहो विरहिणी अन्नोक उपज सेहो होइते छल। कृत्रिम रूपमे खुनाएल पोखैर-इनारसँ सेहो किसानपुर सम्पन्न छेलैहे।

दुखोक सीमा होइ छइ। जाबे धरि रूक्मिणी किसानपुरमे बाढ़िक प्रकोपकेँ अंगेज सकली ताबे धरि अपन पुर्खाक घर-घराड़ी आ खेत-पथार दुखो काटि धेने रहली। मुदा जखन असहाज दुख हुअ लगलैन माने खेतक उपजाक संग खेतो कटि-कटि बहता धार बनि गेलैन आ घर-घराड़ी चौरी सदृश बनि गेलैन तेकर बाद दुनू परानी- रूक्मिणी अपन दुनू बेटाक संग–जे एकटा सात बर्खक आ दोसर चारि बर्खक छल–अपन गाम किसानपुर छोड़ि देलैन। ओना, अपन चारू घरो खसि (घारमे कटि) पड़लैन, बीघा भरिक गाछी-कलम सेहो सुखि गेलैन। पनरह कट्ठाक पोखैर आ दलानक आगूक इनार सेहो कटानसँ नष्ट भऽ गेल छेलैन।

एक तँ ओहुना बेटीक दरकार माता-पिताक संग अछिए, तहूमे बिपैतिक मारल रूक्मिणी छेलीहे, अपन सासुर- किसानपुर छोड़ि चारू परानी नैहर- लालपुर अबैक विचार केली। ओना, रूक्मिणीक

मनमे नैहरक बासक प्रति आह्लाद रहैन मुदा पति- श्यामलालक मनमे रहैन जे दुनियाँमे केतौ बास करी मुदा सासुरक गाममे नहि बास करी। तँए दुनू परानीक विचारक बीच कनी-मनी दूरी रहबे करैन। मुदा स्वबस आ बेबसक सेहो अपन चास-बास होइते अछि। माने जहिना स्वबसीक लेल चास-बास चाही तहिना चास-बास उजड़ने लोक बेवस भऽ स्वबससँ बेवस भइये जाइए। ओना, बेवसक बीच केना स्वबसी बनि जीवन धारण करब, ई दीगर बात भेल। जे मनुक्खक बिचड़ैत बुधिक बीच गोलानुमा[3] विवेकक बीच बिचड़ैत अछि। रूक्मिणी सपरिवार किसानपुर सँ लालपुर विदा भेली।

लालपुर गामक सीमापर पहुँचते रूक्मिणीकेँ बुकौर लगि गेलैन। बुकौर लगैक कारण भेलैन जे जे गाम, माने नैहर, सँ माइयो-बाप (मातो-पिता) आ सरो-समाज दुरागमनमे अरियाति विदा केलैन, सासुर (किसानपुर) केँ उजड़ने पुन: अही गाम (नैहर) क भेल। यएह सीमा (गामक सीमा) छी जैठाम तक सभ अरियाति विदा केलैन। गामक सीमानपर एकटा पाखैर-गाछ रस्ते-कातमे अछि। ओकरे छाहैरमे चारू प्राणी रूक्मिणी बैस लालपुर गाम दिस देखए लगली। तही बीच लालपुरेक एक बेकती बजारसँ अबै छला। पाखैर-गाछ लग अबिते दुखमोचनो रूक्मिणीकेँ चिन्हलैन आ रूक्मिणी सेहो दुखमोचनकेँ चीन्हलक। चीन्हिते रूक्मिणी फफैक-फफैक कानैत बाजल-

“भैया हौ भैया, जइ गामसँ सभ विदा कऽ देने छेलह आइ ओही गामक आशा भेल हौ भैया।”

ओना, दुखमोचनकेँ बुझल जे किसानपुर कोसी धारमे कटि गेल तँए सभतूर रूक्मिणी लालपुर आएल अछि। दुखमोचन बाजल-

---

[3] ठास वस्तु

“बहिन, लोकेक आशा लोककेँ होइ छइ। तूँ ते सहजे अपन भाए-बापक ऐठाम एलेँ हेन। कान जुनि, चल हमरा संगे।”

चारू गोरे रूक्मिणियो आ दुखमोचनो गाम दिस बढ़ल।

ओना, एहेन परिस्थितिमे अनेको रस्ता अछि, जेना रूक्मिणीकेँ अलगसँ बेवस्था करब। मुदा से नहि भेल। भाए-बहिन जकाँ रूक्मिणीक परिवार आ रघुवंशलालक परिवार सम्मिलित रूपमे रहए लगल। बाल-बिआहक चलैन रहने रूक्मिणीक दुनू बेटाक बिआह सेहो लालपुरेमे भेल। मुदा श्यामलालक मन अपन पैतृक भूमिक नष्टक सोगसँ दिनानुदिन खसैत गेलैन। ओना, धन-सम्पैतकेँ गौण बुझि मनुक्खकेँ अपन भविसक जिनगीक पूजा-अर्चना करक चाही मुदा से तँ समझदारीमे समाएल अछि जे कियो-कियो बुझबो करै छैथ आ कियो-कियो नहियोँ बुझै छैथ। श्यामलाल सेहो नहि बुझि सकला। किछु सालक पछाइत मरि गेला। ओना, धन-सम्पैतक संग पतिक मृत्यु रूक्मिणीक मनकेँ सेहो धकियबैत रहैन मुदा दुनू बेटा आ नैहरक परिवार रूक्मिणीक मनक विचारक टुटैत धारकेँ कोनो-ने-कोनो रूपमे बान्हि-छेक रखने रहलैन।

समय बीतल। रूक्मिणीक दुनू बेटाक दुरागमन सेहो भेलैन। भाइयो (रघुवंशलाल) जीविते छेलैन। एक दिस पतिक बिछोह तँ दोसर दिस भाइक संग बेटा-पुतोहुक सहारा, रूक्मिणीकेँ भेटबे केलैन। मुदा जहिना कोनो रोग शरीरमे जन्म लऽ नहु-नहु बढ़ैत जाइए, जेकर अन्त मृत्युक रूपमे होइए तहिना रूक्मिणीकेँ सेहो भेलैन। लालपुर एला करीब पनरह बर्खक पछाइत रूक्मिणी मरि गेली। अपन धर्मक हिसाबसँ रघुवंशलाल घराड़ीक संग दस कट्ठा जोतसीम जमीन दुनू भागिनकेँ कीन देलखिन।

चालीस बर्खक पछाइत किसानपुर गामसँ कोसी हटल।

गामक खेत-पथार जगल माने उपजा-जोकर भेल। मुदा काश-पटेर-झौआ इत्यादिक वन सेहो स्वत: लगि गेल। अपन बाप-दादाक खेत-पथार जगने दुनू भाँइ- माने जीयालाल आ सियालाल अपन गाम-किसानपुर जा कऽ रहैक विचार केलैन। मातृक- लालपुरसँ चारि-पाँच दिनक खाइ-पीबैक सामान लऽ जा कोदारिसँ खेत-पथार बनबए लगला। मास दिनक मेहनतसँ एक बीघा उपजाउ खेत बनौलैन। तैबीच मनेजर[4], झौआ आ काश-पटेरक एकटा रहैक घर सेहो बना नेने छला। दुनू भाँइ- जीयालाल आ सीयालाल अपन पैतृक गाम चलि गेला। तइ समय जीवनलाल मिडिल स्कूलसँ निकैल हाइ स्कूलमे प्रवेश कऽ चुकल छला आ पिताक मुइना सेहो दस बर्ख भऽ चुकल छेलैन। जे परिवार दस बेकतीसँ सम्पन्न छल, माने सब तरहक (सभ उमेरक) रहने परिवार नीक जकाँ चलि रहल छल, ओ एकाएक टुटि कऽ तीन बेकतीपर माने दुनू भाँइ जीवन काका आ उमेदलाल कक्काक संग विधबा माएपर आबि अँटैक गेल।

दोसर घटना (भुमकम) जीवन कक्काक परिवारमे ई भेलैन जे अपन पारिवारिक खेत ओते नइ रहैन जेतेक खेती परिवारमे होइत आबि रहल छेलैन। सभ दिन एक जोड़ बरद राखि एक हरक खेती होइत रहलैन। आजुक परिवेशमे खेतीक नव-नव तकनीक एने जहिना खेतक उपज बढ़ल तहिना खेतक काज सेहो बढ़ल। ओइ समय दसो बीधाक खेती असान छल किएक तँ धानक खेती मात्र मुख्य फसिल छल बाँकी फसिलक खेती ओहन नइ छल। गहुमक खेतीक वैज्ञानिक (आधुनिक) रूप नहि पकड़ने छल। रासायनिक खाद आ नव-नव उपजशील बीआक चरचो नहियेँ छल। मात्र धानक खेती असानीसँ होइत रहइ। बिहरिया हाल[5] भेला पछाइत किसान

[4] एक प्रकारक गाछ

[5] जेठमे अगता बरखा

धानक बीआ पाड़ैत रहैथ, जे मास दिनसँ लऽ कऽ डेढ़-दू मास धरिक बीच रोपाउ रहै छल। तेकर अतिरिक्तो खड़ुहर (खौड़) बीआ खेतीसँ एक-डेढ़ मास आगू तक चलैत रहइ। रब्बीक खेती जे कातिकमे बाउग कएल जाइ छेलै ओ खेतेमे छीटुआ बाउग होइ छेलइ। ओना, किछु दलिहनक खेती जेना बदाम टोभुआ सेहो होइत छल आ जोता सेहो होइत छल। जइ साल मघाइर बरखा[6] होइत छल तइ साल रब्बीक उपज नीक होइत छल आ जइ साल नइ होइत छल तइ साल दब होइत छल।

लालपुर गाममे पाहीपट्टीक (पाहीपट्टी भेल अनगौंआँ) जमीन बेसी छल माने गामक तीन-चौथाइ जमीन पाहीपट्टीक छल आ एक-चौथाइ गौंआँक। पाहीपट्टीबला अपन हर-बरद नइ रखने छला जइसँ गौंआँ सभ अदहा-अदहीक दरे बँटाइ खेती करै छला। जीवन कक्काक परिवारमे सेहो चारि बीघा बँटाइ खेत छेलैन। संयोग बनल, देशक स्वतंत्रताक किछु दिन पूर्वहि जमीनक अधिकार लेल उथल-पुथल शुरू भेल। अनगौंआँ सभ अपन-अपन आन गामक जमीन बेचि-बेचि अपना गाम दिस बढ़ला। लालपुरक जमीन सेहो बिकाएल, जे लालपुरेबला कीनलक। गौंआँक हाथ जमीन एने जीवन कक्काक जे बँटाइ जमीन छेलैन ओ छुटि गेलैन जइसँ उपज अधियापर चलि एलैन।

मिडिल स्कूलसँ टपला पछाइत जीवन काकाकेँ हाइ स्कूल प्रवेश करैक बीच परिवारमे दुनू घटना भेल छेलैन। हाइ स्कूलमे दृढ़ताक संग जीवन काका नाओं लिखौलैन जे एम.ए. तक जरूर पढ़ब। संजोग बनियेँ गेल छेलैन जे घरसँ (लालपुरसँ) पाँच-छह मीलक दूरीपर हाइ स्कूलक संग बी.ए. तकक कौलेज सेहो खुजिये गेल छल। जीवन कक्काक परिवारमे जाबे तक दुनू पिसियौत भाय

[6] जाड़क मासमे बरखा

रहै छेलैन ताबे तक खेतीक संग-संग नगद आमदनीक लेल महींस पोसब सेहो छेलैन, जे पिसियौत भायकेँ अपन गाम चलि गेने ओहो समाप्त भऽ गेलैन।

देशक आजादीक, माने उन्नैस साए साठि इस्वीक लगभगक समय छी। अखन धरि[7] माने पैछला पीढ़ी तक लालपुरमे अंग्रेजी शिक्षा नहि आएल छल...। मुदा संस्कृत शिक्षाक विकास भऽ चुकल छल। आजादीक बाद माने 1947 इस्वीक बाद जे पीढ़ी माने ऐगला पीढ़ी शिक्षाक क्षेत्रमे बढ़ल ओ अंग्रेजी शिक्षाक माध्यमसँ बढ़ल, जइसँ बी.ए. तकक डिग्रीक प्रवेश पौलक। अखन धरिक जे जीवन कक्काक परिवार रहलैन ओइमे जबरदस झमार पड़िये चुकल छेलैन। मुदा तैयो एतेक आशा तँ जीवन कक्काक मनमे रहबे करैन जे परिवारक हिसाबसँ जमीनो अछिए। किए तँ जे परिवार दस गोरेक छेलैन ओ तीन गोरेपर आबि गेल रहैन, भलेँ ओ बाले-बोध आ विधवेक किए ने हुअए। किसान जहिना सालक शुरूहेमे माने खेती करैक समयसँ पूर्वहि अपना मनमे जोड़ए लगै छैथ जे फल्लाँ खेतमे ई धान रोपब आ फल्लाँ खेतमे ओ धान रोपब, चाहे गाछी-कलम लगौनिहार जहिना गाछ लगबैसँ पूर्वे मनमे रोपि लइ छैथ जे फल्लाँ-फल्लाँ आमक गाछ रोपब, चाहे कोनो बेपारी जहिना अपन कारोबार करैसँ पहिनहि मनमे रोपि लइ छैथ जे फल्लाँ-फल्लाँ वस्तुक कारोबार करब तहिना ने लोअर प्राइमरी स्कूल वा मिडिल स्कूलक बच्चा सेहो अपनामे रोपिते अछि जे डॉक्टरी पढ़ब, इंजीनिरिंग पढ़ब, वकालत पढ़ब इत्यादि-इत्यादि।

अपन चढ़ैत-उतरैत परिवारक स्थितिकेँ जीवन काका तँ नीक जकाँ नहि बुझि पबै छला मुदा अपन जिनगीक विचार तँ मनमे

[7] 1947 इस्वी

उठिते छेलैन। मनमे जागि चुकल छेलैन जे अखन तक गामक शिक्षाक ऊँचाइक सीमा बी.ए. तक रहल, ओकरा बढ़ा हम एम.ए. जरूर बनाएब। जखने पैघ घर बनबैक विचार कियो मनमे रोपै छैथ तखने नमहर घराड़ियो आ बेसी समचोक ओरियानक पाछू लगबे करै छैथ।

सामाजिक आ परिवारक जीवनमे (माने जेहेन वातावरण, अर्थात् संस्कार) जइ परिवारकेँ जेहेन वातावरण भेटैत अछि माने प्रतिकूलोमे जेहेन प्रतिकूल आ अनुकूलोमे जेहेन अनुकूल ओही हिसाबसँ ने ओइ परिवारक बच्चाक मनोदशा सेहो ओहि दिशा दिस नहु-नहु बढ़ि जाइ छइ। अदम्य साहस आ बिसवासक संग जीवन काका हाइ स्कूलमे नाओं लिखेलैन।

आइ धरिक माने स्वतंत्रतासँ पूर्व धरिक जे सामाजिक-पारिवारिक जीवन रहल ओ जीवनक रहस्यसँ दूर हटैत गेल, जे परतंत्र शासनक हटबैक गुण छी, ओही अनुकूल उमेदलालक जीवन बनि गेल छेलैन जे विभीषण-रावण सदृश जीवन कक्काक पढ़ाइक बाधक बनि गेल छेलैन। भाय, दुख हुअए कि सुख, ओ तँ चाहे तरे-मुहेँ आकि ऊपरे-मुहेँ किछु-ने-किछु बढ़ैक अपन प्रभाव तँ छोड़िते अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहए।

संजोग बनल, हाइ स्कूल- जइमे मैट्रिक तक पढ़ाइ होइ छल, ओ हायर सेकेण्डरी बनि गेल। तइसँ पहिने कौलेजमे जे दू साल आइ.ए. आ बी.ए.क छल ओ बदैल कऽ एक साल प्री बनि गेल आ बी.ए. घुसैक कऽ तीन सालक बनि गेल। ओना, ओइ समयमे मैट्रिकोक आ ओइसँ ऊपरको क्लासक रिजल्ट प्राय: आर्यावर्त आ इण्डियन नेशन अखबारक माध्यमसँ निकलै छल। स्कूलक पहिल हायर सेकेण्डरी बैचक नीक रिजल्ट भेने स्कूलक संस्थापको आ शिक्षकोक संग विद्यार्थियो आ अभिभावकोक मनमे खुशीक लहैर

उठिये गेल छल।

हायर सेकेण्डरीसँ पास केलाक पछाइत जीवन काका कौलेजमे नाओं लिखौलैन। कौलेजक वातावरण अनुकूल नहि रहितौ, कौलेजक माहवारी फीसक छूट भेटबे केलैन। हायर सेकेण्डरीसँ पास केलाक पछाइत जीवन कक्काक एडमिशन सोझे बी.ए. पार्ट वनमे भेलैन। मंजील दूर नहि, भाय! दुखसँ दुखाएल दुखी सुनू, जागरूकक जय निसचित अछि, गमाए चुकैत सुतैबला।

कौलेजक अध्ययनमे जीवन काका मनसँ हारि गेला। हारि ई गेला जे जइ विषयमे रूचि गड़ि चुकल छेलैन ओइ विषयक पढ़ाइ ओइ कौलेजमे नहि होइ छल जइ कौलेजमे पढ़ब सुविधाजनक रहैन। जीवन काकार्कें घरपरसँ शिक्षण संस्थान पहुँच शिक्षा ग्रहण करब अनुकूल छेलैन मुदा घर छोड़ि, माने परिवारसँ अलग भऽ शिक्षा ग्रहण करब सोल्होअना प्रतिकूल रहैन। तेकर अनेको कारणमे तीन कारण प्रमुख छेलैन। पहिल, सामाजिक वातावरण एते विषाक्त अछि जे जहिना मुँहपर बच्चार्कें असिरवाद देनिहार जे सुबुध हेबाक दइ छल ओ परोछमे सुबुध देखि जरबो करै छल जइसँ समाजमे छोट-पैघक बीच आगि लगले छल। दोसर, जेठ भाइक चरित्र एते निम्नसँ निम्नतर स्तरमे पहुँच गेल छेलैन जे भौयारीक बीच वैचारिक सम्बन्ध बनब असहज भऽ गेल छेलैन। तेसर, जइ परिवारकेँ उठबैले (परिवारेसँ समाज निर्मित होइए) जीवन काका अपन शक्ति समर्पित करए चाहै छला वएह नष्ट हेबाक कागारपर पहुँच चुकल छल तँए घर छोड़ब कठिन छेलैन।

ओना, जीवन काकार्कें बी.ए.सँ आगू पढ़ैमे आर्थिक मजबूरी ओतेक नइ रहैन जेतेक वैचारिक। किएक तँ माए अपन नैहरक गहना पढ़ैक पाछू गमबैले तैयार भऽ चुकल छेलैन। माइक मनमे

सदैत यएह नचैत छेलैन जे पढ़ि-लिखि बाल-बच्चा सुबोध बनैए जइसँ सुचालि पकैड़ सुशील बनि परिवारक सान चमकबैए। माता-पिताक यएह विचार ने परिवारक भविस निर्माणक नीव गाड़ैत चलैए। जी-जाँति जीवन काका प्राइवेटसँ अनार्सक तैयारी करए लगला। दोसर कौलेजसँ परीक्षा देबाक आदेश युनिवर्सिटीसँ भेट गेलैन। बी.ए. आनर्स प्राप्त करैत बिनु कोनो लागि-लपेटक जीवन काका एम.ए.मे नाओं लिखा लेलैन। ओना, ओइ समयमे- माने छठम-सातम दशकमे सभ जनै छल जे हाइ स्कूल जकाँ कौलेज नअ मास नहि चलि मात्र छअ मास चलैए। जइसँ दू बर्खक बाहरक जिनगी एक बर्ख भेल। तहूमे एक लखाइत नहि। बीचो-बीच दुनू चलैत, माने पढ़ाइयो आ छुटियो...।

एम.ए.मे प्रवेश करैसँ पहिनहि जीवन काका अपन किसानी जिनगीकेँ मनमे रोपि नेने छला। तेकर कारण छल जे जीवन कक्काक मनक मैलकेँ विचार तेना धोइ देलकैन जे पवित्र बनैत पवित्रतम बनि चुकल रहैन जइसँ विचार बनि गेल छेलैन जे जखन गूँह-मूत करैबला डॉक्टरकेँ समाजमे एते पूछ अछि, लोहा-लक्कर करैबला इंजीनियरकेँ एते पूछ अछि तखन कृषि कर्मी बनब कोना अधला? तहूमे जखन कृषि फार्म बनबैले पैछले पुरखा एतेक अरैज गेल छैथ जे अपना सिर्फ ओकरा करामाती चालि पकड़ा करामात करैक अछि तखन...। जीवनक असीम सम्भावना तँ कृषिमे अछिए। तोहूमे ओहन गीति गाइन केतबो भोला बाबाक नचारी गौती आ रहती गाम छोड़ि आन गाममे, तखन जेहेन नचारीक उधारी हेतैन से तँ रामजीकेँ सेहो दशरथजी अपन पत्रमे जनाइये देने छेलखिन।

एम.ए. करैसँ पहिने जीवन काका विचारिये नेने छला नोकरियोक अपन स्तर छइ। से नहि भेने तँ मनमे कुवाथ होइते छइ। कुवाथोकेँ तँ अपन प्रभाव छइ। कियो कुवाथकेँ हँसि-बाजि उड़ा

दइए आ कियो कुवाथकेँ हँसिया हँसि हँसा पचन करैए।

साठि बर्खक अपन जिनगीक अनुभवकेँ जीवन काका ओइ सीमापर आनि ठाढ़ कऽ लेला जैठामसँ परिवारक अग्रिम पीढ़ीक शुरूआत होइए। अनायास मनमे एलैन जे अपन जिनगी तँ जिनगी जकाँ जीलौं, अखनो महाभारतक अभिमन्यु जकाँ मन बनले अछि। मुदा अपनो दायित्वक तँ सीमा अछिए। दुनू बेटा-पुतोहुपर नजैर बढ़लैन, बढ़िते जहिना धानक अधपकू चासपर थारी फेकने छिछलए लगैए, पोखरिक पानिपर झुटका फेकने ऊपरे-ऊपर छिछलैत अपन गणतव्य तक पहुँचैए तहिना जीवन कक्काक मन बेटा-पुतोहुपर सँ छिछलैत पोता-पीतीपर पहुँच समुच्चा परिवारपर छिछलए लगलैन।

हार-जीतक बीच सीमापर ठाढ़ जीवन काका अपन जिनगीक समीक्षा कऽ रहल छैथ। मारियो खेलौं, जहलो गेलौं, मारबो केलिऐ आ जहलो कटौलिऐ, यएह तँ जिनगी रहल। मुदा मारि किए खेलौं, जहल किए गेलौं आ मारलिऐ किए आ जहल किए केकरो कटौलिऐ..? ऐठाम आबि एकाएक विचार ठमैक गेलैन। अमती काँटक झोंझ जहिना काँटक होइए तहिना तँ बिनु काँटोक झोंझ होइते अछि। मुदा कोन झोझकेँ केना पार कएल जाइए, ऐठाम आबि जीवन कक्काक मन बिहुसए लगलैन। जीवन कक्काक बिहुसैत मन एकाएक फुरफुरेलैन। नीक-बेजए आ हार-जीत तँ जनगीक बीच धारक दुनू कछेर छी, तैबीच काँटक खरोंच लगबे करत किने।

अपन आगूक पीढ़ीक दुनू बेटापर नजैर उठिते जीवन काका कखनो ऊपर देखै छला तँ कखनो नजैर निच्चाँ उतैर जाइ छेलैन। मनमे अनायास उठलैन- जइ पीढ़ीकेँ माने दुनू बेटाकेँ एक बट्टू धारक दिशामे बहाबैक छल ओ कहाँ भऽ सकल! की अनाड़ी कुम्हार जकाँ बरतन गढ़ैमे केतौ भूल भेल? जँ भूल भेल तँ ओही समय ने ओइ

भूलकेँ सुधारैक समय छल मुदा से भेल कहाँ..?

जिनगीक धारक बीच फुटैत मोनिक कारण जीवन कक्काक मनमे नीक जकाँ किछु आबिये ने रहल छेलैन। नजैर उठा जखन देखै छला तँ जेठ बेटा- सुशील आ छोट बेटा- कुशीलक बीच बुझिये ने पेब रहल छला जे दुनूक बीच एतेक दूरी केना बनि गेल? दूरी सिर्फ वैचारिके नहि, बेवहारिक सेहो बनबे कएल।

अपन जिनगीक क्रियापर जखन जीवन काका नजैर दौड़बैथ तँ अपन भूल केतौ ने बुझि पड़ैन। मुदा बिना भूल भेने एहेन परिणाम किए भेल? दुनू बेटाक बीच जखन माता-पिताक रूपमे सीमांकन करए लगला तखन जीवन काकाकेँ अपन सीमापर नजैर पड़लैन। सीमापर नजैर पड़िते अपन दुनू परानीक बीच जीवनक बाट जखन सोझामे पड़लैन तखन मन मानि गेलैन जे दुनू परानीक बीच बेवहारिको दूरी अछि आ वैचारिको दूरी किछु-ने-किछु नहि अछि सेहो केना नइ मानल जाएत। मुदा जैठाम सभ कियो ऐ दुनियाँकेँ अपन बुझि भ्रमण करैए तखन किछु-ने-किछु भ्रमित भइये जाइए। हेबो किए ने करत। जहिना बारह घन्टा धरि सुर्ज अकासमे उगि दुनियाँ देखैक इजोत पसारैए तहिना कि अन्धकार अपन अन्ध पसारि बारह घन्टा अन्हार नइ पसारैए? पसारिते अछि। अही अन्हार-इजोतक बीच ने दुनियाँक यात्री दुनियाँक भ्रमण करैए।

विचारक दुनियाँमे भरमैत-भरमैत जीवन काका अपन जखन सीमांकन केलैन तखन बुझि पड़लैन जे अपन जे जिनगी अछि ओकरा जँ दोखी वा हारल मानब तँ निरदोखी वा जीतल सेहो मानए पड़त। दोसराक ऊपर जँ सोल्होअना नजैर राखि देखैत रहब सेहो तँ सम्भव नहियेँ अछि। अपनो तँ हाथ-पएर लऽ कऽ किछु करैये-ले आएल छी।

अन्तो-अन्त जीवन काका अपन जिनगीकेँ नहियेँ सोझरा पेला जे दोखी बनि जीबै छी आकि निरदोखी बनि। माने ई जे हारल जिनगी जीला आकि जीतल जिनगी जीला। जखन दोख-निरदोखक निर्णये नहि हएत तखन जिनगीक हारि-जीत बुझब केना?

❑

शब्द संख्या : 3190, तिथि : 24 जून 2018

पनचैती पनपना गेल

जेठ मास अन्त होइ-होइपर छल मुदा पूरनिमा नइ भेने सम्पन्न नहि भेल छल। ओना परसुए आद्रा चढ़ि गेल मुदा छी जेठे। पूरनिमो काल्हिये छी। जनतंत्र शासन छी तँए बहुमतसँ जेठकेँ समाप्ते बुझल जेबाक चाही। मुदा सेहो जँ मानि लेब तखन पतरा-पुराण तँ मारल जाएत किने तँए जेठे मानब बेसी नीक।

दिनक एके बजेमे पता चलल जे उचितलाल भायकेँ तीनू भाँइ–अर्जुन, नकुल आ सहदेव मारबो केलकैन, गलहत्थो देलकैन आ गरदेन पकैड़ मोकबो केलकैन, तेकरे पनचैती हएत। ऐठाम एकटा बात जे अस्पष्ट अछि ओकरा स्पष्ट कऽ दइ छी। तीनू भाँइ–अर्जुन, नकुल आ सहदेवकेँ महाभारतक पात्र नहि बुझबैन, ओ सिंहेश्वर कक्काक अपन देन छिऐन। देनक कारण छैन जे जहिना रामायण पढ़निहार अपन धिया-पुताक नाओं रामायणिक पात्रानुसार रखै छैथ आ हनुमत भक्तिभावसँ जीवन यात्रा करै छैथ तहिना सिंहेश्वर काका महाभारत पढ़निहार छैथ, तँए दुनू परानी मिलि अपन धिया-पुताक नाओं महाभारतक पात्रानुकूल रखने छैथ आ व्यास भक्तिक रसपान करैत जीवन यात्रा करै छैथ। अनेरे किए ओ वीणा एकतारा लऽ कऽ नारदजी जकाँ अकास-पताल घुमता, तँए नारदीय भक्ति-भावसँ सिंहेश्वर काका अपनाकेँ परहेज केने छैथ।

सिंहेश्वर काका दू भाँइ छैथ, दुनू भाँइमे बीस सालसँ भिनौजी छैन। जोतसीम खेत बाँटि नेने छैथ मुदा गाछियो-कलम आ

फुलबाड़ियो शामिले रखने छैथ। तइ पाछू दुनू भैयारीक अपन सोच-विचार छैन। सोच ई छैन जे खेती तँ सभदिना छी तेँ अपन-अपन करबो करब अछि आ अपन-अपन भोगबो करब अछि, मुदा गाछी-कलम तँ भलेँ अपन रोपल किए ने छी मुदा ओकरा फड़ाएब तँ अपना हाथमे अछि नहि, सालमे एकबेर फड़त कि नइ फड़त, तहूमे जँ एक दियादक गाछ फड़ि जाए आ दोसर दियादक गाछ फड़बे ने करए, तखन तँ खाइ-पीबैमे दू रंग भऽ जाएत, तँए ओकरा एकरंग रखैक नीक रस्ता यएह अछि जे गाछीकेँ शामिले राखू, फले बाँटि लेब। तीनटा गाछ मालदहक छैन, आद्रा पाबैन दुआरे वएह आम दुनू भैयारी मिलि तोड़ने छला, ओही आमक हिस्साक बँटवारामे उचितलाल भाय पंच छैथ।

एक तँ सिंहेश्वर कक्काक गलती भेलैन जे जखन अपन घरक चीज (आम) छेलैन तखन किए ने अपने दुनू भैयारी मिलि एक भैयारी आमक जोड़ा लगा-लगा दोसर भैयारीक हाथमे देने जइतैथ आ जिनका हाथमे आम जइतैन ओ दुनू दिस केने जइतैथ। मुदा से भेल नहि। नइ होइक कारण बुझले अछि, एकटा मौगीक[8] खातिर महाभारत भऽ गेल, एकटा मौगीक[9] खातिर अयोधियासँ लंका तक उजाड़ भऽ गेल, तखन जँ गामक भैयारीमे पंच नहि आबैथ सेहो मौगुपने हएत किने।

दुनू भैयारी सिंहेश्वर काका उचितलाल भायकेँ आमक बँटबाराक पंच माननलैन। मानियेँ नहि लेलैन, जा कऽ कहबो केलखिन जे तीन गाछ मालदह आम आद्रा पाबैन-ले तोड़लौं हेन से अपने पंच बनि बाँटि दियौ।

---

[8] द्रोपदीक

[9] सीताक

उचितलाल भाय ओना सामाजिको पनचैतीमे सेहो जाइते छैथ मुदा आम-कटहरक पनचैतीक तँ विशेषज्ञे छैथ। तँए बेसी लोक हिनके पंच मानै छैन। पंचोक तँ अपन ट्रेनिंग उचितलाल भायकेँ भेटले छैन जे नइ लड्डू तँ लड्डूक झड़ुओ जँ भेटल तैयो बहुत भेल। आद्रा पाबैन छीहे, समयपर बरखा भेने आमक सुआदो बनियेँ गेल छै, जँ लाबो-दुआ भेटल तैयो पाबैनक कोन बात जे पाँच दिन आगुओ तक दुनू साँझ चलबे करत। अपन मजबूरी देखबैत, पुन: विचारकेँ संशोधित करैत उचितलाल भाय आमक बँटबाराक मान मानि गछैत बजला- "जखने गाछसँ आम उतैर जाए, जानकारी देब, पीठेपर पहुँच दुनू भाँइक बीच आम फुटा देब।"

सएह भेल, आमक ढेरीसँ आम निकालि-निकालि उचितलाल भाय दुनू दिस बाँटए लगला। दहिना हाथसँ गोलगर आ बामा हाथसँ चेपगर आम उठा-उठा दुनू दिस बाँटए लगला। गोलगर-चेपगरक माने भेल पैघ-छोट। कुरुक्षेत्रक रणभूमि जकाँ एक दिस सिंहेश्वर कक्काक तीनू बेटा आ दोसर दिस बघेश्वर कक्काक तीनू बेटा पतियानीमे ठाढ़ छल।

उचितलाल भाइक पंचनामा हाथपर अर्जुनक नजैर अँटकल रहइ, ओ बामा-दहिना हाथक गोलगर-चेपगर आम देखि नकुलकेँ आँखिक इशारा देलक। नकुलो तँ पकिया उल्था बुझू, सहदेवक, आँगुर पकैड़ जहिना पछबरिया बेपारी माने माड़वारी अपन धोतीक फाँड़मे घोंसिया दोसर बेपारीकेँ आँगुरपर हिसाब जोड़ि बुझा दइ छैथ तहिना नकुलक हिसाब सहदेव बुझि गेल। एके बेर तीनू भाँइ अरजैत-गरजैत अर्जुनक संग नकुलो आ सहदेवो उचित भाइकेँ गोलिया लेलकैन। तेकरे पनचैती हएत।

पाँच बजे बेरुका उखड़ाहा पनचैतीक समय आ पंचायत भवन

स्थान निर्धारित भेल छल। ओना, धरमागती बात ईहो छल जे उचिललालपर अपनो आक्रोश छल, मुदा ऐठाम तँ ने तीनमे छेलौं आ ने तेरहमे, तँए सुनिये कऽ ने संतोख करए पड़त। ओना, संतोखो तँ सेतोखे छी, केतो धारक ऊपर देने चलैए आ केतौ धरती छुबैत तरो देने चलिते अछि। मुदा जे अछि ओ तँ ओइठाम अछि, ऐठाम तँ उचित भाय गामक सभदिनो आ सभठीमोक पंच छथिऐ तँए अपन पनचैती केहेन भेलैन सएह बुझैक जिज्ञासा मनमे रहए।

अपन घरसँ पंचायत भवन उत्तर आधा किलोमीटरपर अछि। बीचमे एकटा चौक छइ। चौकक माने दुनू अछि, जँ पाँच-दसटा दोकान खुजि गेल तँ ओहो चौक भेल आ जैठाम चारू दिससँ रस्ताक मिलानी भेल सेहो चौक भेल। मुदा से नहि, ऐठाम[10] दुनू अछि।

कनसोह लइले पाँचे बजे चौकक चाहक दोकानपर जा कऽ बैस गेलौं, आ बिना कारण जनौने 1974 इस्वीक इमरजेंसीपर भाषण दिअ लगलौं। मनमे छल जे किए ने सभ बच्चाक सिलेबसमे ऐ प्रश्नकेँ राखल जाए। एकसूरे दस मिनट बाजि गेलौं। तही बीच रंगलाल भाय पनचैतीसँ घुमल मुँह लटकौने पहुँचला। ओना, रंगलाल भाय ने गामक जितुआ[11] पंच छैथ आ ने मनौआ पंच छैथ मुदा तैयो पनचैतीमे ऐ दुआरे गेल छला जे अर्जुन तीनू भाँइ आबि कऽ कहलकैन। भाय, समाज छी! समाजमे रहै छी तखन जँ समाजक बात नहियोँ मानब सेहो केते नीक हएत। ओना, रंगलाल भाय अपना गामक समाजकेँ बिनु डोराडोरिक समाज बुझै छैथ, तँए पनचैतीमे नहियेँ जाइ छैथ, मुदा अर्जुन तीनू भाँइपर बेकतीगत बिसवास रहैन तँए गेल छला। ओना, अर्जुनकेँ पनचैतीसँ पहिनहि कहि देने

---

[10] माने हमरा गामे

[11] चुनावसँ

छेलखिन-

“बौआ, बिना अरजने ने मर्जन होइए आ ने बिना मर्जने तर्जन होइए, तँए पंच बनब तँ भारी नइ भेल मुदा हँसेरी बनब तँ भारी भइये जाएत किने।”

रंगलाल भाइक बात सुनि अर्जुन तँ चुपे रहल, किए तँ ओकरा दुनू हाथमे मुंगबा रहइ, मुदा सहदेव बाजि चुकल छल-

“भाय साहैब, अर्जुनक पनचैती छिऐ।”

रंगलाल भाइक लटकल मुँह देखि बजलौं-

“भाय साहैब, बड़ तबाही बुझि पड़ैए! केतौ बाहरसँ अबै छी?”

रंगलाल भाय चुप्पे रहला तँए फेर बजलौं-

“अच्छा पहिने चाह पीबू पछाइत कुशल-छेम करब।”

बिना किछु बजने रंगलाल भाय लगमे आबि बैसला। बैसते दोकानदार चाह नेने आबि हाथमे धरा देलकैन। ओना, गुलाबक फूल वा कोनो आनो फूलक जँ ऊपरका रूप कुरूपो भऽ जाइ छै, आ पानिक रस पबिते माने धोला, भिजौला वा सींचलासँ अपन रंगमे रंगि जाइए तहिना रंगलाल भाय रंगि गेला। ताबे चाहो पीब लेलैन। बजलौं-

“भाय साहैब, पंचायत भवनपर पनचैती छी से किछु बुझबो केलिऐ?”

निछोह दौड़ल आएल कोनो धिया-पुतार्कें एकाएक कोनो बात पुछबै तँ ओ जहिना हकैम-हकैम बजैए तहिना रंगलाल भाय बजला-

“ओही पनचैतीसँ अबै छी।”

जिज्ञासा जगल। पुछलयैन- “की भेल?”

रंगलाल भाय बजला-

“हएत की कपार! अर्जुन तेहेन अपन पक्ष रखलक जे कोनो पंचकेँ उठबे ने केलैन।”

आरो जिज्ञासा बढ़ल। बजलौं-

“से की भाय साहैब?”

रंगलाल भाय बजला-

“अर्जुन उचितलालकेँ पुछलकैन जे आम सन अदना वस्तुपर जखन अहाँक धीर्त नइ रहल तखन समाजक उचित-कल्याणमे धीर्त रहत।”

❑

शब्द संख्या : 1095, तिथि : 27 जून 2018

कुघाटक मृत्यु

रातिमे जगरना भेने भोरमे आँखि कनी बिलमसँ खुजल। ओछाइनेपर पड़ल रही आ उठैक उपक्रम करिते रही कि कानमे रस्ता परहक आवाज पैसल। कानक आवाजकेँ अकानए लगलौं जे की बात छिऐ? एना किए लोक भोरे-भोरे गलगुल करैए..?

मुदा एकठामसँ जँ आवाज निकलैत तखन ने बुझैमे असान होइत, से तँ छल नहि, कतेकोठामसँ आवाज उठि रहल छल। तहूमे घर लग तँ जनिजातिक बीच गप-सप्प चलैत रहै, तँए कनी कम जोरसँ आवाज होइ छल, मुदा घरसँ हटल पुरखा-पुरखीमे जे गप होइ छल से कनी जोरसँ होइ छल जइसँ दुनू आवाज तेना अपनामे टकराइत रहै जे स्पष्ट कोनो ने सुनि पड़ै छल। ओना, पत्नी अपनासँ पहिने जगि चुकल रहैथ मुदा ओहो आँगनसँ निपत्ते छेली, तँए पुछबो केकरा करितिऐ।

आँखि मीड़ैत काँची छोड़बैत घरसँ निकैल रस्तापर पहुँचलौं तँ पाँचटा जनिजातिकेँ गप-सप्प करैत देखलिऐ, जइमे एकटा भौजाइ इलाकाक, दोसर अपन पत्नी आ बाँकी तीनमे दूटा भावो आ एकटा पुतोहु इलाकाक छेली। जँ एकतुरिया बीचक गप-सप्प रहैत तखन पुछबो असान होएत मुदा से तँ छल नहि, तँए चुपे-चाप रस्तापर सँ घुमि दरबज्जापर आबि गेलौं।

ओना, पाँचो स्त्रीगण देखि नेने छेली, मुदा आगू बढ़ि ओहो सभ किछु बजली नहि। जहिना अखबारक संवाददाता सबहक मनमे

रहैत जे कोनो घटनाक समाचार पहिल अपन हुअए, तहिना पाँचोमे सँ पत्नी छिटैक दरबज्जापर पहुँचली।

पत्नीकेँ देखि अपनो मन मानि गेल जे जे मनमे अछि ओ भेटबे करत तँए मन आरो विश्रान्त भऽ गेल। तैबीच पत्नी बजली-

"रातिमे की भेल से बुझबो केलिऐ?"

ओना, पत्नियोँ बुझै छेली जे अखने सुति कऽ उठलौं हेन, तखन बुझलौं कखन। मुदा पत्नीपर मिसियो भरि मन नहि करूआएल। नइ करूआइक कारण भेल जे भरिसक कोनो अनहोनी घटनाक समाचार छी तँए पत्नीक मन हलचलाएल छैन, जइसँ बजैक क्रम भंग भेल छैन, मुदा क्रमभंगोक पछाइत सभ बात बजबे करती। से तँ बिसवास मनमे छेलएहे तँए किछु ने बजलौं। कोनो नव ज्योति जे ज्ञान स्वरूप हुअ आकि कर्म स्वरूप–माने भव स्वरूप हुअ आकि अनुभव स्वरूप–आँखि-कानक बीच अबिते जिज्ञासा जगैबते अछि, से मनमे जरूर जागल। सिनेमाक रील जहिना अपन गति पकैड़ चलए लगैए आ तैबीच जँ बिजली कटियो जाइ छै, तैयो किछु आगू घुसुकिये जाइए, भलेँ ओ देखए-मे आबए वा नहि। तहिना पत्नीकेँ सेहो भेलैन। लगले फेर बजली-

"बड़ भारी जुलुम भेल..!"

पत्नीक बात सुनि मन ओझरा गेल। एक तँ भिनसुरका मन, तहूमे ओछाइनपर सँ लगले उठले छेलौं। 'बड़ भारी जुलुम भेल', की जुलुम भेल? जुल्मो की कोनो एक्के रंगक होइए। केकरो जवान बेटा मरि जाइ छै, तँ केकरो जौंआँ धिया-पुता छोड़ि स्त्री मरि जाइ छै, कियो गाछपर सँ खसि पड़ैए आ बचल प्राणक देह थौआ-थाकर भेल रहै छै, तँ केकरो जिनगी भरिक कमाएल-खटाएल-जोगाएल घरमे आगि लगि जाइ छइ। मुदा मनकेँ असथिर केलौं। तेकर पाछू

अपनो मजबूरी भेल। मजबूरी ई भेल जे जहिना कोनो कड़गर दवाइ पचबैले गैसक गोटी खाएल जाइ छै तहिना रंग-रंगक विचार पचबैले अपनो सबुरक खोराक खाइये पड़त। तँए, मुँहकेँ बन्ने रखलौं। मुदा कानो आ आँखियोकेँ जगा देलिऐ जे पत्नी आगू की बजै छैथ।

लगले सूरे पत्नी बजली- "एहेन जुलुम ते कहियो ने देखने-सुनने छेलिऐ..!"

पत्नीक विचारमे एकटा गर भेटल। गर ई भेटल जे सुनल बातक तँ ठेकान नहि अछि, लोक नीको सुनैए, अधलो सुनैए, सतो सुनैए, झूठो सुनैए, गामो-घरक सुनैए आ देशो-दुनियाँक सुनैए मुदा देखब तँ से नहि भेल? देखि तँ वएह सकै छी जे आँखिक आगू पड़ैत हुअए। बजलौं-

"की देखलिऐ?"

ओना, पत्नीकेँ देखल किछु ने छेलैन मुदा सुनल जरूर छेलैन। 'देखब' सुनि कनी सकपकेली। बजैक क्रममे पत्नी हारि चुकल छेली मुदा अपन हारिकेँ जीत बनबै दुआरे कनी पाछू घुसैक फेर बजली-

"भोरेसँ गाममे तहलका मचल अछि।"

पत्नीक मुहसँ प्रश्न दोहरा गेल। पहिल प्रश्न मात्र 'देखब' छल, मुदा आब दोसर प्रश्न 'तलहका' सेहो बीचमे खसि पड़ल। मन बेथीर भऽ गेल। बजलौं-

"एना जे गाछ परहक बानर जकाँ ऐ डारिपर सँ ओइ डारिपर छड़पबे करब तइसँ कोनो फल भेटत? कनी सोझरा कऽ बाजू जे की भेल अछि।"

हमर बात सुनिते पत्नीक मन जेना हारि-जीतसँ ऊपर उठि गेलैन तहिना बजली- "लालमोहनक लहास गामक सीमाकातमे भेटल..!"

'लालमोहनक लहास सीमा कातमे भेटल' सुनि एकाएक मन तरैस गेल। तरसैक कारण भेल जे जीवितक बात आ मृत्युक बातमे अकास-पतालक अन्तर होइते अछि। अन्तरो केना नइ हएत? एकटा भेल दुनियाँमे जीबैत दुख-सुखकेँ झेलब आ दोसर भेल दुनियासँ दूर जाएब। प्रश्नक गम्भीरता देखि दरबज्जापर सँ उठि गाम दिस जा बुझब जरूरी बुझि पड़ल। मुदा ओछाइनपर सँ उठले छेलौं, ने मुहेँ-कानमे पानि नेने छेलौं आ ने जलथमने केने छेलौं, तँए दुनूकेँ सामंजस करैत बजलौं-

"बड़ भारी समाचार अहाँ सुनेलौं। जल्दबाजीमे चाह बनाउ, ताबे हमहूँ मुँह-कान धोइ लइ छी।"

'बड़ भारी समाचार' सुनि पत्नीकेँ सेहो अपन भारीपन बुझि पड़लैन। तहूमे लगले ओइ समाचारक पाछू जाइले तैयार जे भऽ गेलौं, जनु तँए बीचमे शनि-मंगलक ग्रह वा बरसपैत-शुक्रक नीक-अधला करब नीक नहि बुझि बिना किछु बजनहि पत्नी चाह बनबए विदा भेली। अपनो नित्यकर्म दिस लागि गेलौं। जहिना नित्य-कर्मसँ निवृत्ति भऽ दरबज्जापर आबि बैसलौं तहिना पत्नी सेहो एक हाथे चाहक कप (गिलास) आ दोसर हाथे पानक समान नेने पहुँच गेली। पानि पीबिये नेने छेलौं। ओना, चौकीपर चाहोक गिलास आ पानोक समचा रखि पत्नी बैस गेली, मुदा बजली किछु ने। भरिसक ई जिज्ञासा मनमे उठि गेल रहैन जे पति जे किछु बजता तेकर उत्तर देबैन। मुदा अपना मनमे उठल जे अखन हिनकर मन अगदिगाएल छैन तँए नीक जकाँ नइ कहि पौती। तइसँ नीक जे किछु पुछबे ने करबैन।

दुनू परानीकेँ एकठाम रहितो चुपा-चुपी पसरिये गेल। ओना, जखने अपने चाहक चुस्की लिअ लगलौं तखने पत्नियोँ पानक पात पसाइर लगबए लगली।

समयानुकूल काज होइत देखि जहिना सबहक मन पनपना जाइत अछि तहिना अपनो मन पनपनाएल। लूँगी पहिरनहि रही, खाली तौनी कन्हापर लऽ विदा भेलौं। मुदा लगले मनमे उठि गेल जे पत्नीकेँ जँ घरक भार सुमझा कऽ नइ जाएब तँ ओ पति सन भकतैयक खुशीमे भरि गाम गुरुआइये करए चलि जेती, तँए बजलौं- "सब बात बुझने अबै छी, ताबे अहाँ जलखै तैयार राखब।"

आदेश सुनला पछातियो पत्नी किछु बजली नहि, मुदा जलखैक भार मनकेँ नइ दबलकैन सेहो नहियेँ भेल। रस्तापर पहुँचते मन लालमोहनपर पहुँचल। गामक सभ जनैत जे लालमोहन डकैत छी, डकैती करैए आ ओही बले अपन रोब-दाब सेहो गामे नहि परोपट्टामे जमौने अछि। ओना, डकैतियो-डकैती आ डकैतो-डकैतमे अन्तर होइते अछि। जइसँ रामायण सन महाग्रंथ लिखनिहार रत्नाकरकेँ लोक सेहो डकैत कहिते छैन, जे शबरी सन अधम पात्रक सृजन करैत राम सन तपस्वीकेँ जूठ बैरसँ स्वागत करौने छैथ। मुदा अखन से नहि। अखन लालमोहन सन डकैत, जे घरक वस्तु-जातक लुइटिक संग, राहजनी आ हत्या सेहो करैए। मुदा गामे नहि आनो गामक लोक- जेकर लूट, हत्या, राहजनी सभ करैए, सेहो सभ जखन अपन मुँह चुप रखने अछि तखन जँ बीचमे अगुआ कऽ अपने किछु बाजी आ ओही बातक डोरि पकैड़ ओ कहए जे दुनियाँमे केतौ किछु करै छी, अहाँकेँ की केलौं से कहू, तखन की जवाब देबइ?

लालमोहनक लाश घरपर आबि चुकल छल, गामक लोकक अबै-जाइक ढबाहि सेहो लगले छल। कियो बजैत साँप काटि लेलकै, तँ कियो बजैत एक्सीडेन्ट भऽ गेलइ...। अपन-अपन विचारक पाछू सभ बताह छेलएहे। ओना, पता लागि चुकल छल जे लालमोहनक लहास आँगन नहि आनल गेल, गाछियेमे- जेतए जरौल जाएत तेतए राखल अछि। घटनाक सभ चर्चपर परदा पड़ि गेल छल आ जेते

जल्दी सम्भव अछि तेते जल्दी जरबैक विचार सेहो अधिकतर लोकक भऽ गेल छेलैन। तेकर कारण भेल जे जखने पुलिसमे खबर हएत तखने पोस्टमार्टमक मुद्दा बनि जाएत जइसँ अनेरे लोककेँ भरि दिन परेशानीमे चलि जाएत। ओना, लालमोहनक घर लग तक पहुँच गेल रही मुदा कोनो बात ठीकसँ बुझल नहि छल तँए कि बाजब से बोलती बन्न छल। मनमे भेल जे घरपर जखन आबिये गेलौं तखन जिज्ञासा भइये ने गेल, गाछी जाइक माने होइए संस्कारमे शामिल हएब, तेहेन सम्बन्ध तँ कहियो लालमोहनक संग रहल नहि। तँए संस्कारमे शामिल नहिये हएब उचित हएत। घुमि कऽ घरे दिस आपस भेलौं।

ओना, जइ गाममे लालमोहन मारल गेल ओइ गामक लोक (समाज) मारने छल, तँए सभकेँ बुझल रहबे करइ। मुदा पुरना लोकक विचार अखनो ओइ गाममे चलिते अछि जे जँ केकरो जानसँ मारिऐ तँ ओकर लाश या तँ निपत्ता कऽ दिऐ वा ओइ गामक सीमाक भीतर दऽ अबिऐ जइ गामक ओ रहए, जइसँ स्थान बदलने घटनामे मोड़ एबे करत। जखने घटनामे मोड़ औत तखने मामला या तँ आरो उलैझ जाएत वा असानीसँ सुलैझिऐ जाएत।

अपन एकटा संगी ओइ गाममे, माने सिंहेश्वरपुरमे छैथ जइ गाममे लालमोहन मारल गेल, सूरपता लगबैले ओ रामपुर पहुँचला। हाल-चालक क्रममे ओ बजला-

“अपेछित, पापक एकटा घैल फुटल!”

अपेछितक बातक माने किछु ने बुझलौं मुदा ‘पापक घैल’ सुनि अधखिजू तँ बुझबे केलौं। बजलौं-

“अपेछित, पाप-पुन अहिना होइत रहत, पहिने चाह पीबू आ बाल-बच्चाक हाल-चाल कहू। अनेरे कोन बातक चाल-चूलमे अपनो

समय दुइर करब।”

तैबीच पत्नी चाह नेने पहुँच गेल छेली तँए गपक मुँह खुजिये गेल छल। ओना, उमेरगर अपेछित, माने केशो पाकि गेल छैन आ दाँतो टुटि गेल छैन, जानि पत्नी चाह रखि चोट्टे घुमि आँगन चलि गेल छेली। गर देखि अपेछित बजला-

“अपेछित, हमरा गाममे राति डकैती भेल। अजीव नक्शा बना ओ सभ माने डकैत सभ आएल छल, कोनो कर्म घरवैयाकेँ छोड़लकैन नहि। धन-सम्पैतसँ लऽ कऽ इज्जत-आबरू तक उतारि लेलकैन, मुदा गामो तँ गाम छी, हल्ला करैत गौंआँ चारू कातसँ तेना पहुँचल जे डकैत घेरा गेल। जे भगैमे माहिर छल ओ तँ भागि गेल। भागबो केना ने करैत, कोनो कि जोगी-जतीक टीम छल जे अन्तो-अन्त मुँहपर थूक फेकते रहैत, ओ तँ ओहन टीम अछि जैठाम जीवन-मृत्युक खेल संगे चलैए।”

अपेछितक मुहसँ बहुत बातक भाँज लगि गेल। मन बहलबैत अपेछितकेँ पतियबैत बजलौं-

“अपेछित, आब ऐ दुनियासँ की लेब अछि। अनेरे कोन माया-मोहमे पड़ल छी। आमक मास छिऐहे, तेना कऽ खा लिअ जे पेटेमे अम्मटो आ अचारो बनि तेना कऽ जमा भऽ जाएत जे भरि साल रस चोभैत रहब।”

अपेछित बजला-

“अपेछित, की कहब! मिथिलाक धार जहिना सभटा दच्छिने मुहेँ बहैए आ गंगामे पैस गंगालाभो करैए तहिना मिथिलावासी सभ सेहो...। मुदा एते तँ मानबे करबै किने जे मिथिलावासी सेहो अधलाक निन्दा आ नीकक प्रशंसा सभ करिते छैथ। तैबीच जँ रावणे-वंशक बीआ सौंसे धरती छिटा गेल, तेकर कमठौन करब पार

लागत।”

दुनू अपेछित गप-सप्प करिते छेलौं कि पत्नी एली आ झिझकैत बजली-

“अपेछितकेँ गप-सप्पमे ओझरा देने छिऐन से खाइ-पीबैले नइ देबैन?”

अपेछित बजला-

“जखन पेटो संगेमे नेने आएल छी तखन बिनु खेने थोड़े जाएब।”

❑

शब्द संख्या : 1608, तिथि : 01 जुलाई 2018

एक तम्मा सिदहा

आसीन आठ दिन बीत गेल। काल्हि मातृनवमीक खाइन-पीयुन छी। लोकक पड़ाइन गामसँ भेने नौतहारीक अभाव भइये गेल अछि जइसँ तीन-दिन अगतेसँ लोक नौतहारी ताकि रहल छल मुदा अभाव रहने एक-एक गोरेकेँ तीन-तीन–चरि-चरि ठामक नौतो पड़ल आ ओ सहर्ष स्वीकारो कइये लेलक। स्वीकार करैक कारण सरकारी रेकर्ड जकाँ खाना-पुरी करब तँ छेलैहे। भाय, जखन जीवित-लोकक जरूरतक पूर्ति खानापुरीसँ भऽ सकैए तखन मृत्यु-लोकक किए ने भऽ सकैए। अदौसँ लोक जनैत आबि रहल अछि जे पान नइ रहए तँ पानक डंटियोसँ विधि पूर्ति होइते अछि तखन...।

बेरुका अढ़ाइ बजेक समय। ओना, खढ़चट्टा समय भेने भादवेक रौद जकाँ रौदमे तीखपन छेलैहे, मुदा अभ्यासो तँ अभ्यास छी, जइ समयमे चाह पीबैक वा भोजन करैक वा भाँगे पीबैक समय बना नेने छी, तइ समयमे ओ चाह करबे करैए। सएह भेलैन जीतू काकाकेँ। किएक तँ जाड़क मास रहौ कि गरमी मास आकि बरसाते किए ने रहौ, जे समय जइ तुकक आबि जाइ छैन ओ तुक ओइ समय चाह करबे करै छैन। अढ़ाइ बजे बेरमे जे चाह पीबैक अभियास जीतू काकाकेँ भऽ गेल छैन ओही आशामे दरबज्जापर बैस आँगनक मुँह देखि रहला अछि। ओना, मनमे अपन गामक चारू सीमानक विचार सेहो उठि चुकल छेलैन मुदा तइ बिच्चेमे सुखनी काकी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचलैन। काजक पूर्ति भेने

जहिना मनमे तृप्तिक अंकुर जनमैए तहिना पत्नीक हाथमे चाह देखि जीतू काकाकेँ भेलैन। बिहुसैत पत्नीक चेहरा देखि अपनो बिहुसए लगला आ बिहुसैत बच्चा जहिना माएकेँ देखि नजैर गड़बैए तहिना जीतू काका अपन आँखि पत्नी हाथक चाहक गिलासपर गड़ा देलैन। चाहक गिलास दहिना हाथसँ पकड़ैत जीतू काका बामा हाथसँ चौकीपर बैइसैक इशारा पत्नीकेँ देलैन। चाहक पहिल घोंट लैत जीतू काका पत्नी दिस तकला। ओना, जीतू कक्काक मन चाहक खुशीमे खुशियाएल छेलैन मुदा सुखनी काकीक मन तरैस गेलैन जे भरिसक चाहमे किछु गड़बड़ अछि तँए ओ चाह बनबैक प्रक्रिया दिस मनकेँ दौड़बए लगली। तही बीच जीतू काका बजला-

“बड़ सुन्नर चाह बनेलौं हेन। आइ बुझि पड़ैए जे नानी-माइक देल लुइरिक उपयोग केलौं।”

जीतू काका अपना मने बजला, किए तँ साए बीघाक पोखैरमे एक रंगक बीज रहने एकरंग कमल तँ फुला सकैए मुदा साए मनमे साइयो रंगक फुलाइक सम्भावना नइ भऽ सकैए सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैत अछि।

‘नानी-माइ’क नाओं सुनि सुखनी काकीक मन तुरुछ गेलैन। तुरुछबो सोभाविके छल। किएक तँ धन-सम्पैत हुअए आकि बुधि-अकील, पूर्वजक देलकेँ लोक अपन बुझि हथिया लइते अछि। हथियेला पछाइत तँ ओ अपन भइये जाइ छै जेकरा कियो छीनियो कऽ लऽ सकैए, मांगियो कऽ लऽ सकैए आ चोराइयो कऽ लइते अछि। मुदा सुखनी काकी अपन मनक तुरुछबकेँ अपन जिनगीक खगता दिस मोड़ैत बजली-

“दुर्गापूजा लगिचा गेल, घरमे एकोटा नव साड़ी नइ अछि जे पहिर भगवतीक खोंइछ भरब।”

ओना, अदहा गिलाससँ बेसी जीतू काका चाह पीब नेने छला। जइसँ चाह अपन चाह पूर्ति करैत मनकेँ सुर-खुर बनाइये रहल छेलैन। जखने मनमे सुरखुरपन जगैए तखने नीक-नीक विचार सेहो जगबै करैए आ तैसंग नीक-नीक काज दिस नजैर सेहो छिटैकते अछि। ओना, अधलो दिस छिटकैए।

साड़ीक नाओं सुनि जीतू कक्काक मन उनटलैन। उनटैक कारण भेलैन जे काल्हि साँझमे जखन जीतू काका अपन समयक संग परिवारक हिसाब जोड़ए लगला तखन सभ हिसाब समगम बुझि पड़ल छेलैन जइसँ मनमे कोनो तरहक भाव-अभाव नइ खटकल रहैन। माने, काल्हि जखन परिवारक हिसाब जोड़ए लगला तखन भोजनक संग घरो आ वस्त्रोक खगता पूरल बुझि पड़ल छेलैन। बिमारी आ बाल-बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ तँ सीमाहीन अछिए तँए ओ अनुमानित हिसाबमे औत। तइले आगूक समयो अछिए आ श्रमो तँ अछिए, तँए अनेरे मन-रोग पैदा करब उचित नहि।

..ओना, सुखनी काकीक साड़ीक खगता सुनि जीतू कक्काक मनमे मिसियो भरि हलचल किए होइतैन? एक तँ तेहेन साड़ी सभ बनि-बनि बजारमे आबि गेल अछि जे पहिलुका जकाँ कि साले भरिमे दू जोड़ फाटत, सालक कोन गप जे दू-दू, तीन-तीन साल तक ने ओकर रंग उखड़ैए आ ने पाढ़िक कोर झड़ैए आ ने साड़ीक आँचरेमे कोनो फाट-फूट होइए। तैठाम ऐ साल सात खण्ड साड़ीक आमदनी पत्नीकेँ भइये गेल छैन, तखन जँ ओ साड़ीक चर्च कऽ रहली अछि ओ पतिक आगू जे पत्नीक लटारम होइए से कऽ रहली अछि। ओना, लटारम करब उचितो तँ अछिए। किए तँ पतिक आगू जहिना पत्नीक होइत, तहिना ने माए-बापक आगू बेटो-बेटीक होइए। मुदा तेकर तँ अप्पन समय अछि। अखन तँ गामक चौबगली-सीमाकातक गामपर विचार करैक मन बनल अछि तैठाम जँ पत्नीक

लटारममे ओझरा जाएब से उचित नहि, मुदा से मुँह फोरि कहबो केना करबैन। जखने किछु बाजब आ हुनका कानमे पड़तैन तखने ढोढ़ साँप जकाँ फुफकार कटबे करती तइसँ नीक जे झूठ-फूस बजनिहारकेँ झूठे-फूसे काजमे लगा देब नीक हएत।

..यएह सोचि जीतू काका पत्नीकेँ कहलैन-

“अखन दुर्गोपूजा अबैमे समय अछि, तहूमे दस दिनक पूजामे अदहा बीतला पछातिये ने खोंइछ भरब आ साड़ीक खगता हएत, तइले बहुत समय अछि। अखन जे तुकक काज अछि से पहिने पुराउ।”

‘तुकक काज’ सुनि सुखनी काकी चौंकैत बजली-

“से की अछि?”

जीतू काका बजला-

“बुढ़ भऽ गेलौं आ अखन तक एतबो ने बुझै छिऐ जे दुनू कानो आ दुनू आँखियोक बीचमे नाक अछि। चाहक पछाइति पान होइए से अनबे ने केलौं आ बिच्चेमे कि-कहाँ एक ढाकी फरमाइस पसाइर देलौं!”

ओना, सुखनी काकीक मन मानि गेलैन जे पतिक मनक डायरीमे साड़ीक खगता दर्ज भेला पछातियो मनमे कोनो उथल-पुथल नइ भेलैन, तँए पूर्ति हेबे करत। चुपचाप दरबज्जाक चौकीपर सँ उठि पान आनए आँगन गेली। एकान्त समय पेब जीतू कक्कका मन अपन चौबगली गामपर नचलैन। नचिते सिनेमाक रील जकाँ सुखेत गाम आगूमे एलैन। खढ़चट्टा समय भेने सुखेतमे अकाल पड़ि गेल अछि। जहिना भिनसुरका सुर्ज देखने लोक अनुमान करैए जे आजुक दिन केहेन हएत, तहिना ने सौन-भादोक समय देखि सेहो लोक सालक अनुमान कइये लैत अछि जे सालक केहेन गति-विधि

रहत। एक सीमामे रहितो सुखेत गामक भौगौलिक बनाबट ओहन ऊँचरस अछि, जे एको धुर जमीनमे एको दिन बर्खाक पानि नहि अँटकल, जइसँ तीमनो-तरकारीक खेती आ अनो-पानिक खेती दोहरी डाँगसँ थौआ हेबे करत किने...।

लगले मन घुसैक गोधनपुरपर गेलैन। गोधनपुर गामपर नजैर पहुँचते जीतू कक्काक मन बिहुसए लगलैन। जहिना गामक नाओं गो+धन पुर तहिना गामक रूपो रंग अछिए। गामक भौगौलिक बनाबट तइ ढंगक बनल अछि जे रौदी हुअ कि दाही, अदहा गाम खुशहाल रहबे करत जइसँ अधोसँ बेसीक रक्षा भइये सकैए। जहिना पुबरिया बाध नीचरसो आ नमगरो-चौड़गर अछि जइमे चारि गामक पानि बहि-बहि आबि जमा होइए तहिना पछबरिया बाध ऊँचरस रहने एको ठोप पानिक छुति नहि रहैए। अपन गाम तँ सहजे अपने गाम छी, अपना जकाँ करबो करै छी, अपने जकाँ रहबो करै छी आ तैसंग अपने जकाँ समाजो तँ अछिए। कोनो कि आब ओ जुग-जमाना रहल जे मुँहगर-कन्हगर आकि जरे-जमीन्दार केकरो गामसँ भगा देत। सबहक अपन गाम छी, अपना जकाँ करबो करैए आ अपने जकाँ रहबो तँ करबे करत...। तही बीच सुखनी काकी पानक सभ समचा नेने दरबज्जापर पहुँच बजली-

“चाह पीबए लगलौं तँए कनी देरी भऽ गेल।”

पान खा जीतू काका पत्नीकेँ पुछलैन-

“साड़ीक चर्च की केने छेलौं?”

जहिना कियो कोनो जगहपर पूछ पबिते अगुआ-अगुआ बाजए लगैए तहिना सुखनी काकी बजली-

“एतबे खानमे बिसैर गेलिऐ?”

अपना मनकेँ सम करैत जीतू काका समहारि कऽ बजला-

“बिसैर जइतौं ते पुछबे करितौं। नीक जकाँ नइ बुझलौं तँए पुछलौं।”

ओना, जीतू कक्काक मनमे आबि गेल रहैन जे तेहेन सोभावक पत्नी छैथ जे जहिना आन-आन विदाइमे साड़ी देने छेलैन तहिना ओहो जेकरा देहपर फटल-फुटल साड़ी देखने हेथिन तेकरा उपकैर-उपकैर दऽ देने हेथिन आ अपने अपन पहिरबा साड़ीसँ संतोष कऽ नेने हेती।

तैबीच सुखनी काकी बजली-

“कहबे ते केलौं जे दुर्गापूजा आगू आबि रहल अछि, भगवतीकेँ जे खोंइछ भरब तइले एकटा निखण्ड साड़ी...।”

जीतू काका बजला-

“भगवतीकेँ खोंइछ भरैले साड़ी चाही आकि अपनो पहिरैले?”

सुखनी काकी बजली-

“दुनू ले ने चाही। घरमे एक खण्ड अछियो ओहो ऐंठे भऽ गेल अछि।”

जीतू काका बजला-

“ऐ साल ते बहुत साड़ीक आमदनी भेल, से सभ की भेल?”

अपन कएल उपकारसँ सुखनी काकीक मन गदगर रहबे करैन। गदराइत बजली-

“लोक अपन पोखैर-इनारक पानिक आशापर जीबैए आकि ऊपर-झापड़ बाढ़ि-बर्खाक आशापर। ओ तँ एक दिससँ आएल दोसर दिस चलि जाएत। जे साड़ी जहिना आएल से तहिना गेल, घरमे थोड़े रहल।”

पत्नीक उदार विचारसँ जीतू कक्काक अपन मनक उदर पूर्ति भऽ गेलैन तँए साड़ीक चर्च छोड़ि गामेक एकटा चर्च शुरू करैत बजला-

“ता अहाँ ऐ गाम नइ आएल रही, तइ समयक कथा छी। अपना गाममे व्यास काका छला। ओना, जमीन-जाल सेहो भरपूर छेलैन, मुदा पृथ्वी छेदनकेँ पाप बुझैत रहथिन जइसँ खेतीवारी नइ करै छला।”

बिच्चेमे सुखनी काकी टोकि देलखिन- “खेत रहैत जँ खेती नइ करै छला तँ की हवा पीब रहै छला?”

पत्नीक अगुआएल विचार सुनि जीतू काका हाथक इशारासँ चुप करैत बजला-

“ओ निष्ठित बेकती छला। खेत-पथार लोककेँ बँटाइ दऽ देने रहथिन आ अपने सभ दिन अपन गामक संग चौबगली गाम सभमे दुआरे-दुआरे सभ दिन बैसार करि कऽ गृहवासूकेँ अपन पद्धतिक अनुकूल जिनगीक चक्र बुझबै छला। बुझेला पछाइत जखन घरमुहाँ होइ छला तखन घरवारियो आ आरो-आरो जे सुननिहार सभ रहै छल ओ दुनू परानी-जोकर सिदहा दऽ दइ छेलैन। वएह सिदहा घरपर आनि पत्नीकेँ सुमझा दइ छेलखिन।”

पतिक विचारमे सुखनी काकीकेँ की भेटलैन से तँ सुखनीए काकी जनती, मुदा मन चपचपेलैन से जीतूओ कक्काक नजैर पड़लैन।

सुखनी काकी बजली-

“असल परिवारक भक्त व्यास काका छला किने?”

ओना, जीतू कक्काक मनमे जे मूल बात छेलैन ओ अखन तक नहि निकलल छल तइसँ पहिनहि सुखनी काकी अपन निर्णय

सुना देलखिन। विचारकेँ पाछू दिस ससाइर जीतू काका बजला-

“पहिने सभ बात सुनि लिअ, पछाइत जे मन फुरए से बाजब।”

सुखनी काकीक मनक चपचपी एतेक बढ़ि गेल छेलैन जे जे किछु जीतू काका बजितैथ ओकर जवाब ठोरेपर बरी बनब जकाँ दइले तैयार छेली। बजली-

“की सभ बात?”

जीतू काका कहलखिन-

“एक परिवारक कोन बात जे अनेको परिवारक सिदहा व्यास काकाकेँ भेटै छेलैन। साँझू पहर जखन सौंझुका नित्य कर्मसँ निवृत्त भऽ गायित्री बन्धन करए लगै छला आ पत्नीकेँ सिदहाक विषयमे पुछै छेलखिन तखन पत्नी सभ दिन एके उत्तर दइ छेलैन जे अखुनका सिदहा खर्च भेला पछाइत मुड़ी छोपि कऽ एक तम्मा काल्हियो-ले रहत। ओना, ‘मुड़ी छोपल तम्माक चाउर’ सुनि व्यास कक्काक मन झुझुआ जाइन, मुदा जहिना कोसीक बाढ़ि हुअए कि गंगेक किए ने हुअए आकि लहैरबला समुद्रेक किए ने हौउ मुदा जहिना अथाह पानिमे उग-गुम करैबला चुट्टियोकेँ जखन कोनो खढ़-पातक सहारा भेट जाइ छै आ ओकरा पकैड़ ओ अपन जिनगीक रक्षाक आशा मनमे रोपि जीबए लगैए तहिना व्यास काकाकेँ छेलैन। किएक तँ ओ समाज रूपी समुद्रमे डुमकी लगा-लगा हीरा-मोती खोजि-खोजि अनै छला आ समाजक मुँहमे दइ छला जइसँ अपनो मुँहक अहरा बनले रहै छेलैन। तहूमे हुनकर विचारक संग बेवहारिक दुनियाँमे सेहो छेलैन्हे जे जे मनुक्ख अत्यन्त खगता छोड़ि जँ चुटकियो भरि घरमे चोरा वा जोगा कऽ रखै छैथ ओ मनुक्ख-विरोधी तत्त्व भेल। तँए ओहन निकृष्ट जिनगीसँ अपनाकेँ परहेज राखी।

तहूमे एहेन आशा सेहो मनमे छेलैन्हे जे औझुका जिनगी-ले ने आइ छी, कौल्हुका-ले तँ काल्हि अछिए तैबीच जँ मनमे कोनो तरहक चिन्ता-फिकिर होइए तँ ओ बचपना भेल। तहूमे बारह घन्टाक सुर्ज पहरूदारक समय सेहो कटिये गेल, शेष चन्द्र पहरूक सेहो एक पहर खपिये गेल, बाँकी जे अछि ओ तँ नीनीयो देवीक स्थानमे चैनसँ बीता सकै छी...।”

विचारक चैन अबिते जीतू कक्काक मनमे अपन परिवार जगलैन। जगिते विचार उठलैन जे साड़ी तँ शरीर-रक्षक भेल, से तँ पत्नीकेँ छैन्हे। साल भरिक पुरान साड़ी रहितो ने केतौ मसकल-मुसकल छैन आ ने कोर-पाढ़ि केतौ उघरल छैन तखन तँ भेल जे दुर्गापूजामे भगवतीकेँ खोंइछ भरती तइले साड़ी चाहिऐन...।

पत्नी आ भगवतीक आसन बीच अपनाकेँ स्थापित करैत जीतू काका बजला-

“अहाँक मनेमे चोर बसि गेल अछि तइसँ मन हहिया गेल अछि, तँए कनी..?”

‘कनी’ सुनि सुखनी काकी झिझकैत बजली-

“भगवतीक खोंइछ भरैक प्रश्न ने अछि।”

पत्नीक विचारकेँ ठमकैत देखि जीतू काका बजला-

“ऐ साल अखन तक केते साड़ीक आमदनी भेल अछि आ देह छोड़ि घरमे एक्कोटा ने अछि, ओ की भेल? अहाँ नहियोँ कहब तैयो हम बुझबे करै छी जे केकरो दऽ देलिऐ। नीक केलौं, साड़ी पहिरैक वस्तु छी, ई तँ नहि जे जहिना परदेशिया[12] सबहक घरवालीकेँ देखबै जे साए-साए, डेढ़-डेढ़ साए जोड़ साड़ी चौपेत कऽ ट्रंकमे रखने रहत

[12] शहर-बजारमे रहनिहार

आ कहत जे साड़ी अछिए नहि। एक-दिन–आध-दिन जे पहिरलक ओकरा ओ ऐंठ बुझि रखने रहैए।”

ओना, जीतू कक्काक विचार सुनि सुखनी काकी सहमली मुदा दुनियोँ तँ देखा-देखीक छीहे। लोक नीको देखैए आ अधलो देखैए। दुनियाँमे जे कोनो पैघ-पैघ घटने वा अनुसन्धाने होइए ओकरा मनुक्ख मात्र खोज-पुछारि करैए, केतौसँ आनि कऽ थोड़े दइए। तँए जहिना दुनियाँ अधलाक देखा-देखी करैए तँ ओकरा नीकोक देखा-देखी करैले दुनियाँ अछिए। सामंजस करैत जीतू काका बजला-

“गुमकी लधने नइ ने हएत।”

सुखनी काकी बजली-

“अखन आसिनक अन्हारक अष्टमीए छी, एक पनरहिया तँ बीचमे समय अछि, ताबे अहूँ ओरियान करू आ हमहूँ धृत धड़ै छी।”

सुखनी काकीक ठमकैत मन देखि जीतू काका बजला-

“जहिना व्यास काका एक तम्माक आशामे दुनू परानी एते नमहर जिनगी जीब लेलैन तहिना अपनो सभ हँसी-खुशीसँ भगवतीक खोंइछ दुर्गापूजामे भरबे करब।”

❑

शब्द संख्या : 2014, तिथि : 5 जुलाई 2018

कियो ने पुछैए

एकतीस साल नोकरी केलाक बाद रामानन्द भाय घुमि कऽ गाम एला। एकतीस सालक बीच ए.एस.पी. सँ लऽ कऽ चारि मास आइ.जी.क पद सेहो सुशोभित केने छला। तैबीच ऑफिसक कर्मचारी जरूर बुझैन जे खिशियाह अफसर छैथ तँए काजमे कोताही केने बिगड़बो करता आ भऽ सकैए जे लाल कलम चला देता तँ नोकरियोमे जड़ब हेबे करत। किछु गोरे इमानदार सेहो बुझिते छेलैन। पचीस दिसम्बरकेँ रामानन्द भाय सेवा निवृत्त भेला आ अपन पेंशनक सभ काज सम्हारि दस जनवरीकेँ डेराक सभ वस्तु जात नेने पत्नीक संग गाम आबि गेला। तेसर दिन माने बारह जनवरीकेँ, भिनसुरका चाह पीब रामानन्द भाय अपन ऐगला[13] जिनगीक विषयमे गौर करए लगला। तही बीच पत्नी- सुलेखा सेहो कोठरीसँ निकैल दरबज्जापर पहुँचली। पत्नीपर नजैर पड़िते रामानन्द भाय बजला-

"गामक कियो ने पूछ करैए..!"

ओना, सुलेखाक जे बीतल जिनगी छेलैन ओ तँ अफसर परिवारक रहैन तँए कोनो बात वा कोनो बेवहारकेँ देखै-बुझैक तरीका अप्पन बनि गेल छेलैन। जइ अनुकूल ओ बजली-

"अखन दुइये दिन एना भेल अछि तइमे केना ई बुझि गेलिऐ?"

---

[13] अबैबला

अपन समझसँ सुलेखा बाजल छेली, मुदा सेवा निवृत्तिसँ पूर्वक विचार जिनगीक अनुकूल जहिना रहैए तहिना सेवा निवृत्तिक पछाइत मृत्युक सम्भावनासँ प्रभावित भेने जीवन-मृत्युक बीचक सम्भावनाक संक्रमण भेने अनुकूल विचार सेहो प्रभावित होइते अछि। जइसँ विचारमे किछु-ने-किछु संक्रमण होइते अछि। हेबो केना ने करत, जीता-जिनगी लोक दोसरक सहारा बनैए आ मृत्युक आगमन देखि लोक दोसराक सहारा चाहिते अछि। तँए रामानन्द भाइक विचार पत्नीक विचारसँ सहमेलू नहि भऽ सहखेलू जकाँ बुझि पड़लैन। मुदा समस्या किछु हुअ आकि केहनो हुअ ओ तँ समस्याग्रस्त लोककेँ भोगै-विचारै पड़ैए।

रामानन्द भायकेँ पत्नीक विचारमे जे आसरस भेटक चाही से नइ भेटने मन थोड़ेक निरस जकाँ भइये गेलैन। मुदा जे विचार रामानन्द भाइक मनमे पनैप गेल छेलैन ओकर पेंपीकेँ ओतै रोकि, मनकेँ दोसर दिस बहटारैत बजला-

“जइ दिन गामसँ नोकरी करए विदा भेल रही ओ दिन आ आइ जखन नोकरी छुटला पछाइत गाम एलौं हेन तइमे केतेक अन्तर आबि गेल अछि से अनुमान करै छिऐ?”

पतिक बात सुनि सुलेखा थोड़ेक सिरसिरेली जरूर मुदा किछु लोकक एहेन सोभाव होइते अछि जे जहिना खुशी रहलापर बोली-वाणीक स्वर रहल तहिना नाखुशी भेलापर सेहो ओहिना रहल। सुलेखो तहिना अपन मुँह बन्न कऽ लेली, किछु बजली नहि। भऽ सकैए जे मने-मन गुड़-चाउर फाँकए लगल होइथ।

लक्ष्मणपुर गाममे पहिल-पहिल आइ.पी.एस. रामानन्द भाय भेला। ओना, पढ़ै-लिखैक खियालसँ लक्ष्मणपुर बहुत पछुआएल अछि। सोल्होअना बिनु पढ़ल-लिखल गाम नहियेँ अछि मुदा

जनसंख्याक चौथाइयोसँ कम जरूरे अछि। पनरह-सँ-बीस प्रतिशत साक्षर पुरुख वर्ग आ दू-सँ-पाँच प्रतिशत महिला वर्ग साक्षर अछि। रामानन्द भाय विद्यार्थीए जीवनमे लक्ष्मणपुरक वातावरणसँ अलग भऽ मात्रिकक वातावरणमे जा पढ़ला, बढ़ला आ पालल-पोसल गेला, जैठाम पढ़ाइ-लिखाइक औसत अधिक अछि आ तहूमे खासकए रामानन्द भाइक मामा-नानाक परिवार तँ आरो बेसी अगुआएल छेलैन। रामानन्द भाइक मामाक परिवारमे ई सातम पीढ़ी चलि रहल छैन जे पढ़ै-लिखैक धारासँ नीक जकाँ जुड़ल अछि। माने अक्षर-बोध आ अध्ययन बोधक सातम पीढ़ीक नम्बरपर रामानन्द भाइक मामा सभ भेलखिन। मामक चारि भाँइक भैयारी छैन। जे चारू चारि दिशाक अध्ययेता। किएक तँ हुनक पिता- रघुनन्दन बाबाक अपन खास सोच रहैन। रघुनन्दन बाबाक अपन खास सोच परिवारक खियालसँ रहल होनि वा समाजक जरूरतक खियालसँ जे चारू बेटा– रूपलाल, भूपलाल, दुखलाल आ सुखलाल–केँ चारि दिशाक अध्ययन दिस झुकौलैन, जइसँ एकटा बेटा किसानी ज्ञान, दोसर मशीनी ज्ञान, तेसर चिकित्सा आ चारिम वकालत दिस बढ़ला। किछु दिनक पछाइत चारिम बेटा- सुखलाल जिला जज बनला। वएह वातावरण रामानन्दकेँ भेटल छेलैन जइसँ आइ.पी.एस. बनला।

..ओना, लक्ष्मणपुरक अपन धरतीक उपज, माने शिक्षाक दौरमे एक गोरे मैट्रिक पास करि कोसी प्रोजेक्टक किरानी, दोसर मैट्रिक पास लोअर प्राइमरी विद्यालयमे शिक्षा मित्र आ तेसर बेकती बी.ए. पास केलाक पछाइत बेरोजगारे रहि गेल। वएह कलकत्तासँ दिल्ली तक घुमि-फीरि नोकरी नइ भेने सठिया-कठिया कऽ बी.एल.मे नाओं लिखौलक आ वकील बनि झंझारपुर कोर्टमे कार्यरत अछि। बाँकी गामक लोक छोट-मोट बेपारक संग खेती-गिरहस्ती करैए। तँए की गाममे सम्पन्नता नहि अछि सेहो नहियेँ

कहल जा सकैए। झोरे छाप डॉक्टर किए ने हुअए मुदा लक्ष्मणपुरक डॉक्टर तँ वएह छी किने। जेकरा काजमे समाजक बिसवास छइ। भगवान रच्छ रखथुन लक्ष्मणपुरवासीकेँ जे टाटा हॉस्पीटल बम्बई आ आयुर्वेद संस्थान दिल्लीक मुँह नहि देखए पड़इ। कियो सुखे थोड़े जाइए। दमकल-बोरिंगसँ लऽ कऽ ट्रेक्टर धरिक मिस्त्री, बिजलीक मैकेनिकक संग मोबाइलक मैकेनिक सेहो लक्ष्मणपुरमे अछिए। तौला-कराही बनबैबला माने बरतन-बासनक सृजनकर्त्ताक रूपमे कुम्हार-पण्डित सेहो अछिए। दुर्गा स्थानक दुर्गा माताक संग ब्रह्म स्थानक रेमन्तक संग घोड़ो गढ़बे करैए। तहिना केबाड़-चौकैठक संग चौकी आ सजल-धजन पलंग धरिक सृजेता कर्मकार कलाकार लक्ष्मणपुरमे नहि अछि सेहो केना नइ कहल जाए। तहिना काँच-कड़चीसँ काँच बाँसक फुलडालीसँ लऽ कऽ पनडालीक संग पतडालीक (पत-पथिया) अतिरिक्त डाला-धनडाला तकक निर्माणकर्त्ता नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। जइ गाममे सभ कथुक सम्पन्नता रहत तइ गामकेँ जँ सम्पन्न नइ कहबै तँ ओइ गामक तौहीनक संग बेइमानी सेहो भेबे कएल किने। मुदा से बात नहि, गौंओं आ अनगौंओं सभ लक्ष्मणपुरकेँ सम्पन्न समाज मानिते अछि। जँ से नइ मानैत अछि तँ कियो अनगौंआँ किए अपन बेटी-बेटाक संग भाइयो-बहिनक बिआह लक्ष्मणपुरमे करैए। किनका मनमे एहेन इच्छा नइ रहै छैन जे अपन बहिन वा बेटीक जिनगी नीक जकाँ नहि चलए। ओना, जिनगियो-जिनगीमे अन्तर होइते अछि। एक्के गाममे एक परिवारक जिनगी खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ कपड़ा-लत्ता, घर-दुआरिक संग पढ़ै-लिखै तक सम्पन्न रहैए आ ओहीठाम माने बगलेमे, दोसरकेँ केकरो पढ़ै-लिखैक खर्च नइ जुटै छै तँ केकरो रहैक नीक घर नहि छइ। तहिना केकरो कपड़ा-लत्ताक अभाव अछि तँ केकरो खेबा-पीबाक। मुदा किछु अछि, गाम तँ सबहक छिऐन्हे।

सभकेँ अपन-अपन अधिकारो आ कर्तव्यो छैन्हे। तइमे जे जेहेन विचारक छैथ ओ ओइ अनुकूल अपन परिवारक सिरजनो-प्रतिपाल करै छैथ आ नष्टो-संहार करिते छैथ।

आइसँ बतीस बर्ख पूर्व रामानन्द भाय जखन आइ.पी.एस. कम्पीट केलैन तँ गामक जेते बुझै-सुझैबला लोक छला सभ खुशीसँ झूमि उठल छला। किनको झुमैक खुशी छेलैन जे गाम समाजक लोक उठि कऽ सत्ता तक पहुँचला, तँ किनको खुशी जे गाममे कोनो भीड़-कुभीड़ पड़त तेकर रक्षक गोबरधन धारी कृष्ण जकाँ अवतार लइये लेलैन। किनको मनमे खुशी ऐ दुआरे रहैन जे देखा-देखी दुनियाँ चलैए, जखने एक गोरे धरतीसँ उठि अकास छुबि लेलैन तखने दोसरो-तेसरो छुबे करत। आ किनको मनमे ई आशा छेलैन जे बिनु पढ़ल-लिखलकेँ ने नोकरी[14] नइ भेटैए आकि नइ भेटत मुदा ओइ संग पढ़लो-लिखल जे टौआएल फिरैए कमसँ कम आब ओकरा सबहक बेरा पार हेबे करत। जखन एते पैघ डिग्री रामानन्द भाय हाँसिल केलैन तखने ने पैघ पदक प्राप्ति सेहो हेबे करतैन जइसँ दबल-कुचललकेँ लाभ हेबे करत।

रामानन्द भाइक पिता जनकनन्द साधारण पाँच बीघा जोत जमीनक गिरहस्थ, जिनका अपन होश-हवास एते नहि जे रामानन्द भाइक पदक गरिमाकेँ बुझितैथ मुदा सासुरक जे परिवार रहैन ओइसँ किछु-ने-किछु अंकैत तँ जरूर छेलाहे। बेटाक डिग्रीक खुशीमे समाजे नाचि उठल छल जइसँ जनकनन्द सेहो झूमि उठला। बेटाक प्रतिष्ठाक खुशीमे जनकनन्द समाजक संग कुटुम्बो-परिवारकेँ भोज खुएबाक विचार मनमे रोपि लेलैन।

ट्रेनिंग सम्पन्न केलाक पछाइत रामानन्द भाय गाम एला। परसू

[14] सरकारी नोकरी

जुआइन करए जेता। बीचमे काल्हि भरि समय अछि। जनकनन्दकेँ भोज करैक अवसर भेटलैन। ओना, रामानन्द भाय पनरह दिन पहिनहि अपन कार्यक्रमक जानकारी पिताकेँ दए देने रहैन। भोजो तँ भोज छी, अपन-अपन गुण-धर्म तँ ओकरो छइहे। बिआहक भोज बरियातीक भोज भेल जइमे दू समाजक बीच मनुक्ख-मनुक्खक कान्हक मिलानीक संग लड़का-लड़कीक बिआह होइत अछि। तँए ऐ भोजमे रस्सा-कस्सी सोभाविक अछि, जइसँ खेबा-पीबाक ओहन रूप पकड़बे करत। किए ने लोक (बरियाती) बाजत जे जहिना अँठियाहा रसगुल्ला छल तहिना लालमोहनो आ डलनामे सेहो डलडेक छौंक पड़ल छेलइ। मुदा ओहीठाम श्राधक भोजक महात्म बदैल जाइए। बदलबो केना ने करत, जैठाम मृत-आत्माकेँ स्वर्ग-नर्कक भागी बनैक प्रश्न अछि तैठामक पंच जँ भोजमे तीमन-तरकारीक परिचय करए लगत तखन अनेरे ने भोजखौक सभ भेल-गेलमे ओइ आत्माकेँ नर्क पठौत। मुदा जनकनन्दक भोज तँ से छेलैन नहि, ओ तँ रामानन्द भायकेँ शुभकामनाक छेलैन। तँए ऐठाम जँ भोज खाइबला शुभकामना छोड़ि अड़कच-बथुआ बाजत से की लक्ष्मणपुरक लोक बेकूफ अछि। एते खुशी तँ सबहक मनमे छेलैन्हे जे गामक धरतीसँ अकास टेकै धरिक खाम्ही गाममे बनि ठाढ़ भेला अछि।

तेसर दिन चारि बजे रामानन्द गामसँ विदा हेता। दुपहरक पछातियेसँ समाजक एका-एकी लोक शुभकामनाक संग रामानन्दकेँ अरियातै-ले आबए लगला। ओना, काजुल लोक जँ चारि बजे यात्रा करता तँ ओइसँ पनरह मिनट पहिने तैयारी करैमे लगता आ समयसँ पाँच मिनट पहिने पहुँचैक परियास करता, मुदा अकाजुल तँ बेरक चारि बजेक यात्रा-ले भोरेसँ सिंगार-पेटार नहि करत तँ ओकरा-ले ओ यात्राक सगुन की भेल। मुदा से नहि, रामानन्द भाय ट्रेनिंग कऽ

चुकल छला, काज करैक ढंगमे नवपन आबि गेल छेलैन। दुपहरक पछातियेसँ समाजक शुभेझुकेँ देखि-देखि अपन यात्रा मोन पड़ए लगलैन। मुदा ओ तँ चारि बजे हएत। तँए खुला देहक संग रामानन्द अपन शुभचिन्तकक शुभकामना ग्रहण कऽ रहल छला। समाजो तँ समाज छी, जखन बेटियोकेँ लोक धान, हरदी आ दूभिक खोंइछ भरि विदा करैत तखन बेटा तँ सहजे बेटा छी, तहूमे ओहन बेटा जे धरतीसँ उठि अकासक सोंगर बनि ठाढ़ अछि, तँए कियो नववस्त्र तँ कियो बटखरचा, भाड़ा लेल नगद-नारायण सेहो अरपनक संग अर्पित कइये रहल छेलैन।

घरसँ निकलैकाल रामानन्द भाय घर-जनसँ लऽ कऽ गाम-जन तक शुभेक्षुक रूपमे देखि रहला अछि। सबहक सेवा सबहक कल्याण मनमे नाचि रहल छेलैन। सीमा टपबैत जहिना रामकेँ अयोध्यावासी अरियातलकैन तहिना रामानन्द भायकेँ लक्ष्मणपुरवासी अपन गामक सीमान धरि अरियाइत देने रहैन।

पान खेला पछाइत रामानन्द भाय पत्नीकेँ सोर पाड़लैन। ओना, सुलेखाक मन भीतरे-भीतर थौआ भऽ गेल रहैन, मुदा पदक अन्तिम सीढ़ीक रोब तँ अर्द्धमृतो जीवित छेलैन्हे। लगमे अबिते सुलेखा बजली-

“किए एना डकबाहि केलौं?”

पत्नीक शब्दक स्वाद जेना रामानन्द भायकेँ कड़ुआएल बुझि पड़लैन मुदा जहिना चढ़न्त धारक वेग आ उतरन्त धारक वेगक गति बदैल जाइ छै तहिना रामानन्द भायकेँ हुअ लगलैन। मुदा एकटा नमहर जिनगीक भुक्त भोग तँ बनियेँ गेल छला तँए सोचैयो-विचारैक आ बुझबो-सुझबोक नजैर तँ बनियेँ गेल छेलैन। बजला-

“दुनियाँमे हमरा-ले अहाँ सँ लगक दोसर कियो ने अछि, तँए

अहाँकेँ एकटा बात कहए चाहै छी।”

दर-दरसँ गुजरल रामानन्द भाइक मन अनुभूतिक संग अनुभव कऽ नेने छेलैन जे जिगनीमे चूक जरूर भेल, जँ से नहि भेल तँ एकतीस बर्ख पूर्वक समाज आइ किए कुद-रूप चेहरा देखि भटैक गेल? पतिक कल्पित भाव बुझि सुलेखा अपन गुरुत्वक भाव जगबैत पुछलकैन-

“की कहए चाहै छी?”

विस्मित होइत रामानन्द भाय बजला-

“पदक मदमे समाजक संग भारी चूक भेल!”

सुलेखा बजली-

“की चूक भेल?”

रामानन्द भाय बजला-

“मन बोझिल अछि, काल्हि कहब।”

❑

शब्द संख्या : 1584, तिथि : 9 जुलाई 2018

केकरो कियो ने

एक तँ ओहुना मधुबनी जाइसँ पहिने पत्नीसँ खूब रक्का-टोकी भेल। रक्का-टोकीक कारण छल एकटा मुकदमा। रक्का-टोकी होइत-होइत रका-टोक हुअ लगल। आ ओहो एते बढ़ि गेल जे दुनू परानी दू दिस भऽ गेलौं। माने ई जे पत्नी बजली-

“हमरा एहेन ठाँठ महींस आकि ठाँठ गाए पोसैक जरूरत नइ अछि जे भरि दिन ओकरा पाछू लागल रहू आ दूधक बेरमे फूल सुँघा देत।”

एक मानेमे पत्नीक विचार जँचल। जँचल ई जे गाए आकि महींस कियो पोसैए धनक उगाही बुझि। ओ भलेँ कम दुधगैर हुअए आकि बेसी ई दीगर बात भेल। मुदा साफे किछु ने हुअए ई तँ कनी कठाइन भइये गेल। मुदा पत्नी बाजल छेली एकटा केसक उदाहरणमे।

आइसँ तीस बर्ख पहिने गाममे दू गोरेक झगड़ाक पनचैतीमे पंच बनि गेलौं। ले बङौर! गुर केतौ आ पह केतौ पड़ि गेल! जइ झगड़े पनचैतीमे गेल रही ओकर चर्च पंच सभकेँ अबै दुआरे पछुआएले छल तइसँ पहिने गामक दोसर गप उखैड़ गेल। जेते गोरे पनचैतीमे पहुँचल रही तहीमे दू पार्टी बनि गेल। दू पार्टी जँ विचारे धरि रहैत तखन तँ कोनो बात नहि। गाम-घरमे एना होइते छइ। कोनो घटना गाममे किए ने हुअए, जहाँ-तहाँ दू गोरे–चारि गोरेक बीच कहा-कही होइते अछि, भलेँ ओइ कहा-कहीक कोनो कारगर

परिणाम नइ निकलौ। मुदा एतए से नहि भेल। दुनू पार्टीक बीच हाथा-बाँही होइत थापर-मुक्का चलि गेल। धरमागती जँ पुछी तँ मारि बेसी हमरे पार्टी माने हम जइ पार्टीमे रही सएह सभ खेलक। मुदा बेकतीगत रूपमे हम बेसी हाथ चलेलौं, हाथ कि चलेलौं जे दुनू हाथमे आँगुरक मुक्का बान्हि बेसुमार चलेलौं जइसँ एक गोरेकेँ बेसी चोट लगि गेलै, वएह केस कऽ देलक, सएह केस आइ तीस बर्खसँ लड़ैत आबि रहल छी। लड़ैत की आबि रहल छी, मधुबनी जाइ-अबै छी। कहियो हाकिम नहि, तँ कहियो पेशकारक ह़ड़ताल, कहियो वकीलक वहिष्कार, तँ कहियो चपरासीक हड़तालक दुआरे कोर्ट लगबे ने कएल, जइसँ तारीक-पर-तारीक होइत-होइत आइ तीसम बरख बीति रहल अछि।

मासे-मास तारीक भेने परिवारक अनिवार्य खर्चमे, माने मासक बजटमे केसक खर्च साए रुपैआ जोड़ाइये गेल अछि। ओना, परिवारमे पाँच-दस, पचीस-पचास रुपैआक केते काज खगि जाइए से बरदास करैत आबि रहल छी।

पत्नीक प्रश्नक उत्तर देब जरूरी छेलएहे। जँ से नहि देब तखन तँ पत्नीक संग हारबे ने भेल। आ जखने घरमे पत्नीक जीत हएत तखने ने पुरुख-जुइतिक घर मौगी-जुइतिक भऽ जाएत वा पुरुखाह घर मौगियाह भऽ जाएत। आ जँ से हएत तँ गाम-समाजक मुँह रोकि देबै, कहबे करत किने- ‘फल्लाँ घर मौगियाहक घर छी।’ मनमे कोनो ताले-मेल नइ बैइसए। पछाइत घाल-मेल करैत बजलौं-

“केस-मोकदमाक हाल अहाँ थोड़बे बुझबै ओ इज्जतक लड़ाइ छी, बिनु लड़ने केकरो इज्जत होइ छइ।”

आमक गाछक सराइर हुअए आकि लत्तीक फोंकगर मुड़ी, ओकरा तोड़ि देने जहिना मुड़िये बदैल जाइए तहिना भेल। पत्नी

बजली- “हमरा ऐ केससँ कोनो मतलब नइ अछि, सात गोरे फँसल अछि, जे गति ओइ छबोकेँ हेतै से हमरो हएत।”

बजैक क्रममे तँ पत्नीक विचार नीक छेलैन्हे। किएक तँ सम्मिलित परिवार ने छी। दुनू गोरे मिलि कऽ ने ठाढ़ो केने छी आ आगू मुहेँ चलाइयो रहल छी। मुदा जँ केसक पैरवी छोड़ि देबै तखन तँ अनेरे गैर-हाजिरीमे वारंट हएत, जब्ती-कुर्की हएत! आ जँ कहीं पुरान केस बुझि हाकिम फैसले लिखि देलैन तखन तँ सजो भऽ सकैए। तैकाल मे हमर साती पत्नियो पूरि पौती आकि अपने पुरए पड़त?

ओना, एते चलाकी दुनू परानीक गप-सप्पमे कइये नेने छेलौं जे पत्नीकेँ बेतुकार उत्तर नहि दए, कहने रहिऐन जे मधुबनीसँ ऐ बेरक तारीक केने अबै छी, तखन निचेनसँ दुनू परानी विचारि लेब।

अपने मधुबनीए-मे रही। जेठुआ लगन जखन एहेन अछि, तखन फगुआ मासक फागुनक लगन केहेन भेल छल से सभकेँ बुझले अछि। अपना बुझल नइ छल जे औझुका लगन अपनो लगल अछि, तँए थोड़े निचेन रहबे करी। आठ-नअ बजे रातिमे जखन घरपर पहुँचलौं तँ देखलिऐ जे सौंसे अन्हार पसरल अछि। घरमे एकोटा मनुक्ख नहि। गुण अछि जे गाए-महींस नइ पोसने छी, एकटा जँ पीलिया कुत्ता अछियो तँ ओकरा-ले समाजे खुजल अछि। ओना, जखन दरबज्जापर पएर देलौं तखन ओ दरबज्जाक आगूमे अन्हारेमे बैसल छल। हारि-थाकि निर्णय केलौं जे अनका भरोसे लोक केते दिन जीब सकैए, से नै तँ भेल ते चारिटा रोटी बनाएब अछि। अनेरे तीमन-तरकारी बनबैक भाँजमे की पड़ब से नै तँ जखन अपने उपजौल तरकारी अछि, तखन किए ने ओकरा उसैनिये वा पकाइये कऽ पुष्टगरसँ चहटगर सन्ना बना ली। एते करब कोन असाध भेल।

तेसर दिन हहाएल-फुहाएल पत्नी धिया-पुताक संग नेने पहुँचली। बजलौं-

“लगन कटबए केतए गेल छेलौं?”

पत्नी बजली-

“बहिनक बेटीक सासुर। बिआह छेलइ।”

मनक विचारकेँ मनेमे दाबि, मुँह बन्न कऽ लेलौं। किएक तँ मनमे आबि गेल- ‘च-र-र-अ सरोकारे करहर मौसा।’

❑

शब्द संख्या : 718, तिथि : 11 जुलाई 2018

गपक पियाहुल लोक

दीनबन्धु काकाकेँ आइ अगिलग्गी केसक फैसलाक तारीख छिऐन। ओना, केस पचीस साल पहिलुका छिऐन, जइसँ पैंतीस मुद्दालहमे पाँचकेँ मरि गेने तीस गोरे जीवित छैथ। काल्हि साँझेमे सभ कियो विचारि लेलैन जे सभ काज छोड़ि भिनसरे समयपर तैयार भऽ सभ कियो संगे साइकिलसँ मधुबनी चलब। सेशन कोर्टक केस छी तँए अपना सभ दिससँ कोनो नियम भंग करबाक नहि अछि, जँ कोर्टे वा मुद्दैये दिससँ कोनो गड़बड़-सड़बड़ हएत तँ ओकरा आगू फरिछा लेब। जखन विचारसँ प्रेम केने छी तखन डरैक कोन बात अछि। कोर्ट-कचहरी हुअ कि थाना-बहाना आकि कस्टडी-जहल, सभठाम जाइले तैयार छीहे।

हरे-हरे सभ कियो–माने तीसो मुद्दालह, एक जुटताक परिचय देलैन। ओना, जहिया केस भेल वा केससँ पहिने जे कारण भेल तहू समयमे सभ कियो एकजुटताक परिचय दइये देने छेलखिन मुदा पचीस साल जे बीचमे समय बीतल, तैबीच कोनो तेहेन काजे नहि भेल जइमे एकजुटताक परीक्षा होइत। एकर माने ईहो नहि जे पैंतीसो डरसँ देह-हाथ समेट लेलैन। सामाजिक स्तरक जे काज छल ओ काज बीचमे चलल तँए परीक्षाक घड़ी उपस्थित नइ भेल। मुदा सामाजिक बदलावक जे प्रक्रिया अछि तइमे तँ परीक्षा होइते आबि रहल अछि।

खेला-पीला पछाइत जखन दीनबन्धु काका ओछाइनपर

पड़ला आ निन्द्राक आगमन हुअ लगलैन तखन चिन्त्य मनमे काल्हुक काज धियानमे जगैत एलैन। धियानमे जगिते नजैर छिटैक कौल्हुका केसपर गेलैन। उठि कऽ बैइसैत पत्नीकेँ सोर पाड़ि बजला-

“कनी एम्हर आएब।”

‘कनी एमहर आएब’ सुनिते प्रेमलता अकचकेली। किएक तँ दीनबन्धु काकाकेँ ओछाइनपर गेला आधा घन्टा भऽ गेल छेलैन। परिवारक लोक सभ बुझिते छैन जे जहिना काज लग पहुँचते काजमे हाथ लगा दइ छैथ तहिना ओछाइनपर पहुँचते निन्द्रासँ तन्द्रा होइत निनिया देवीक कोरामे पहुँच जाइ छैथ, तँए अधिक-सँ-अधिक पाँच मिनट समयक दूरी जागल आ सुतलक बीच हिनका लगै छैन। ओना, प्रेमलता अखन तक ओछाइनपर नहि गेल छेली किएक तँ मरदा-मरदीकेँ खुएला-पीएला पछातिये ने स्त्रीगण सभ खेबो-पीबो करै छैथ आ बरतन-बासन धोइत-उसारैत एक-सबा घन्टा बीचमे लगिये जाइ छैन। अकचकाइत प्रेमलताक मनमे भेलैन जे भरिसक किछु सपना देखलैन तँए एहेन आवाज मुहसँ निकललैन। तथापि शान्त-चीत भऽ प्रेमलता बजली-

“कनी हाथ लागल अछि, अबै छी।”

योजनाबद्ध ढंगसँ विचारैत दीनबन्धु काका विचारि नेने छला जे परिवार हुअ आकि समाज, अपन जवाबदेहीक जे काज अछि ओ अगुआ कऽ चलबे ने इमानदारीक परिचय दइए। पत्नीकेँ लगमे अबिते दीनबन्धु काका बजला-

“दस बजेसँ कोट-कचहरी खुजैए तइसँ पहिने एक घन्टाक रस्ता सेहो टपब अछि, तँए साढ़े आठ बजे अहाँ भोजनक प्रबन्ध करि लेब। जलखै नइ करब, एकेबेर खाइये कऽ घरसँ निकलब।”

ओना, प्रेमलता गपक पियाहुल लोक छैथ तँए किछु गप-

सप्पकेँ आगू बढ़बैक विचारसँ केसक विषयमे खोर-चाल करब मनमे जगबे केलैन मुदा बरतन-बासनकेँ उसारब आ पतिकेँ सुतैमे बाधा उपस्थित करब विचारकेँ रोकि देलकैन। तँए, प्रेमलता एतबे बजली-

"बड़बढ़ियाँ।"

पत्नीक मुहसँ 'बड़बढ़ियाँ' सुनि अपन गोटीकेँ सहपर चलैत देखि दीनबन्धु कक्काक योजना अन्तिम चरणमे पहुँच गेलैन। काजक अन्तिम साँस लैत विचारलैन जे चारि बजे भोरे ओछाइन छोड़ि पहिने संगी-साथीकेँ जना देब अछि। पछाइत अपन नित्य-कर्म दिस बढ़ैक अछि। किएक तँ सबहक अपन-अपन नित्य-कर्म अछि तइमे जेते समय लगैए ओ तँ सभकेँ लगबे करत, तँए जँ पहिने अपन नित्यकर्म दिस बढ़ब तँ हो-न-हो केकरो नीन समयपर नइ टुटइ। अन्तिम निर्णय मनमे जगिते निनियाँ देवीक लगौल टौहकीमे दीनबन्धु काका फँसि गेला।

जहिना सुतैक अन्तिम बेलामे चारि बजे भोरे उठैक बेल दीनबन्धु काका रोपि लेलैन तहिना चारि बजे आँखि खुजि गेलैन। आँखि खुजिते घड़ीपर नजैर दिअ लगलैथ कि देवाल घड़ीक घन्टी टनटनाए लगल। जेकरा गनि दीनबन्धु काका जखन धड़ीपर नजैर खिरौलैन तँ ठीक चारि बजि रहल छल। ओछाइनसँ उठिते अपना संग तीसक जमानतदारक संग एक साथ कचहरीमे उपस्थित हेबाक छेलैन। मनमे कने शंका जगलैन जे अपना देवाल घड़ी अछि तँए समयक गवाही बनि गेल, मुदा जेकरा घड़ी नइ होइ ओ तँ सुतले रहि जाएत। जखने एक गोरेकेँ बिलम हएत तखने तीसो बिलमबे करत। से नै तँ दोसरो-तेसरोकेँ उठा दिऐ जे ओहो सभ उठि कऽ अपन-अपन काजमे लगि जाएत।

मनमे काज अबिते काजक रूपकेँ निहारए लगला। अपना

छोड़ि उनतीस आदमी अछि जेकरा घरे-घर सबहक ऐठाम जा-जा कऽ जगाएब अछि, ऐमे जँ पँच-पँचो मिनट समय लागत तखन तँ पाँच मिनट कम अढ़ाइ घन्टा समय लगि जाएत! तहूमे कोट-कचहरीक काज छी, बिनु पाइये चलत नहि, जँ कहीं केकरो पाइक ओरियान नहि भेल होइ तखन तँ आरो काजमे काज जनमिये जाएत किने, जइसँ आरो बेसी समयक नोकसान हएत। अढ़ाइ घन्टा समय निकलला पछाइत जँ अपने अपन नित्य-कर्म दिस बढ़ब तखन तँ अपने सभसँ पछुआ जाएब। यएह ने विपरीत परिणामक विपरीत क्रिया भेल, से नै तँ काजकेँ सघन रूपमे करैक अछि। सघन रूप भेल, एक गोरेकेँ उठेलौं, उठला पछाइत दू गोरे भेलौं, दुनू गोरे दू गोरेकेँ उठौला पछाइ चारू गोरे चारि दिस भऽ गेलौं। जइसँ आठ भऽ जाएब, आठसँ सोलह भऽ जाएब, जइसँ पनरह-बीस मिनटमे सभ जगि जाएत। दस बजे कचहरीमे हाजिर हेबाक अछि तइ बीचक जे काज अछि ओइमे जँ एक-एको मिनटक बचत करैत चलब तँ पनरह-बीस मिनट पुरिये जाएत।

घरसँ जे सोचि दीनबन्धु काका निकलला, रस्तामे तइ सोचमे अशोच जगलैन। अशोच ई जगलैन जे कोट-कचहरीक काज छी, मधुबनी पहुँचते पहिने मुंशियो आ वकीलो साहैबसँ भेँट करब अछि, पछाइत कोर्ट-ऑफिसक सेहो पता लगाएब अछि जे बन्द रहत कि खुजल रहत। खुजलोमे जज साहैब उपस्थित हेता कि नहि इत्यादि-इत्यादि अनेको काज दीनबन्धु कक्काक नजैरपर आबि गेलैन। सभ जुति-भाँति लगबैत घरपर अबैत-अबैत आठ बजि गेलैन। माने चारि घन्टा समय बीत गेलैन। ओना, अपन नित्यो-कर्मो आ चाहो-ताहो रस्ते-रस्ते पार-घाट लगि गेल छेलैन।

घरपर अबिते दीनबन्धु काकाकेँ नहाइसँ पहिने विचार उठलैन जे गामक चौहद्दी ने बान्हि लेलौं मुदा घरक की हाल अछि सेहो तँ

जानबे अछि। आँगन पहुँच, पत्नीकेँ अछप्पे पुछलखिन- “भानसक की हाल अछि?”

तरकारी कटैकाल प्रेमलताकेँ बामा हाथक आँगुरमे थोड़ेक कटि गेल छेलैन तँए मन पीड़ासँ पीड़ाएल रहैन। बजली- “हाल की रहत, बेहाल अछि!”

पत्नीक तामसकेँ दीनबन्धु काका आँकि नहि सकला। आँकबो असान नहियेँ छेलैन, किएक तँ दरबज्जा दिसक मुहसँ आँगन प्रवेश केने छला आ आँगन दिसक रस्ता दिस घुमि प्रेमलता मुड़ी गोंति बैस कटल आँगुरकेँ दहिना हाथक आँगुरसँ दाबि कऽ पकड़ने छेली। ओना, पत्नीक मुहसँ सुनल ‘बेहाल’ शब्दक दोसर माने दीनबन्धु कक्काक मनमे उठि गेल छेलैन जे भरिसक कोनो कारणे भानसमे गड़बड़ भेल अछि। सहटैत दीनबन्धु काका पत्नी दिस बढ़ला। ओना, कक्काक मनमे तेहेन उमकी उठि गेल रहैन जे जहिना कोनो प्रेमी अपन प्रेमिकाकेँ सात अरब लोकमे सभसँ नीक रूप देखैए तहिना आनन्दसँ आन्दोलन कएल आन्दोलनीक तेहेन रूप पकैड़ नेने छेलैन जे दुनियाँक कोनो दोसर समस्या आकि दोसर काज हवा जकाँ उड़ियाइत बुझि पड़ै छेलैन। आध लग्गा हटलेसँ देखलैन जे पत्नी बामा हाथक कटल आँगुरकेँ दहिना हाथक आँगुरसँ कसि कऽ दाबि खून रोकने छैथ। धरतीपर पसरल खून, आँचरसँ आँगुर दाबि कऽ पकड़ने प्रेमलताकेँ बिजलोका जकाँ बिजकल मुँह देखि एकाएक दीनबन्धु कक्काक मनमे विचारयुद्ध ठाढ़ भऽ गेलैन। एक दिस अपन जिनगीक ओ समय जे सेशन केसक जजमेन्टक दिन छी, एहिठाम भाग्यक पलटा-पलटी हएत तँए कोर्टमे उपस्थिति भऽ डटैक लेल तैयार रहब अछि आ दोसर दिस पत्नीक कटल आँगुरक इलाज नइ कराएब तँ हो-न-हो लोहासँ कटल छैन, कहीं एक बिमारीमे दोसर बिमारी ने ठाढ़ भऽ जाए..!

बिमारीमे बिमारी जगने जहिना पत्नीकेँ मरैक सम्भावना दीनबन्धु काकाकेँ बुझि पड़लैन तहिना कोर्टमे अनुपस्थित भेने अपनो मृत्यु नजैरपर एबे केलैन। कोर्टसँ लऽ कऽ बाहर तकक लोक कहबे करत जे जाबे ओ अपराधी नहि अछि ताबे कोर्टसँ नुकाएल किए..?

दीनबन्धु कक्काक मन ओझरीमे ओझराए लगलैन। मुदा लगले मनमे निर्णित विचार जगलैन। पहिल, जीवन तखन ने जिनगी। अखन अपन मृत्युक परवाह करब आकि अनकर? एक तँ ओहुना जँ परवाह-परवाहक अन्तर काजक वजनसँ नापल जाइए...।

नव ऊर्जाक संग दीनबन्धु काका विचारकेँ रोकि बजला- “केना आँगुर कटल?”

प्रेमलता बजली- “तरकारी-ले बैगन बनबै छेलिऐ तहीकाल नवटोलवाली कनियाँ धड़फड़ाएल आबि बाजल।”

समयक संकीर्णताकेँ देखैत दीनबन्धु काका बिच्चेमे बजला-

“की बाजल?”

“बाजल जे झंझारपुर लग एन.एच.पर एकटा चरि-चकिया गाड़ी उनैट गेलै तइमे एकटा खूब मोटगर-डटगर मौगी चक्का-तरमे मुँह बाबि मरि गेल।”

पत्नीक बात सुनि दीनबन्धु कक्काक मन मानि गेलैन जे पत्नीक मन उछैट कऽ ओमहर चलि गेल हेतैन जइसँ बैगनक संग-संग अपनो आँगुर काटि लेली। बजला- “बैगन काटैकाल ने आँगुर कटल। तइसँ पहिलुका विहीत तैयार भेल अछि किने?”

मुड़ी डोलबैत प्रेमलता बजली- “हँ, भात-दालि तँ बनि गेल मुदा तरकारी नइ बनल।”

मने-मन दीनबन्धु काकाकेँ काम-चलाउ संतोख भइये गेलैन। बिहुसैत बजला-

“अहाँ सन सन जँ गपक पियाहुल लोक[15] रहत तँ लोकक[16] उपकार सभ दिन होइते रहतैन।”

बजैक क्रममे दीनबन्धु काका बाजि तँ गेला मुदा लगले मन बिचड़ैत विचार देलकैन जे समाजक बीच कर्मक जिनगीक संग गपोक जिनगी बनि गेल अछि। काज आ गपक बीच नमहर दूरी बनि गेल अछि। जे बनब सोभाविको अछि। जहिना एक छोरपर महिला दिन-राति अपन दुख-धन्धाक पाछू बेहाल अछि तहिना दोसर छोरपर ईहो तँ अछिए जे महिला जगतमे की ओहन महिला नइ छैथ जिनका जिनगीक हर काजक लेल नोकर-चाकर नहि छैन। तखन तँ प्रेमलता ओहन छैथ जिनका बीच-बिचाउमे देखि सकै छी।

प्रेमलता बजली-

“आब की करब?”

दीनबन्धु काका बजला-

“किछु ने करब। सभ काज रस्तासँ होइ छै, रस्तासँ करब। संगी कऽ दइ छी, डॉक्टर ऐठाम जा कऽ पहिने पट्टी बन्हबा दवाइ लऽ लिअ। हम अपनेसँ परोसि कऽ खा लेब।”

❑

शब्द संख्या : 1420, तिथि : 13 जुलाई 2018

---

[15] पत्नी

[16] पतिक

उदय-प्रलय

विदेशसँ पी.एच-डी.क डिग्री पाबि धरणीधर गाम पहुँचला। गाममे पएर दइते गामक बात मोन पड़ए लगलैन- यएह गाम छी, जैठाम सात पुस्तसँ बास अछि आ आगूओ केतेक दिन धरि बसले रहब। मुदा लगले सामाजिक परिवेश सोझामे आबि धमकलैन। धमकलैन ई जे जहिना अपन जन्म ऐ सुखपुरमे भेल तहिना बच्चामे पालन-पोषण सेहो भेल, पछाइत गामेक स्कूलमे शिक्षा पेबा लेल पिताजी नाओं लिखा देलैन। दस बर्ख धरि गामक स्कूलमे पढ़ि पड़ोसी गामक हाइ स्कूलमे नाओं लिखेलौं आ हाइ स्कूल टपला पछाइत दरभंगा कौलेजमे नाओं लिखा एम.ए. पास केलौं। पढ़ैक अपन जिज्ञासा आ परिवारक सहयोग पेब विदेशसँ विशेषज्ञताक डिग्री सेहो उपार्जित केलौं। डॉक्टर वा आन प्रोफेसर जकाँ तँ नहियेँ भेल जे किछु दिन नोकरी केलाक पछाइत विदेश गेलौं। नोकरी करैसँ पहिने विदेशसँ डिग्री हाँसिल केलौं, आब नोकरी करब।

'आब नोकरी करब' वाणीमे अबैत-अबैत धरणीधरक अपनो जिनगीक बानि उबानिसँ सुबानि हुअ लगलैन। उबानि-सुबानिक बीच बाटपर धरणीधरक मन ठमकए लगलैन। एक दिस पूर्वक सात पुस्तसँ गाममे बासभूमि रहल आ आगूक तँ निश्चित ठेकानो नहियेँ अछि जे केतेक दिन रहत। निश्चित ठेकान ऐ दुआरे नहि जे सामाजिक परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे पढ़लो-लिखल आ बिनु पढ़लो-लिखल लोक अपन बाप-दादाक जन्मभूमि छोड़ि-छोड़ि

अनतए बसए लगला अछि, तँए गाम उपैट गेल सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। अखनो ओहन गाम अछिए जे अनेको पुस्तसँ बास करैत अनेको परिवारक वंश आबियो रहल अछि आ आगूओ केतेक पुस्त धरि बसबे करत...।

एकाएक धरणीधरक विचारक व्यारमे लपट उठलैन। लपट ई उठलैन जे गाम छोड़ि जे कियो बहराइ छैथ तेकर हजारो कारण अछि, से अखन नहि, अखन एतबे जे जे अपन गामकेँ चीन्हि गामसँ बहराइ छैथ वा बिना चीन्हने गामसँ बहराइ छैथ। जँ गाम चीन्हि बहरेता तँ गामो जरूर चीन्हतैन आ जँ गामकेँ बिनु चीन्हने जे बहराइत हेता, तँ हुनका संग गामे किए चीन्हि-पहचीन्ह रखतैन?

...ऐठाम आबि धरणीधरक वैचारिक व्यारक लपट सेहो लपटए लगलैन। ओना, धरणीधरक सोभावो अन्वेषी बनि गेल छैन। मुदा अन्वेषियोक तँ अपन संसार छै, आगूमे जे संसार ठाढ़ अछि तोहूसँ किछु लइ छैथ आ अपन जे संसार[17] निरमै छैन तोहूसँ उपार्जित करै छैथ...। दुनू संसारक बीचक क्षितिजपर लटकल धरणीधर ने ऊपर चढ़ि रहल छला आ ने निच्चेँ उतरल होइन। एक दिस गाम-समाजक विराट रूप, जे रूप यशोदा मैंयाकेँ कृष्ण अपन बालपनेमे देखौने रहथिन आ दोसर ओ विराट रूप जे महाज्ञानी-महापण्डितक संग दुर्योधनक दरबारमे देखौने छेलैथ, दुनूक बीचक जे हजारो योजनक दूरी अछि तइ दलदलमे धरणीधर फँसि गेला।

ओना, अनजान सुनजान महाकल्याण सेहो होइते अछि मुदा ओ जीवन-मृत्युक बीचक बाट छी किने तँए, थोड़ेक कठिन, थोड़ेक उकड़ू आ थोड़ेक भारीक संग जबदाहो अछिए। गाम दिस उनैट कऽ जखन धरणीधर देखए लगला तँ बुझि पड़लैन जे नवतुरिया छौड़ा

[17] सोचन क्रिया

सभसँ जँ किछु बुझए चाहब आ पुछबै तँ ओकरा बकछुहुल लगतै। तेकर कारणो अछि। आजुक जे नवसृजन भऽ रहल अछि ओ ठीक विपरीत दिशामे अछि, जइसँ ओ लगले कहत जे फल्लाँ गुरुआइ करए चाहैए। ओना, एकर दोसरो पक्ष अछि, जँ अहाँ परिवारसँ समाज धरिक बच्चाक बीच बालपन रूपमे रमि किछु पुछबै तँ ओ एहनो बहुत बात सोझामे रखि दइए जेकर नाँगैर पकैड़ अहाँ नेंगरियबैत ओकर मुँह धरिक परिचय पेब सकै छी। ओना, उम्रक कारणे वा उदित ज्ञानक कारणे धरणीधर ने आगू सोझ[18] बाट देखि रहल छला आ ने मनविचार पाछू सहैट रहल छेलैन। हराएल-भोथियाएल बाटपर ठाढ़ बटोही जकाँ धरणीधर चारू दिस चकोना भऽ भऽ देखए लगला। मुदा केम्हर मुहेँ बढ़ब से निश्चय कइये ने पाबि रहला अछि। ओना, धरणीधरक मनक बीच स्पष्ट रूपमे विचार जगि चुकल छेलैन जे जहिना कोनो भूमिक[19] लेल मनुक्खक खगता अछि तहिना मनुक्खोक लेल भूमिक खगता सेहो अछिए। ओना, खाली मनुक्खे मात्रकेँ नहि, आनो-आनो जीव-जन्तुक लेल भूमिक खगता अछिए। मुदा ओकरा ने चिन्तन शक्ति छै आ ने सोचन क्रिया...।

इतिहासक विद्यार्थी रहने धरणीधरकेँ एतेक तँ मनमे छैन्हे जे केना-केना राज-पाटक छीना-झपटी दुनियाँमे होइत आबि रहल अछि आ कोन-कोन रूप[20]क देश दुनियाँमे बनल-बसल अछि। मुदा किए अछि आ किए भेल से बुझिये ने पेब रहल छला। खाएर.., अन्वेषी मन धरणीधरक बनियेँ गेल छेलैन तँए देखल संग मन किछु दूर बिनु-देखलोक आगू दिस दौड़िये जाइ छेलैन। मुदा जेतएसँ सुनसान बुझि पड़ैन तेतए-सँ घुमि जाइ छला। आगू दिस जखन

[18] स्पष्ट

[19] जन्मभूमिसँ लऽ कऽ बासभूमि माने देशक

[20] भौगौलिक

नजैर उठैन तँ देखि पड़ैन जे दुनियाँक जननिहार विशेषज्ञ रहितो अपन गाम-घरक इतिहास जनिते ने छी। ओना, एहेन दुर्भाग्य मिथिलावासीकेँ शुरूहेसँ रहलैन जे अध्यात्मिक रूपमे मिथिलाक परिचय भेलैन मुदा वैज्ञानिक रूपमे नहि भेलैन अछि जइसँ ज्ञान रहितो सज्ञानसँ दूर छथिए। किएक तँ ज्ञानक पाछू विज्ञान अबैए आ विज्ञानक पाछू सज्ञान अबैए...। लगले मन पिघैल कऽ मोमबत भऽ गेलैन। मोमबत होइते धरणीधरक मन बिचड़ए लगलैन- अखन तक विद्यार्थीक जिनगी रहल, एक अध्येताक रूपमे गुजैर रहल छी, जँ केतौ प्रोफेसर भेल रहितौं तखन किछु पदक मदो रहैत मुदा से तँ अछि नहि। किए ने अपन गामेक बुढ़-पुरानसँ अपन गामक इतिहासक पता लगाबी। ज्ञाने तँ एहेन गुण छी जे केकरोसँ कियो छिपबैत नहि अछि। ई दीगर भेल जे ज्ञानोमे क्षलज्ञान कहियौ आकि चोरज्ञान आकि बलज्ञान सेहो अछिए जे एक-दोसरकेँ छलितो अछि, चोरोबितो अछि आ छीनतो अछिए। मुदा जैठाम तीनू संगे अछि, तैठाम तँ थोड़ेक भरिगर भइये जाइए। अन्वेशी सोभाव रहने धरणीधरकेँ निर्णय करैमे सिर-संकोच नहि होइन। निर्णय कऽ लेला जे गाममे ने कियो दोस छैथ आ ने दुश्मन, सभ गौंआँ भेला तँए किनको ऐठाम जा कऽ पुछब (बुझब) सँ हिचकब नहि। सभठाम जाएब आ सभसँ गामक पुरान गति-विधिसँ लऽ कऽ आजुक गति-विधि तक जानैक कोशिश करब। जेतेक भेटत तेतेक अपन अनुसंधान भेल जे नहि भेटत ओ ऐगला पीढ़ी-ले रहत।

दोसर दिन धरणीधर गामक जे सभसँ बुढ़ बड़गद बाबा छला तिनका ऐठाम पहुँचला। बड़गद बाबा एक जोड़ बकरी लऽ कऽ चरबैत रहैथ। अपने बड़क गाछक निच्चाँक छाहैरमे बैसल आ बकरी बाधमे चरैत रहैन।

धरणीधर पहुँचते बजला- “बाबा, अहींसँ किछु बुझैक

अछि?”

ओना, पहिने बकरी चरबाह बड़गद बाबाकेँ अनसोंहाँत लगलैन जे हमरा सन बुड़िवानसँ एकटा नवजुगक बुधियार लोक की पुछत..! मुदा अपन उमेरक लेहाज करैत बड़गद बाबा बजला-

“बाउ, बकरी चरवाह सन लोककेँ बुइधिक ओकाइतिये केते रहै छै जे किछु पुछब, मुदा जएह रहै छै ओइसँ जँ दोसरकेँ उपकार हएत तँ ऐसँ पैघ कीर्तिये की हएत आ दाने की हएत।”

धरणीधर बजला-

“बाबा, अहाँ तँ अस्सी बर्खसँ ऊपर चढ़ि गेल छी, तँए अस्सी बर्खक दिन-रातिक घटना तँ गामक देखल-सुनल अछिए।”

बड़गद बाबा बजला-

“बौआ, जेते देखलौं आ जेते गुणलौं ओते जँ मन रखितौं से ओहन चौरगर बुइधिक बखारी थोड़े अछि। मुदा तैयो नइ सोलह अना तँ सोलह पाइयो बरबैर नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।”

धरणीधर-

“आब तँ उमेरक हिसाबसँ ऐसँ भारी, माने बकरी चरवाहिसँ भारी काजो नहियेँ कएल हएत, तखन तँ जीवन-ले किछु करब आवश्यक अछिए।”

धरणीधरक विचारमे जेना बड़गद बाबाकेँ अमृत भेट गेल होनि तहिना मन तिरपित[21] भेलैन। बिहुसैत बजला-

“बौआ, अहाँ नव पीढ़ीक लोक छी, अखन दुनियाँमे पएरे रखलौं अछि, नीक जकाँ भरिसक रोपाएलो हएत कि नहि से तँ

---

[21] तृप्ति

हमरा नइ बुझल अछि।”

बड़गद बाबाक विचारमे धरणीधरकेँ की भेटलैन से तँ असल धरणीधरे बुझता, मुदा मुँहक रोहानी कहए लगलैन जे जेना सजमनिक सिर भेट गेल होइन। लंकामे राम-रावणक लड़ाइमे मेघनादक वाणे जखन लक्ष्मण मुरछेला तखन जीबैक लेल मात्र सिर सजमनियेक खगता पड़ल रहैन, जे हनुमान सुमेर पर्वत उठा कऽ आनि पुरौलकैन। पएर रोपैक बात सुनि धरणीधर बजला-

“बाबा, पएर रोपैसँ पहिने जगह-जमीन चाही किने आ तेकरो पहिने चीन्हब तखन ने ओइपर अजमा कऽ पएर रोपब।”

ओना, धरणीधर जइ रूपेँ बुझए चाहै छला तइ रूपेँ तँ बड़गद बाबा नइ बुझा सकै छेलैन, मुदा एते तँ मनुक्खक सोभावमे रहिते अछि जे दस-पाँच छोड़ि सैंकड़ामे नबे-पनचानबेटा ओहन लोक तँ छथिए जे प्रश्न बुझैथ वा नइ बुझैथ मुदा किछु-ने-किछु जवाब देबे करता, भलेँ ओ प्रश्नक उत्तर होउ वा नइ होउ, प्रश्नसँ मेल खाउ वा नइ खाउ...। मुदा एते तँ धरणीधरक अन्वेशी सोभाव मानियेँ गेल छेलैन जे जँ कोनो विचारक छाहोँ-छूँह देखि लेब तँ ओइसँ अनुमान कइये सकै छी जे पहाड़क छाँह छी आकि गाछ-बिरीछक, तँए धरणीधरक मन प्रमुदित भइये गेल छेलैन।

बड़गद बाबा बजला- “बौआ, आइ दस बर्खसँ बकरी चरवाहि करै छी जइसँ दुनू परानीक दुनू साँझक बुतातक जोगार भऽ जाइए। ओना, बेटा-पुतोहु सेहो अछि मुदा ओकरा तँ अपने तेतेक डारि-पात भऽ गेल छै जे दिन-राति हेरान रहैए। बाल-बच्चा अवोध छै, ओ कियाँने गेल जे उपार्जन केकरा कहै छै आ एकर की खगता लोककेँ छै, मुदा हमर तँ धाँगल जिनगी अछि तँए बातकेँ बुझै छी।”

बड़गद बाबाक कर्मठता सुनि धरणीधर बजला- “बाबा, ईहो

तँ लोक कहै छै जे 'बड़ रे बालक एक समाना' माने जहिना बच्चा तहिना वृद्ध दुनू एके रंग भेला।"

बड़गद बाबा बजला-

"बाउ, एके मुहेँ लोक केकरो गारियो पढ़ैए आ केकरो आसिरवचन सेहो दइए, मुदा दुनू एक थोड़े भेल। बच्चा जिनगी (मनुक्खक) पूर्व पक्ष भेल, वृद्ध उत्तर पक्ष भेल, तँए दुनूकेँ एक थोड़े मानल जा सकैए।"

धरणीधर बजला- "बाबा, बकरी चरवाहिसँ पहिने की करै छेलिऐ?"

मुस्की दैत बड़गद बाबा बजला-

"महराइ गबै छेलौं। भरि-भरि राति अपने ढोलको बजबी आ महराइयसँ लोककेँ जगेबो करिऐ, मुदा गाम दिस जखन नजैर उठा तकै छी तँ अपनासँ पुरान[22] कहाँ केकरो देखै छिऐ। अखन जेतेक लोक गाममे अछि, ओकर जनम हमरा आगूमे भेल छइ।"

धरणीधर बजला-

"अपन मन केहेन कहैए?"

बड़गद बाबा- "मन की कहत, जिनगी जीबैमे कहियो अभाव भेल जे मन किछु कहत आकि उपराग देत। उपरागक भागी तँ ओ अछि जे परजीवी अछि, वा जे अनका भरोसे जीबैए।"

बड़गद बाबाक बात सुनि धरणीधरकेँ जेना मन प्रस्फुटित भऽ गेलैन तहिना सोलहन्नी मुस्कान दैत बजला- "वाह!"

'वाह' सुनि बड़गद बाबा फुटि पड़ला-

"गामक माटि-पानिक उदय-प्रलय केना भेल आ केना होइए,

[22] उमेरक हिसाबसँ, उमेरगर

गामक उदय-प्रलय केना होइए, मनुक्खक उदय-प्रलय केना भेल आ केना भऽ रहल अछि। तहिना दुनियोँक उदय-प्रलय केहेन अछि आ केहेन हएत, एते बात बुझैक ने खगता अछि वाउ आ ने बुझिये पएब। तखन तँ..?”

धरणीधरक मन जेना भरि गेल होनि तहिना बजला-

“बाबा, चाह पीबैक बेर भऽ गेल अछि, अखन जाइ छी।”

बड़गद बाबा-

“बाउ, नव पीढ़ीक कर्ता-धर्ता अहीं सभ छी, हमरो सभपर धियान राखब।”

❑

शब्द संख्या : 1574, तिथि : 15 जुलाई 2018

हमरा नीक नहि लगैए

दिल्लीसँ एना रामरतन तीनू परानीकेँ माने रामरतन अपने, पत्नी- गुलाब आ पुत्र- परमेसर आइ सात दिन भेलैन अछि। एक दिन तँ ट्रेनक थकान मेटबैमे बीति गेलैन, तँए ने रामरतन किछु देखि पेला आ ने बुझि पेला। मुदा आइ छह दिनसँ माता-पिता सहित पत्नीक लीला देखियो रहल छैथ आ विचारियो रहल छैथ मुदा बाजि किछु ने रहल छैथ। एगारह बजे दिनमे खाइले बैसला तखन पचीस बर्खक पत्नीकेँ देखलैन जे घरक चौकीपर पड़ल-पड़ल भारत-इंग्लैंडक बीच मैच देखि रहल छैथ आ पचपन बर्खक माए ओसारपर पीढ़ी बैसा, लोटामे पानि रखि घरमे भोजनक थारी परोसि रहल छैथ...।

गुम्म भेल पीढ़ीपर बैसल रामरतन मने-मन विचारि रहल छला जे एकरा की कहबै, नीक कहबै आकि अधला कहबै? तही बीच थारी नेने सुनयना आबि बेटाक आगूमे रखि ऐ आशामे ठाढ़ भेली जे थारीक वस्तु देखि बेटा किछु बजबो करैए आकि शान्तचित्त खाइए। थारीक भोज्य-पदार्थपर रामरतनक मन नहि पहुँच अपन पत्नीक लीला देखि तरैस रहैन छेलैन। बेर-बेर मनमे चकभौर उठि रहल छेलैन जे ई केहेन भेल! कहाँ धरि एकरा उचित कहल जा सकैए? पचीस बर्खक लोक ओछाइन धेने रहए आ पचपन बर्खक अधवेशू दौड़-दौड़ काज करए! रामरतनक मन ठमैक गेलैन। किएक तँ भोजन करैसँ पहिने जँ कोनो बिगड़ल बात मुहसँ निकालब तँ हो-न-

हो ओ बात मोनि फोड़ैत धार जकाँ बहए ने लगए। जखने फुटल मनक धार बहत तखने भोजन गड़गट भऽ जाएत। गरगट भेने समुचित रूपमे ने भोजन क्रियान्वित हएत आ ने मनेक तृप्ति भऽ सकत। मुदा लगले रामरतनक मनमे ईहो उठए लगलैन जे अनुचितकेँ सोझमे देखि चुपचाप रहबोकेँ तँ नीक नहियेँ छी। मुदा नीक केनिहार लग अधला केनिहारक पर पीतो केना फेकल जाए। जखने पीताएल मनक पीत फेकब तँ ओकरा पड़बे ने करत। तोहूमे घरक चौकीपर पत्नी पड़ल छैथ। जखने किछु बोल मुहसँ निकलए लगत कि आरो केबाड़ सरका लेती जे माए-बेटाक बीचक बात छी, ऐमे पुतोहुकेँ कान झाँपि लेबा चाही...।

असमनजसमे विचारैत रामरतन बजला-

“माए, हमरा ई नीक नइ लगैए।”

रामरतनक बजैक क्रम पत्नीक क्रिया दिस रहैन जे सुनयना नइ बुझि पेली। हिनकर नजैर थारीमे परोसल भोज्य-वस्तुपर अँटकल रहैन। तैबीच ‘हमरा ई नीक नहि लगैए’ सुनि माए बजली-

“बौआ, अपन घरक अन-तीमन केतबो अधला हएत तँ अनका घरसँ नीके हएत।”

माइयक बात सुनि रामरतनक मनमे उठलैन जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ गेल, गोला फकलौं पाकल आमपर आ चलि गेल बगुरपर जे तोड़ि अनलक बगुरक काँट! मनकेँ मारि रामरतन भोजनक बाद तीनू गोरेकेँ एकठाम बैसा अपन बात रखैक विचारमे आगूमे आएल विचारकेँ चौपैत रखि बजला-

“माए, अपन गाम-घरक जे अन-तीमन अछि ओ परदेशक थोड़े हएत। केहेन बढ़ियाँ तरकारीमे बाड़ीक हरदीक रंग रन-रन करैए। शहर-बजारमे ते कँचका ईटाक गरदीमे रंग मिला हरदी

बनबैए आ मिरचाइक जगह एसिडमे लोक मिरचाइक गुण तकैए।"

रामरतनक विचारक मोड़ सुनयना नहि बुझि पेली, मुदा अन-तीमनक प्रशंसा तँ सुनबे केली तँए मुस्कियाइत बजली-

"बौआ, हम सभ गाम-घरमे रहैबला छी, मारि-घुसि कऽ एक बेर दिनमे आ एकबेर रातिमे खाइ छी। मुदा तूँ सभ ते शहरूआ-बजरूआ भेलह, दस बेर चाहो पीबैत हेबह आ दस बेर नस्तो-पान तँ करिते हेबह। तँए कम्मे-कम्मे वौस छह, जे किछु घटह से कहिहह।"

बलाएकेँ टारैत रामरतन बजला-

"कोनो आनठाम छी जे खाइमे लाज-धाक हएत। जे घटत से माँगि लेब।"

परिवारक काजमे रमल-समल सुनयना किए बात-चीतमे ओझरैतैथ तँए ऐठामसँ ससैर गेली। ओना, काज दिस तँ सुनयना ससैर गेली मुदा कानकेँ कनसोहक बेटापर जगौने रहली। यएह ने भेल सजगता। अहीले ने दुनियाँ हेरान अछि।

रामरतनकेँ भोजनक अप्पन अन्दाज छैन जे कोन समैक भोजन केते मात्रामे करी, ई अन्दाज रामरतनकेँ विद्यार्थीए जीवनसँ रहल छैन। ओना, अपना मिथिलांचलमे एहेन अन्दाज पबैमे थोड़ेक असुविधा जरूर अछि, मुदा से अछि सामुहिक भोज आ अनठामक भोजनमे। किएक तँ शुरूक परोसमे पहिने ओतबे भोज्य-वस्तु परोसल जाइए जइसँ भोजनक शुरूआत हुअए आ पछाइत एका-एकी दर्जनो विन्यास परोसल जाइए। मुदा परिवारमे तँ निमाहले जा सकैए, जैठाम प्रतिदिनक भोजन होइए। रामरतन ईहो अन्दाजि लेलैन जे उचित मात्रामे परोसल गेल अछि। उचित मात्राक अन्दाज रहने रामरतन रसे-रसे भोजनो करए लगला आ रसे-रसे पत्नी आ माइक लीला सेहो देखए लगला। ओना, सुनयना सजग छैथ तँए

दोसर काज करितो बेटाक भोजनपर सेहो सजग छेली, तँए कनी हटल रहनौं बीच-बीचमे बजै छेली-

“बौआ, हम केतौ अनतए नइ छी, तूँ असथिरसँ खाह।”

ओना, माइक बात रामरतन अधसुन सुनै छला किएक तँ अपने भोजनो जे करै छला तहूपर धियान नइ छेलैन। धियान छेलैन पत्नी आ माइक लीलापर। जखन पत्नी आ माइकेँ फुटा-फुटा देखए लगला तखन पहिल नजैर माएपर गेलैन। माएपर नजैर उठिते रामरतनक मनमे उठलैन जे जहिना माए सदिकाल परिवारक काजमे सटल चलि रहल छैथ तहिना पितो तँ छथिए, तैबीच मोटा-मोटी अपनो सएह छी। मुदा तैबीचमे पत्नीक बेवहार एहेन किए बेदरंग[23] छैन? जखन कि सियान ओहो भऽ गेली तखन सियनपन कहिया औतैन?

लगले रामरतनक मन छिटैक पारिवारिक बनाबटपर गेलैन। जइ तरहक अखन अपन परिवारक बनाबट भऽ गेल अछि तइ अनुकूल तँ ओहो ठीके-ठाक छैथ, मुदा..?

‘मुदा’ लग आबि रामरतनक विचार चकभौर लेलकैन। चकभौर लइते विचार छिटकलैन जे दिल्लीक लेल भलेँ पत्नी ठीक छैथ मुदा गाम लेल केना ठीक कहल जाए? पहाड़सँ गिरैत जलधार समतल जमीन होइत समुद्रमे विलीन होइए मुदा मनुक्खक जिनगीमे किए एकर अभाव भऽ जाइए? जरूर केतौ-ने-केतौ विषम कारण अछि। ई बात सत् जे मनुक्खक शरीर जलधार जकाँ नहि अछि, मुदा मनुक्खक ज्ञान-शक्ति तँ जलधारोसँ जलधार अछि माने पानियोँसँ पातर अछि, तखन ओ किए ने सर्व-हिताइ भऽ पबैए? विचारकेँ समेट उसारि रामरतन भोजन केलैन। भोजन केलाक

[23] बेदराक रंग माने बालपन-रंग

पछाइत जखन ओछाइनपर आराम करए गेला तखन पत्नीक विचार पुन: जगि गेलैन। ओना, दिनमे सुतैक अभ्यास रामरतनकेँ नहि छैन मुदा विचारमे थाकल मन सुतैले मजबूर केलकैन। विचारमे उलझल मनकेँ ओछाइने धरब नीक होइतो अछि। किएक तँ काजक दौड़मे अधला होइक सम्भावना भइये जाइए, तीनकेँ तेरह आ तेरहकेँ तीनक परेखक बीच मन फँसि जाइए।

ओछाइनपर रामरतनक देह तँ पड़ि रहलैन मुदा मन माता-पितासँ पति-पत्नीक संग परिवारमे दौड़ गेलैन। दौड़ते उठलैन- दुनू बेकती माने पति-पत्नी, परिवारक ऐगला सृजक तँ छीहे। तैठाम जँ पैछला पीढ़ीक गुण-धर्मकेँ अङेज नहि लेब, तखन विषम परिस्थितिकेँ सम केना बनाएब? एक दिस भविस अछि तँ दोसर दिस भूतो तँ अछिए, तैबीच तँ अपने सभ ने वर्तमान भेलिऐ।

पत्नीक परिवारपर नजैर पहुँचते रामरतनक मन दुनू परिवारक भूत, वर्तमान आ भविसक क्रिया-कलापपर गेलैन। अपन किसान परिवार रहल अछि आ पत्नीक पिता नोकरी करै छैथ जइसँ हुनकर परिवार नोकरिहाराक रूप पकैड़ नेने अछि, जेकर उपज पत्नी छैथ...।

ऐठाम आबि रामरतनक विचारमे सिकुड़न तँ एबे केलैन जे तैसंग फैलाव सेहो एलैन। परिवार छोड़ि गामसँ निकललौं। जहिना पिताक अनुकरण–मरदा-मरदी, काजक–अपने करितौं तहिना माइक अनुकरण तँ पत्नियो करबे करितैथ। मुदा से भेल नहि। लगले रामरतनक मनमे दुनू परिवारक माने नोकरिहाराक आ गामक किसान परिवारक सिकुड़न-फैलावक बीच फँसि गेलैन। मनमे उठलैन- धारक बीच जहिना पानिक घुमाव होइए तहिना तँ पारिवारिक काजक बीच सेहो मनक घुमाव होइते अछि। घुमावो केना ने हएत? गामक परिवारमे अनेको दिशा अछि। बेकतीसँ लऽ

कऽ परिवार होइत समाज धरि। जइमे परिवारजन अपन समय आ क्षमताक अनुकूल अपनाकेँ पीरो लइए, मुदा नोकरिहाराक तँ से नहि अछि। ओ तँ नोकरीक अनुकूल अपन समय आ शक्तिकेँ ओइ अनुकूल बना लइए। तहूमे नोकरीक काजक बान्हल समय अछि। ओना, कहैले बान्हले अछि मुदा ओ बान्हल-खुजल दुनू अछि। सरकारी काम-काजक संग कारखानाक काज आठ घन्टा बान्हल अछि मुदा कारखानोमे ओभर टाइम आ बिनु कारखानोक परिवार वा अन्य अनेको तरहक काज एहनो तँ अछिए जे नोकरीदाताक अनुकूल करए पड़ैए...।

रामरतन जेतेक विचारक तहमे जाइ छला तेते मनमे ओझरौठ बढ़ल जाइ छेलैन। मुदा मनमे पत्नीक प्रति जे भरास उपैक गेल छेलैन ओ पूर्ववते छेलैन। कछमछ करैत रामरतन घन्टा भरिक पछाइत ओछाइन छोड़ि मुँह-कान धोइते छला कि मनमे उठलैन-पत्नी आ माइकेँ एकठाम बैसा गप-सप्प करब नीक नहि हएत। किएक तँ जहिना गुलाबक संग अपन पतिक रूपक सम्बन्ध अछि तहिना माइयोकेँ ते सासु-पुतोहुक सम्बन्ध छैन्हे। तैसंग दुनू माय-पुतक विचारो तँ निर्णित नहियेँ अछि जे एक राय बना बाजब। जइसँ विचारमे भिन्नता एबाक सम्भावना अछि। जँ हम कोनो विचार पत्नीकेँ अनुकरणीय रूप कहबैन आ माइक जँ अनुकरणीयपर सँ धियान हटि अपन बेटा-पुतोहुक सुख-भोग दिस बढ़ि जाइन तखन तँ अनेरे दुनू गोरेक विचारोमे द्वन्द्व शुरू भऽ जाएत, जइसँ जे मनमे अछि, से नहियेँ हएत। तँए नीक हएत जे माएकेँ छोड़ि पत्नियेकेँ किए ने चेतौनी रूपमे कहिऐन...।

रामरतनक मनक विचारमे थीरपन एलैन। तही बीच गुलाब सेहो चाह नेने पहुँचली।

चाह देखि रामरतनक मनमे उठलैन जे बिनु चाह पीने जँ गप-

सप्प चला देब तँ हो-न-हो क्रोधमे चाहे पीब गड़गट भऽ जाए। तइसँ नीक जे पहिने दू घोंट चाहे पीब ली। चाह पीब रामरतन बजला-

“अहाँ तँ बुझै छी जे परिवार अपन छी, परिवारक सभ कियो अपने छैथ, तैबीच अधबेसू माए जे दौग-दौग काज करै छैथ आ अहाँ बिजली-पंखा तर बैस टी.बी.मे भारत-इंग्लैंडक मैच देखै छी, ई केहेन विचार भेल?”

ओना, अखन तक रामरतनकेँ पत्नीक परख नीक जकाँ नहि आएल छेलैन जे कोन रूपक जीवन-संगिनी छैथ। पति-पत्नीक बीचक जे आजुक परिवेश बनि गेल अछि ओ बहुआयामी बनि गेल अछि, जइसँ किछु-ने-किछु सभ प्रभावित भइये रहल छैथ। मुदा आयामोक तँ अपन ज्वाला होइते छइ।

जहिना रामरतन पत्नीपर शब्द-वाण फेकलैन तहिना गुलाबो शब्द-वाणकेँ रोकैत बजली-

“गाम एलौं हेँ माता-पिताक ऐठाम पहुनाइ करए आकि..?”

पत्नीक विचार सुनि रामरतनक मन क्रोधसँ भभैक उठलैन। बजला-

“अपना जे बुझि पड़ए मुदा हमरा नीक नइ लगैए।”

❑

शब्द संख्या : 1458, तिथि : 19 जुलाई 2018

भारीपन भार बनि गेल

जिनगीक आधा उमेर[24] बीतला पछाइत पचास बर्खक चेतनाननकेँ अपन चेतन-शक्ति बदैल गेलैन। चेतन शक्ति बदलने सोचनो-शक्ति आ क्रियो-शक्ति बदैल गेलैन। जइसँ चेतनानन अपने-आपमे समाहित भऽ गेला।

जेठ मासक बेरुका तीन बजेक समय, दरबज्जापर बैसल चेतनाननक मन अपन जिनगीक समीक्षा करए लगलैन। समीक्षाक दौड़मे विचार फुटलैन- “भारीपन भार बनि गेल..!”

चेतनाननक मनसँ फुटि कऽ विचार बहरेबे कएल छेलैन कि पत्नी- बुधिवादिनी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। ओना, सभ दिनक चाह पीबैक अभ्यास चेतनाननकेँ सभ रंगक छैन। माने गरमी मासमे तीन बजे, मध्यमास– आसिन-कातिक आ फागुन–मे अढ़ाइ बजे आ जाड़क मासमे दू बजे बेरुका चाह पीब चेतनानन दोसर उखड़ाहक काजमे लगै छैथ। अभ्यासक हिसाबसँ चाह पीबैक इच्छा समयपर जगिते छेलैन मुदा चाह पीबैसँ पहिने जे बदलल जिनगीक विचारक मथन मनमे उठि गेल छेलैन तइसँ चेतनाननक मन थोड़ेक ओझरा गेल रहैन। माने, चाह पीबैक जेतेक इच्छा आन दिन रहै छेलैन तइमे आइ थोड़ेक कमी आबि गेल छेलैन। चाह पीबैक इच्छा कमने पत्नीसँ गप करैक इच्छा सेहो कमि गेल छेलैन जइसँ आगूमे ठाढ़ पत्नीपर एक नजैर खिरा चुपचाप चाहक गिलास देखए लगला।

[24] साए बर्खक आधारपर

ओना, अपन बुइधिक ओकातिये बुधिवादिनीक मनमे विचार जगि गेल छेलैन जे भरिसक पति कोनो चिन्तामे पड़ि गेल छैथ तँए जेहेन मन उछटगर हेबा चाही से नहि छैन। फेर भेलैन जे किए ने पुछिये लिऐन जे मन खसल देखै छी। मुदा फेर भेलैन जे खसलो मनक (गम्भीर रूपमे) तँ अपन-अपन दिशा होइते अछि। माने ई जे एक खसब भेल जे कोनो संकटकेँ दूर करैले ओकर समधानल रस्ता खोजैमे खसैए आ दोसर होइए जे नीक जिनगी पेबा-ले भविसक बाट समधानि कऽ खोजबमे सेहो मन खसबे करैए। लगले बुधिवादिनीकेँ भेलैन जे जखन किछु बाजि नहि रहल छैथ तखन अनेरे मधुमाछी-छत्तामे गोला मारि कटाएब नीक नहि। तँए, अपन जे अखुनका काज अछि पहिने तेकरा मुसताजिसँ कऽ ली। जँ कोनो दुखो-तकलीफ मनमे हेतैन तँ एक्केबेर बिढ़नी जकाँ थोड़े हनहना उठता...।

चाहक गिलास चेतनाननक आगूमे रखि बुधिवादिनी पान आनए आँगन विदा भेली। जे काज चेतनाननकेँ सेहो सभ दिनक बुझले छैन।

चाह-पान पीला-खेला पछाइत जहिना चेतनानन अपन जीबनपट खोलए अपन विचारधारा दिस विदा भेला तहिना बुधिवादिनी सेहो अपन जीवनघट पार करए अपना घाट दिस विदा भेली। समुन्नत परिवारक जे घट-घटवारि होइए ओ जहिना चेतनाननकेँ बुझल छैन तहिना बुधिवादिनीकेँ सेहो बुझले छैन। ओ बुझब भेल जे परिवारक सभ जनकेँ अपन-अपन शक्तिक अनुकूल परिवारक क्रिया-कलापमे लागल रहब। जहिना कोनो घरमे अपन-अपन जगहपर वस्तु-जात सैंत कऽ राखल रहैए जइसँ एक-दोसरमे टकराइक सम्भावना नइ रहै छै, तहिना परिवारमे मनुक्खोक अछिए। जे किछु दिन पूर्व तक चेतनाननक परिवारमे नइ छेलैन मुदा आब से

बात नइ रहलैन। आब परिवारक सभ कियो अपन-अपन पारिवारिक दायित्व बुझि रहल छैन जइसँ एक-दोसराक बीच अढ़बै-चढ़बैक रस्ता बन्न भऽ गेलैन।

ओना, बुधिवादिनी अँगनाक काज दिस विदा भऽ गेली मुदा पतिक खसल चेहराक रूप देखि मनमे विचार जगिये गेल छेलैन जे मन किए मलिन छैन? अर्द्धांगिनी होइक नाते दुनियाँमे जँ कियो लग[25] छैन तँ ओ हमहीं ने छिऐन। जाधैर हमर सम्बन्ध नहि बनल छल, माता-पिता जीबैत रहथिन ताधैर ओ दुनू गोरे छेलैन, मुदा हुनका दुनूक परोछ भेने आ हमरा एने तँ सम्बन्धमे बदलाव एबे कएल। मुदा जखन मनमे कोनो तरहक पारिवारिक उलझन आबि गेल होनि तखन जँ हमरा किछु नहि कहि मने-मन बेथित बनल रहता सेहो तँ नीक नहियेँ भेल। विचार अबिते बुधिवादिनीक मनमे दोसर विचार टपैक पड़लैन। ओ टपकलैन ई जे जँ पारिवारिक उलझन नहियेँ रहल होनि, सामाजिक वा बेकतीगते कोनो रहल होनि, तखन जँ किछु नहियेँ कहलैन तँ ओ उचिते केलैन।

उचित अनुचितक बीच बुधिवादिनीक विचार समुचित होइते अपन काजमे लगि गेली।

पत्नीकेँ लगसँ हटिते चेतनाननक मनक जेना नि:साँस छुटलैन। नि:साँस छुटिते मनमे उपकलैन जे भने पत्नी लगसँ हटि गेली। लगमे रहितैथ तँ विचारमे बाधा उपस्थित करितैथ।

एकान्त होइते चेतनाननक मन साकांच भऽ सजगलैन। सजगिते अपन बीतल जिनगीपर नजैर निछोह दौड़लैन। की जीवन छल, की सोच-विचार छल आ आइ[26] की अछि? आब तँ सोझ

---

[25] नजदीक

[26] पचास बर्खक पछातिक

जीवन देखि रहल छी जे दुनियाँमे जेतेक मनुक्ख छैथ ओ सभ ने चाहि रहला अछि जे सोझ जीवन भेटए। मुदा सोझ जीवन-ले सोझ ज्ञानक खगता अछि किने, जेकर प्राप्ति भेला पछातिये ने कियो सुखसँ सुखी बनैत आ अपन स्वतंत्र रूपमे शासनसूत्र अपनबैत जिनगीक धारमे बहए लगैए। ऐठाम शासनसूत्रक माने भेल, जिनका किनको जिनगीमे सफलता भेटल छैन हुनका मनमे ईहो तँ जगिये जाइ छैन जे असफल जिनगी जीनिहारकेँ सही दिशा देखबैत सही बाटपर आनि, कखनो आगूसँ बाँहि पकैड़ आगू मुहेँक विचारक बाट धराबी तँ कखनो खच्चा-खुच्चीमे लसकैत देखि पाछूसँ बल लगा आगू मुहेँ ठेलैक परियास सेहो करी। जइसँ जे विचार सूत्र बनैए वएह भेल शासनसूत्र। जखने मनुक्खक जिनगीमे प्रकाशित मन स्वतंत्र बाटक शासनसूत्र पकैड़ चलए लगैए तखने ओ सफल जिनगीक आनन्दसँ आनन्दित सेहो हेबे करैए। जे चेतनाननकेँ आधा जिनगी बितला पछाइत भेलैन। मुदा आधा जिनगी जे बितल छेलैन ओ सोल्होअना उनटल छेलैन जेकर पछाड़सँ अखनो पछड़िये रहला अछि। अखन धरि जे समाजक बीच मनुक्खक निर्माण भऽ रहल अछि ओ सामाजिक बेवस्थाक अनुकूल भऽ रहल अछि जइमे शासन बेवस्थाक भरपूर प्रभाव सेहो पड़िते अछि। खाएर जे अछि मुदा ई तँ हर जीवनमे अछिए जे परिवारसँ समाज धरि अपन भारीपन (गुरुआइ वा गुरुत्व) बनल रहए। जे चेतनाननकेँ सेहो छेलैन्हे।

कौलेज तकक पढ़ाइ छोड़ला पछाइत चेतनानन स्वतंत्र जिनगी धारण करैक खियालसँ नोकरी दिस नहि तकलैन। ओना, अपनो पारिवारिक सम्पैत ओतेक छेलैन्हे जे एक परिवारक जीवन-यापनक कोन बात जे तीनियोँ-चारि परिवारक जीवन-यापन भइये सकैत छल, जँ समुचित ढंगसँ समुचित श्रमक उपयोग करितैथ, मुदा

सामाजिको परिवेश तँ परिवेश छीहे। एके-दुइये चेतनानन समाजक बीच सेवाक रूपमे बिआह-दान, श्राद्ध-मुड़नक संग पूजा-पाठमे आगू बढ़ए लगला। जइसँ किछु-किछु समाजक बीच जन-मतो आ जन-संघो बनियेँ गेल छेलैन। जखने जनमत, जनसंघ बनत तखने राजसत्ताक शिकारी सभ अपना-अपनीकेँ हथियाबए चाहिते अछि। शुरूहमे तँ चेतनानन अबूझ-अबोध जकाँ छला, तँए एक्के पक्षक बीच पहुँचला मुदा कनी आँखि-पाँखि भेने आब दोसरो-तेसरोसँ सम्बन्ध बनबए लगला अछि। जइसँ भीतरे-भीतर भलेँ बहुरूपिया बनि रहल होथि मुदा ऊपरसँ (देखौआ) तँ समाजक अगुआएल लोक भइये गेला किने। जँए अगुएला तँए सबहक बीच पूछ सेहो भेलैन। तहूमे मनुक्खक पूछ। ओना, जानवरक पूछ भलेँ माछी-मच्छड़ रोमैबला किए ने हुअए मुदा मनुक्खक पूछ तँ से नहियेँ छी, मनुक्खक पूछ तँ मनुक्खकेँ भरियेबे करैए। जखने मनुक्ख अपन भारीपन देखैए तखने ने अपन जिनगीक सफलताक भान ओकरा होइ छइ। जे पबिते मनुक्ख सुरसा (रामायणिक) जकाँ हनुमानसँ दोबर रूप अपन देखैबते अछि।

पचास बर्ख बितला पछाइत चेतनाननक विचारमे जहिना बदलाव एलैन तहिना सोचै-बुझैमे सेहो एलैन जइसँ जीवन पद्धति सेहो बदलिये रहल छेलैन।

ओना, चेतनानन गामक चौकपर साँझ-भोर चाह पीबैक बहन्ने सभ दिन जाइ छैथ जइसँ भरि दिनक गामसँ दुनियाँ तकक उड़न्ती समाचार साँझू पहरकेँ भेट जाइ छैन आ भरि रातिक समाचार भोरमे भेटिये जाइ छैन। समाचारकेँ समाचार जकाँ चेतनानन एकहरफी सुनि लइ छैथ मुदा ओइपर अपन कोनो टीका-टिप्पणी वा राय-विचार नइ दइ छथिन। तेकर कारण ई अछि जे ओ नीक जकाँ बुझए लगल छैथ जे जहिना रेडियो-अखबारक उड़न्ती समाचारकेँ आरो

उड़न्ती आ फुड़न्ती-सुड़न्तीकेँ आरो फुड़न्ती-सुड़न्ती समाचार बना बँटिते अछि। जइसँ ओकर असलियत रूप झँपाइये जाइ छै, तँए टीका-टिप्पणी मात्र बातकेँ बतंगर बनाएब छोड़ि आर किछु ने रहैए। मुदा समाजक धारासँ अपन मुहोँ बन्न कए राखब तँ उचित नहियेँ भेल। जेकरा पुड़बैले चेतनानन चौकक उड़न्ती समाचारक नाँगैर पकैड़ नेङड़ियबैत घटनाकेँ घटित बेकती लग पहुँच अपन विचार रखए लगला अछि।

आइ भोरमे जखन चेतनानन चौकपर पहुँचला कि एक गोरे चाहक गिलास आगू बढ़ा देलकैन। चाह देखि चेतनानन बुझि गेला जे भरिसक कोनो काजक भार ऊपर औत। मुदा बिनु कहने मानियोँ लेब तँ उचित नहियेँ हएत। चाहो पीबए लगला आ आँखि उठा-उठा ओकरोपर नचबौ लगला जे मुहसँ की निकलै छैन। आधा गिलास चाह जखन चेतनाननक ससैर कऽ पेटमे चलि गेलैन तखन राधारमण बाजल-

“चेतन भाय, अहाँसँ एकटा भारी काज अछि..!”

काज तँ काज भेल, मुदा ‘भारी काज’ की भेल? बिनु बुझने चेतनानन बजला-

“काज तँ काज भेल ओ भारी की हएत?”

राधारमणक मन मानि गेलैन जे काज हेबे करत। बाजल-

“भाय साहैब, इण्टरमे बेटा फेल भऽ गेल हेन, दिन-राति घरमे पेटकान लाधि कनैत रहैए, तीनियेँ दिनमे मरैमान भऽ गेल अछि ने किछु खाइए आ ने पीबैए। से कनी यूनिवर्सिटीक काज सल्टिया दिअ।”

चेतनानन-

“बच्चा पढ़ैमे केहेन अछि?”

राधारमण-

“हाइ स्कूलमे सब दिन फस्ट करैत रहल। मैट्रिकमे सेहो सत्तैर प्रतिशतसँ बेसीए नम्बर आएल छेलइ।”

राधारमणक बात सुनि चेतनानन बजला-

“अच्छा..!”

मदनानन सेहो चाहेक दोकानपर छल। चेतनाननक मुहसँ ‘अच्छा’ सुनि अपन नम्बर लगबैत बाजल-

“चेतन भाय, हाइ कोर्टक काज हमरो बजैर गेल अछि।”

चेतनानन पुछलखिन-

“की?”

मदनानन-

“दुनू भैयारीमे जमीनक विवाद अछि, डिस्ट्रिक कोर्टमे केस चलै छल, एकतरफा जजमेन्ट भऽ गेल, सैह...।”

गप्पक क्रममे चेतनानन ‘अच्छा’ तँ कहि देलखिन मुदा जखन चाहक दोकानसँ घरमुहाँ भेला तखन आइ धरिक जिनगी चेतनाननक नजैरपर नचलैन। अपन पैछला पचास सालक जिनगी ओहन दिशाहीन भऽ गेल जे टुटि-टुटि खसि-खसि ओतेक नीचाँ खसि पड़ल जे ओकरा सम्हारि कऽ आजुक सीमापर आनब कठिन भऽ गेल अछि। कहुना-कहुना अपन जिनगीकेँ समयक पटरीपर चढ़ा चलबए चाहै छी, सएह ने पार लगि रहल अछि। तैठाम अनकर काज सम्हारब तँ आरो जपाल भइये जाएत। अपना दिस जखन तकै छी तखन बुझि पड़ैए जे ओतेक अधला वृत्तियो आ विचारो अपना अपन जीवनक गाड़ी दौड़ेलौं जे नर्कक अट्ठाइसो भोगक अधिकारी बनि गेल छी, तेकरा पुराएब आ कि..?

घरपर पहुँचते चेतनाननक नजैर बुधिवादिनीपर पड़लैन। ओना, बुधिवादिनियोँ चेतनेननक रस्ता तकै छेली। नजैर पड़ि चेतनानन बजला-

“भारीपन भार बनि गेल अछि।”

अपने बोझक तर दबाएल पतिक बात सुनि बुधिवादिनी किछु ने बजली।

❑

शब्द संख्या : 1471, तिथि : 21 जुलाई 2018

मानसरोवर यात्रा

परिवारक सात भाँइक भैयारीमे वैज्ञानिक भाय–माने जीतनलाल भाय– जेठ छैथ, जे दिसम्बरमे सेवा निवृत्ति भऽ भाभा शोध संस्थानसँ गाम आबि गेला। बच्चेसँ प्रखर बुधिक रहने जीतनलाल भाय गामक स्कूलसँ एम.एस-सी.तक प्रथम स्थान पबैत रहला। ओना, शुरूमे माने हाइ स्कूलसँ कौलेज धरि मनमे यएह विचार रोपने छला जे एम.एस-सी.क पछाइत कौलेजमे नोकरी करब, प्रोफेसर बनब। मुदा एम.एस-सी.क रिजल्ट निकैलते भाभा शोध संस्थानमे भेकेन्सी भेल, जीतनलाल भाय अप्लाइ केलैन आ सलेक्ट भऽ गेला।

अड़तीस बर्खक सेवाक पछाइत वैज्ञानिकजी 5 दिसम्बरकेँ संस्थानसँ सेवा निवृत्ति भेला। जुलाई मासक पहिल सप्ताह, आद्रा नक्षत्र काल्हिये समाप्त भेल। सालक अखन तकक जे मौसम रहल माने बरसातक, ओ अनिश्चित रहल। अनिश्चित भेल जे ऐगला समय माने बरसातक केहेन हएत तेकर अनुमान ठीक-ठीक नइ लागब। जहिना भिनसुरका सुर्ज देखलासँ लोक अनुमान तँ कइये लइ छैथ जे औझुका दिन केहेन हएत। तहिना सालक तीनू मौसमक सेहो अछि। तीन मौसम भेल जाड़, गरमी आ बरसात। कोनो मौसमक, पूर्व पक्ष माने चारि मासक मौसममे शुरूक जे एक-सवा मास होइए, ओकर सीख-लीख पकैड़ लोक अनुमान लगा लइ छैथ जे मौसमक ऐगला रूप केहेन हएत, से नइ भेल। किए तँ अखन तक जे समय बीतल

छल ओ ने रौदियाहेक आभास दइ छल आ ने तेहेन विकराल बरसातेक। शुरू जेठमे एकटा नमहर बरखा भेल जइसँ किसान सभ अपन गरमाधानक बीआसँ लऽ कऽ अगहनी-धानक बीआ तक पाड़ि लेलैन। ओना, बीआ पाड़ला पछाइत केते गोरेक मुहसँ निकलल छेलैन जे ऐबेरक समय सवारी हएत जइसँ मौसमो आ समयो नीक रहत। जखन मौसम नीक रहत तखन उपजावारी सेहो नीक हेबे करत। संजोगवश जेठ मासक बीच-बीचमे दूटा हाली बरखा भेबो कएल, जइसँ धानक बीआक उपज नीक रहल। शुरू अखाढ़मे माने आद्रा नक्षत्रक पहिल दिन नीक बरखा भेल, जइसँ तीन-चारि दिन धुरझार धनरोपनी चलल, एक चौथाइसँ बेसी खेत अबाद भऽ गेल। मुदा पोखैर-झाँखैर नहि भरल तइसँ केते गोरेक अनुमान ईहो हुअ लगल छेलैन जे जँ आद्रामे भूमि भरल नहि तखन रौदियाहे समय मानल जाएत। ओना, ढेनुआर नक्षत्र सभ पछुआएले अछि, तँए पानिसँ भूमि भरैक सम्भावना समाप्ते भऽ गेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। आद्रा नक्षत्रक उतारमे सेहो एकटा बरखा भेल जइसँ दू दिन रोपनी चलल, मुदा पोखैर-झाँखैर खालीक-खालिये रहि गेल। आद्राक शुरूक बरखामे जेतेक पानि पोखैरमे बेसियाएल छल ओ तेरह दिनक जेठुआ रौदमे सुखि कऽ कमियाइये गेल। ओना, आम-जामुनक सुभर पैदावार भेबे कएल अछि।

रेडियोओ-अखबारो सभसँ मान सरोवरक महात्मक भरपूर प्रचार शुरू भेल। गाम-घरक लोक तँ कम्मो मुदा महनथानो सबहक आ शहरो-बजारक लोक सभ आकर्षित भेबे केलाह। मानसरोवर जेबा-ले सभ तरहक सुविधो भइये गेल अछि। ओना, हवाई जहाजसँ लऽ कऽ हेलीकेप्टर आकि चरिचकिया गाड़ी सबहक रस्ताक बाबजूदो पएरे सेहो चलइ पड़ैए। मुदा से लोकक मनसँ घसैक गेल अछि। घसकबो केना ने करत, जैठामक विचारमे माघ सन जाड़क

समयकेँ एक दिन बीतने लोकक मनमे बिसवास जगिते अछि जे 'गेल माघ उनतीस दिन बाँकी', तैठाम जँ आधासँ बेसी रस्ताक सवारीक सुविधा मानसरोवरक लेल भइये गेल अछि। तँए, धापे-धाप पहुँचब असान भइये गेल अछि...।

जीतनलाल भाय मनमे रोपि लेलैन जे ऐबेर मान सरोबरक यात्रा करबे करब। दूरक यात्रा अछि तँए जँ एकटा संगी भऽ जाएत तँ ओ नीक रहत।

सातो भाँइक भैयारीमे जीतनलाल भाय लगा पाँच भाँइ बाहरे-बाहर नोकरी करै छैथ, खाली हम दुनू भाँइ माने हम आ जीवनलाल भाय गाममे रहै छी। हमर कोनो हिसाबे ने अछि, सातो भाँइमे सभसँ छोट रहने छबो पढ़ल-लिखल भाइयो आ वृद्ध पिताजी सेहो पढ़बै-लिखबैपर धियान नै देलैन, अनठा देलैन, जइसँ नामो-गाम आ किताबो पढ़ब तँ सीख लेलौं, मुदा गीता-भागवत पढ़ैक लूरि नहि भेल। ओना, धरमागती पुछी तँ हुनका सबहक दोख नहियेँ छैन। किए तँ अधबेसूए अवस्थामे माइयो मरि गेली आ पिताजी सेहो बिमारीक फेड़मे पड़ि गेला जइसँ हमरा पढ़ै-लिखैपर धियान नहि दऽ सकला। ओना, जेठ भाए सभ सक्षम छला जइसँ पढ़ा-लिखा सकिते छला मुदा ओ सभ कान-बात ऐ दुआरे नइ देलैन जे जखन सभ भाँइ नोकरी करिते छी, नीक कमाइ अछिए तखन घरक ओगरवाहियो-ले आ मातो-पिताक टहल-टिकोरा-ले तँ आदमी चाहबे करी, तइले भने भैयारीमे सातम भाय- सेवालाल अछिए। जखन नोकरी-चाकरी नहियेँ करैक छै तखन अनेरे किए पनरह-बीस बरख तक स्कूल-कौलेज धाँगत...। तँए हम बौक-बकलेल रहिये गेलौं। ओना, हमरा सन ढेरो लोक गामोमे अछि आ देशोमे अछिए। दुनियाँक तँ कोनो हिसाबे नहि। ओना, जँ बुधिमान आ बौक-बकलेलक जनगणना ठीकसँ हुअए तँ एकोअना लोक बुधिमानक श्रेणीमे नइ औत,

पनरहअनासँ बेसीए हमरे सन-सन लोकक अछि।

परसू वैज्ञानिक भाय मानसरोवरक यात्रापर निकलता। दूरक यात्रा, तँए एकटा संगीक खगता छैन्हे। ओना, अखन तक बहुतो यात्रा वैज्ञानिक भाय कऽ चुकल छैथ आ से देशक संग दुनियोँक, मुदा तइ सभ यात्रामे पत्नी संग दइ छेलैन। मुदा ऐ यात्रामे जीतनलाल भाय पत्नीकेँ संग नहि लऽ जाए चाहै छैथ। नइ लऽ जाइक विचारक पाछू कारण छैन जे एक तँ उमेरोक हिसाबसँ, दोसर अपन तँ फुहराम शरीरो छैन आ सभ दिन जे लोहा-लक्कड़क बीच काज केलैन तइसँ देहमे ताकतो छैन्हे। मुदा भौजी तँ भरि दिन डेरामे रहि खेबो-पीबो खूब करै छेली आ टी.बी., कम्प्यूटरक खेल देखैत-देखैत अथबलो भइये गेल छैथ, माने केतेको बिमारी सेहो पोसि नेने छैथ तँए वैज्ञानिक भाइक मनमे शंका छैन जे जँ पत्नीकेँ संग करब तँ अपन मदत कि हएत जे अपने भरि दिन हिनकर टहल-टिकारो करए पड़त, तँए नहियेँ लऽ जाएब नीक। हमरा, ओना हमर नाओंए सेवालाल छी मुदा आब ओते ऊहिये ने रहल जे मानसरोवर सन रस्ताकेँ पार करब। ओहन-ओहन रस्ताक ठेकाने रहत, आकि दिशांसे नइ लागत सेहो ठीक अछि। तँए, जाइने कऽ वैज्ञानिक भाय हमरा नहि कहलैन। हँ, मैझला भाय–जीवनलाल भाय जे गामेमे रहि विद्यालयमे नोकरी करै छैथ। माने गामसँ कोस भरिपर विद्यालय छैन। तहूमे संस्कृत महाविद्यालय, जेकर की स्थिति अछि से केकरोसँ छीपलो नहियेँ अछि। विद्यार्थीसँ बेसी शिक्षके छैथ। जीवनलाल भाय अपन उपस्थिति बना, एक-आध घन्टा संगी सभसँ गप-सप्प करै छैथ आ घुमि कऽ अबै छैथ। यएह हुनकर सभदिना रूटिंग छैन। प्रोफेसरक दरमाहा सेहो पबिते छैथ जइसँ परिवारोक भरण-पोषण नीक जकाँ होइते छैन। तँए, जीवनलाल भाय बेसी उपयुक्त रहतैन। वैज्ञानिक भायकेँ सेहो जीवनलाल उपयुक्त संगी

बुझि पड़लैन। जीवनलालकेँ लगमे बजा वैज्ञानिक जीतनलाल भाय कहलखिन-

“बौआ, मानसरोवर जाइक विचार मनमे बहुत दिनसँ अछि मुदा समय नइ पबै छेलौं, तँए नहि गेल भेल। ऐबेर समय पेलौं हेन, जेबाक विचार भऽ गेल। दूरक यात्रा छी तँए जँ दुनू भाँइ संगे चलब तँ नीक रहत।”

मानसरोवरक जे आध्यात्मिक परिचय अछि ओ जीवनलाल भाय जनै छैथ, तँए जेबाक कोनो तेहेन जिज्ञासा मनमे नहि जगलैन। ओना, नवकबरिये उमेरमे माने तीसे-बत्तीस बर्खक अवस्थामे जीवनलाल भाय मानसरोवरक यात्रासँ भऽ आएल छैथ जइसँ रस्ताक दुर्गमता अखनो ओहिना मनमे नचै छैन। मुदा वैज्ञानिक भाइक मनमे किए एहेन विचार ऐ उमेरमे एलैन ओ मने-मन जीवनलाल भाय विचारए लगला। मानसरोवरक एहेन रस्ता अछि जैठाम जेबा-ले केतबो गाड़ी-सवारीक सुविधा किए ने भेल मुदा पएरे तँ ओहन रस्ता चलै पड़त जइमे माघो मासक शीतलहरीक जाड़सँ बेसी जाड़ अछि। तेतबे नहि, रस्तो तेहेन उभर-खाभर अछि जे केतए पिछैड़ कऽ खसब आकि ठेँस लागत तेकरो ठीक नहियेँ अछि। ओहन जगहपर जँ जीतनलाल भायकेँ जेबाके छेलैन तँ ओइ उमेरमे जइतैथ जइ उमेरमे सभ किछु बरदास करैक शक्ति देहमे छेलैन। आब जखन बुढ़ भेला हेन, साठि बर्खक उमेर भेलैन हेन तखन मानसरोवर जाइले तैयार भेला हेन। एकरा नेनमैत कहब की नहि? मरै बेरमे जँ बुधिक बखारीए माथमे घोंसिया जेतैन तँ ओकरा लइये कऽ की करता? जाबे नियार-भास करता तइ बिच्चेमे जँ बखारी टुटि कऽ खसि पड़तैन तखन? तहूमे रस्तेमे जँ केतौ मरि-हरि गेला तखन तँ सेहो ने पेब सकता जे पबैक विचार मनमे जोर मारने छैन! मुदा जेठ भाय होइक नाते की बाजब से तँ विचार जीवनलाल भाइक

मनमे उठिये गेल छेलैन। ओना, मन निर्णित छेलैन जे कोनो हालतमे जेबाक नहि अछि। मुदा जेठ भाय तँ पिता तुल्य होइ छैथ, आदेशो नइ मानब सेहो केहेन हएत। तँए मुँह बन्न केने जीवनलाल भाय मने-मन विचारैत वैज्ञानिक भाइक आगूमे ठाढ़ छला।

जीवनलाल भायकेँ गुम-सुम ठाढ़ भेल देखि वैज्ञानिक भाय दोहरबैत बजला- "बौआ, किछु हँ-हूँ नहि बजलह?"

ओना वैज्ञानिको भायकेँ जीवनलालक गुम्मीक माने लगिते छेलैन, मुदा नइ बजैक माने नहियेँ भेल सेहो केना मानल जाए। तहिना जीवनो भाइक मनमे छेलैन्हे जे नइ जाएब कि जाएब से तँ किछु ने बजलौं हेन। ओना, जीवन भाय मने-मन ईहो सोचि रहल छला जे एहेन-एहेन लोहा-लक्कड़क बीच रहैबलाकेँ झूठ बाजि ठकलो जा सकैए, मुदा छैथ तँ जेठ भाय, जँ बुझि जेता तखन अनेरे चान जकाँ मनमे पहाड़क करिया धब्बा बैस जेतैन। से नहि तँ पहिने गैंची माछ जकाँ थालमे नुकाइक कोशिश करी, जँ सुतैर गेल तँ बड़बढ़ियाँ, नहि तँ दोसर रस्ता धड़ब...। जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब! अखाढ़ मास चलि रहल अछि, गुरु पूर्णिमा आगूमे अछि, केते प्रेम आ मेहनतसँ आमक कलम लगौने छी से तँ बुझले अछि। देखिते छिऐ जे जहिना राइर, तहिना फैजली, तहिना मोहर ठाकुर अछि आ तहिना अम्रपाली सेहो बोनाएल अवस्थामे तरतर करैए, एकरा सभकेँ छोड़ि जाएब नीक हएत।"

जीवनलाल भाइक विचारमे वैज्ञानिक भाय जेना बहि गेला तहिना बोहियाइत बजला- "मानसरोवर जाइमे बर बेसी तँ पनरह दिन लागत, तैबीच की सभ आम सठिये जाएत जे मन छह-पाँच करै छह?"

ओना, जीवनलाल भाइक मनमे उठि चुकल छेलैन जे

वैज्ञानिक भाय भौतिक विज्ञान जनै छैथ, मुदा जीवन विज्ञान हमरा जकाँ थोड़े जनै छैथ जे हमर बात बुझता। भावातुर भऽ जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, प्रश्न जँ आमे खाएबक रहैत तखन अहाँक विचार सोल्होअना मानै-जोकर छल। किए तँ अखन गाछेमे आम लागल अछि। जँ आठ दिनक पछाइत तोड़लो जाएत तैयो पनरह दिन आरो रहबे करत। मुदा से बात तँ अछि नहि।"

अपन विचारकेँ खण्डित होइत देखि वैज्ञानिक भाय पुछलकैन- "तखन की अछि?"

जीवनलाल भाइक मन मानि लेलकैन जे प्रश्नक ने उत्तर देब अछि। जेठ भाय रहितो तँ प्रश्नकर्त्ते ने भेला। आह्लादित भऽ जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, जहिना वृन्दावनमे कृष्णक परोछ भेने राधिका सभ विरहाए लगै छेली, तइसँ की कम प्रेम हमर आमो आ आमक गाछोक प्रति अछि।"

जीवनलाल भाइक विचारमे वैज्ञानिक भाय वौआ गेला। पुन: प्रश्न केलैन-

"से की?"

सोलहन्नी गोटी लाल होइत देखि जीवनलाल भाय बजला-

"जहियासँ आमक पीपही रोपलौं तहियेसँ सिनेहक संग प्रेमो आमो आ आमक गाछियो संग बनि गेल अछि। गाछक संग जुआन हारि गेल छी जे जाबे अपने जीबैत रहब ताबे तोरो जीबैत रखबौ! अपने मानसरोवर जाएब, जइमे कमसँ कम पनरह दिन लागत आ तइ बिच्चेमे जँ चोरे-चहार चोरा कऽ आम तोड़ि लिअए तखन ओकर रक्षा कऽ सकलिऐ? जखन चीजे विरहा जाएत तखन ओकरा संग जे

प्रेमक वादा केने छिऐ से रहत?”

भौतिक जुगक भौतिकवादी वैज्ञानिक भाय- जिनक ज्ञान सेवा निवृत्तिक पछाइत जखन विज्ञानक रूपमे लतड़लैन तखन सज्ञानक बाट हुनका मनमे उठलैन। सेवा निवृत्तिक माने काजसँ मुक्त, अर्थात् हाथसँ काज चलि गेल वा छीना गेल। काजुल लोककेँ जखन हाथक काज छीना जाइए तखन अबैबला जिनगी मृतप्राय बनि जाइए। तँए, ओ अपना-जोकर काजक पाछू वौआए लगिते अछि। सएह वैज्ञानिक भायकेँ भेलैन। एक दिस ज्ञान एते प्रखर भऽ गेलैन जे दुनियाँक खोजी बनि गेला। दोसर दिस अपन ज्ञानकेँ विज्ञानक दिशामे बढ़ौलैन आ तेसर दिस विज्ञान, समाज आ शास्त्रक बीचक खाधिमे तेना पड़ला जे मन बबलाकऽ मानसरोवरक यात्राक लहैरमे हेलए चाहि रहल छैन। गणितक गणना करैबला वैज्ञानिक भाय जीवन, समाज आ दुनियाँक जखन गणना करए लगै छैथ तँ हिसाबे गड़बड़ा जाइ छैन। जइसँ कोन हिसाबकेँ सही मानी आ कोन हिसाबकेँ गलत, अही गलत-सहीक बीच मन फँसि गेल छैन। अन्तत: जेकर एकेटा उपाय सुझि रहल छैन जे अपन आँखिक देखलकेँ सही मानब। तँए मानसरोवरक यात्रा मनमे गहींर तक धँसि गेल छैन...। वैज्ञानिक भाय बजला- “बौआ जीवन, जेते आम नोकसान हेतह ततेक दाम हम दए देबह।”

वैज्ञानिक भाइक विचार सुनि जीवनलाल भायकेँ अपन विचारक रस्ता कटैत बुझि पड़लैन। मने-मन गर अँटबए लगला जे आब की करब। मुदा लगले एकटा जुक्ति फुरलैन। फुरलैन ई जे वैज्ञानिक भाय कि मानसरोवरकेँ शीतल, कोमल, पवित्र हृदय रूपी सरोवर थोड़े बुझि रहला अछि ओ तँ एकटा भौगौलिक स्थान बुझि रहला अछि। ओकरा देखबकेँ काज बुझि रहला अछि। काजकेँ तँ काजेसँ रोकल जा सकैए। से नहि तँ ओहने जब्बर काज जँ आगूमे

दिऐन तँ जरूर मन मानि जेतैन आ अपन छुट्टी भऽ जाएत। जखने अपन छुट्टी हएत तखने ने दुनू गोरे छुट्टा भऽ जाएब आ अपना-अपना मने अपन काज सम्हारब, पछाइत अपन विचारता जे केना करब...। जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, अहाँ जखन गाम आएलो ने रही तहियेक काज आगूमे सिरचढ़ भऽ गेल अछि, की ओकरा छोड़ि देब उचित हएत?"

वैज्ञानिक भाइक मन कनी ठमकलैन। बजला-

"ओ तँ काज-काजपर निर्भर अछि। काजोक तँ अपन माप-तौल अछि। नमहर[27] काजक आगू छोट काजकेँ कम वजन भेल।"

जीवनलाल भाइक मनमे खुशी उपैक गेलैन। ओ मने-मन बुझि गेला जे जहिना सत् बात लत्ती जकाँ लतड़ल रहैए तहिना बहानाक लेल झूठोक लत्ती तँ अछिए। मुदा ठाँहि-पठाँहि झूठोक लत्तीकेँ लताड़बसँ नीक जे सामनजस करैत लताड़ी। जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, अपनेक संग पूरैमे कनी असोकर्ज भऽ रहल अछि। ने तँ एक संग दू-दूटा महतपूर्ण कर्तव्य अछि तेकरासँ मुँह मोड़ब आकि मुँह घोकचाएब नीक थोड़े भेल?"

नीकक संग अधलो तँ लगले रहैए, वैज्ञानिक भाय सेहो जिनगी भरि यएह ने तर्क करैत सिद्धान्त मनमे रोपने छैथ जे कोनो वस्तुक साक्षेप-निरपेक्ष दुनू होइए। यएह विचार मनमे जगि गेलैन। बजला-

"एकरा के नीक कहत?"

'एकरा के नीक कहत' सुनिते बाढ़िक पानिक पाहिपर चढ़ल

---

[27] भारी

रोहु माछ जकाँ जीवनलालकेँ बुझि पड़लैन। मुस्की दैत बजला-

“भाय साहैब, जिनगीक कोनो ठेकान अछि जे केते दिन सेवा करैक मौका भेटत। तखन तँ भेल जे जखने सेवा करैक गर लागए कि ओकरा करैत चली, निमाहैत चली मुदा तइमे अपना थोड़ेक खाँच भऽ रहल अछि।”

वैज्ञानिक भाय बजला- “बौआ, की खाँच भऽ रहलह हेन?”

मनकेँ मसोसैत मुहकेँ चिकुरियबैत जीवनलाल भाय बजला-

“भाय साहैब, छह मास पहिलुके बात छी, एके दिसम्बरकेँ अपना सारिकेँ ऑपरेशन करबए डाक्टर ऐठाम गेल रही। पेटक भीतरक ऑपरेशन रहइ। बिमारीक नाओं बिसैर गेल छी। तेते भीड़ ओइ डाक्टर ऐठाम देखलिऐ, जे की कहूँ। छह-छह मासक नम्बर लगैए। हिनकर नम्बर चारिम दिनक छैन, आब अहीं जे कहब से करब।”

वैज्ञानिक भाइक मन मानि गेलैन जे अपने ने घर-दुआर, गाम-समाज छोड़ि बाहर रहलौं, मुदा जीवनलाल तँ सभ दिन गामेमे रहि आर्थिको उपारजन केलक आ समाजक सेवो केलक। तँए, ओकरो अपन जीवनो छै आ जीवनक गतिविधियो तँ छइहे। वैज्ञानिक भाइक मनमे धाँइ-दे खसलैन- केकरो जीवनमे बाधा उत्पन्न करब सभसँ पैघ अपराध छी। तहूमे जँ ऐ सालक (माने जनवरीक पछातिक) काज रहैत तँ ओकरो आगूओ बढ़ाएल जा सकै छल, जेना लोक सराधक (श्राधक) भोजो आ किरियो-कर्म बरखी दिन-ले रखि लइए। मुदा ई तँ जीवन-मृत्युसँ जुड़ल अछि। ओना, जीवन-मृत्युसँ जुड़ल अनेको प्रश्न जुड़ल अछि। मुदा जीवनक प्रति लोकोक तँ अपन-अपन नजैर अछिए। जहिना करोड़ो-अरबो लोक अछि तहिना करोड़ो-अरबो नजैर सेहो अछिए। कियो पानिसँ हल्लुक हवाकेँ आ कियो माटिसँ

हल्लुक पानिकेँ तँ कियो पाथरसँ हल्लुक माटिकेँ बुझैए। मुदा अपन-अपन जगहपर सभ भारियो अछि हल्लुको अछिए। पानिक जँ समुद्र छी, माने पानियेँ समुद्र छी तहिना पाथरेक पहाड़ो छी, माने पहाड़े पाथरो छीहे। तही बीच ने झंझटो अछि आ मिलान सेहो अछिए। अफ्रीकाक जंगल कहियौ कि सहाराक मरूभूमि कहियौ आकि रामवन कहियौ कि वृन्दावनक कृष्णवन, सबहक बीच तँ जीवन चलिये रहल अछि..! वैज्ञानिक भाय अपन विचारक अस्तित्वकेँ असथिर कइये ने पेब रहल छैथ। मनक ओजकेँ शरीरक ओजसँ मेल-मिलाप भइये ने रहल छैन। असोथकित होइत वैज्ञानिक भाय बजला-

"बौआ, मनमे जखन रोपि नेने छी जे मानसरोवर जेबे करब तखन तँ भेल जे एकटा संगी रहने कने नीक होइ छइ।"

वैज्ञानिक भाइक सहमैत विचार देखि जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, व्यक्तिगत हमर खगता नइ ने अछि, संगी चाही, तइले अहाँ चिन्ता जुनि करू। अखने हम गाम दिस जाइ छी, मानसरोवर चलैक हरविर्ड़ो कऽ देबइ। पुरुख-पातर जँ संगी नहियोँ हेता तैयो दसटा जनीजाति संगी हेबे करती।"

ओना, जीवनलाल भाइक विचार सुनि वैज्ञानिक भाइक मन जुड़ेलैन, मुदा शंका ईहो भेलैन जे जँ दसटा जनीजाति संगी भऽ जाएत तखन दसोक हिसाब-बारी लगबैमे दस गुणा काज बढ़िये जाएत...।

सामंजस करैत वैज्ञानिक भाय बजला-

"जँ दसटा भऽ जाथि तखन तँ सर्वोत्तम भेल। नहि तँ एकोटा जँ भऽ जाथि तैयो एक मानसरोवर कि जे सइयो मानसरोवर जाएब

असान भऽ जाएत किने।”

जीवनलाल भाय बजला-

“भाय साहैब, हम ते असगरे गेल रही, कहाँ केतौ भियौन लागल?”

‘भियौन’ सुनि वैज्ञानिक भाइक मन सुरखुरेलैन। सुरखुराइते मनमे उठलैन- नारदजीकेँ कोन संगी छेलैन जे चौदहो भुवन आ तीनू लोक घुमै छला..? नारदजीक घुमब मनमे अबिते वैज्ञानिक जीतन भाइक चेहरापर स्वीकारोक्तिक भाव झलकए लगलैन। जेकरा देखिते जीवनलाल भाय बजला-

“अहाँ अपन तैयारी ठीक राखू संगी भेटबे करत। जखन चोरोकेँ संगी भेटै छै, झूठो बजनिहारकेँ संगी भेटै छै तखन सौध (शुद्ध) केँ किए ने संगी भेटत।”

❑

शब्द संख्या : 2576, तिथि : 31 जुलाई 2018

करतब

सौन मासक पंचमी। भोरेसँ बाला-सुबाला चिकैन माटिक खोभारसँ माटि आनए विदा भेल। सबहक हाथमे एक-एकटा डोमराउ पथिया, जइमे छोट-पैघ चरि-चरिटा मौनी साजल, किएक तँ कुल पाँच बासनक माटिक थुम्हा बनौत। पाँचो बासनक माटिकेँ स्वच्छ पवित्र जलसँ एकठाम सानि पाँचटा थुम्हा बनौल जाएत। ओना, समय निसचित नइ रहने कियो खोभार जाइक तैयारी करैत, तँ कियो रस्तामे जेबो करैत आ कियो-कियो खोभारमे माटि खुनि-खुनि अपन-अपन पथिया-मौनीमे सजेबो करैत, तँ कियो बासन भरि-भरि घरमुहोँ अबैत। संजोग नीक रहल जे ऐबेरक मौना पंचमियो आ सोमवारी व्रतक सोमो एक्के दिन पड़ल। काल्हि रबि छल, सौन मासक पहिल रबि, तँए बाबा विदेश्वरसँ लऽ कऽ कुशेश्वर बाबाक संग बैजनाथ बाबाक मन्दिरमे सेहो भरिपोख जलढरी भेल छल। ओना, जे सभ बैजनाथ आकि कुशेश्वर बाबा ऐठाम गेल छला ओ सभ तँ रस्तेमे छला मुदा जे सभ चण्डेश्वर, विदेश्वर आकि राजेश्वर इत्यादि–लगक स्थान गेल छला ओ सभ काल्हिये घुमि-घुमि घर पहुँचला। आ गाममे जे अजनबी बाबा छैथ ओ तँ गामेमे छैथ, तँए किरिण उगैसँ पहिनहि बहुत लोक जलढार कऽ आबि अपन-अपन जीवनक क्रियाक वृत्तिमे लगि चुकल छला।

दुखमोचन बाबाकेँ ऐ सभसँ–माने पंचमीक थुम्हा, सोमवारी व्रत आ सौनक पहिल रबिसँ कोन मतलब छैन। ओ अपन किसानी जिनगीकेँ संगी बना संगे-संग चलि रहल छैथ। ओना, जमीनक छोट

किसान छैथ- सीमांत किसान, मुदा जनसंख्यामे नमहर परिवार रहने जहिना दुखमोचन बाबाकेँ अपन परिवार भरिगर बुझि पड़ै छैन तहिना हल्लुको बुझिये पड़ै छैन। किएक तँ दुखमोचन बाबाक स्पष्ट सोच छैन जे मधुबनी जिलाक जमीन कि कोनो राजस्थानक जमीन थोड़े छी जे पचास-पचास बीघामे लोक सेरसोए-तोरीक खेती करत। एक तँ मिथिलाक माटि तहूमे मधुबनी जिलाक, ऐठाम तँ एक धुरक खेतीसँ मसल्ला आ पाँच कट्ठाक खेतीसँ सालो भरिक तेलक पुरती एक परिवारमे भऽ जाइ छै, तैठाम जँ राजस्थाने आकि गुजराते लोकक सेहन्ता करब से सोहान्त थोड़े हएत। किछु छी तँ मिथिलाक अंग मधुबनी जिला छी किने। मसल्ला आकि तेल पीब लोक कए दिन जीब सकैए, जीबैले तँ अन्न-पान चाही। सेरसो-तोरी खैहन थोड़े छी, ओ तँ तेलहन छी। खाएर जे छी, जेकर छी से अपन जानह, दुखमोचन बाबाकेँ कोन मतलब छैन। एक तँ किसानी जिनगी छैन तहूमे छोट आँट-पेटक, मुदा जे छैन से छैन, एते तँ आत्मशक्ति छैन्हे किने जे जैठाम एक-सबा कट्ठा जमीन आ एकटा गाए पोसि लोक गुरुआश्रम बना सकैए तैठाम तँ दुखमोचन बाबाकेँ बहुत छैन। कियो केकरो देखौंस करत तइसँ पहिने ने मनमे दुनूक आँट-पेट–अपनो आ देखौंसो केनिहारक–सेहो अजमा लेत। समयक हिसाबसँ दुखमोचन बाबा काज करए अपन खेत दिस विदा भेला।

आठ बजेक समय, चौबीस वर्षीय रेहना दुखमोचन बाबाक ऐठाम पहुँचल। भुलनी दादी आँगनेमे छेली। रेहनाकेँ देखि भुलनी दादीक देह सिहैर उठलैन। मने-मन भगवानकेँ कोसैत विलाप केली- ‘एहने तोहर किरदानी छह जे वेचारीक दिन हेरि लेलहक..!’ मुदा मुहसँ किछु ने बजली। आँगनक मुँह लग रेहना ठाढ़ भेल आधा मुँह झँपने आ आधा उघारने बाजल- “दादी, हम हिनके शरणमे एलिऐन हेन।”

‘शरण’क माने तँ भुलनी दादी बुझि नहि पेली मुदा ‘एलिऐन हेन’ बुझि लगले बजली- “की?”

ओना, भुलनी दादी अपन मनक लोक छथिए। अवगुण एतबे छैन जे दुख हुअ कि सुख, लगले बिसैर जाइ छैथ। बिसरबो की बिसरना जकाँ बिसरै छैथ, सोल्होअना बिसैर जाइ छैथ माने केतबो मोन पाड़ि कहबैन तैयो ने मोन पड़ै छैन। जे अपने तँ नहि मुदा परिवारोक सभ बुझै छैन आ टोलो-पड़ोसक। तँए, जिनका भुलनी दादीसँ काज रहल ओ कण्ठपर सवार भऽ अपन काज अगुआ लइते छैथ। ओना, भुलनी दादीक निर्विकार मन छैन, तँए जे कियो कोनो काजे अबै छैथ ओ अपने तनदेही भऽ पहिने अपन काज हथिया लइ छैथ, मुदा जे पछुएला ओ बिसरनमे उसरन भइये जेता।

भुलनी दादीक मुहसँ ‘की’ सुनि रेहनाक मनक पाँखि निरमए-फरकए लगल। निरैम कऽ फरैकते रेहनाक मन चकभौर लिअ लगल। एकाएक रेहना अपन सोल्होअना मुँह उघारि बाजल-

“दादी, हिनका रामझुमनीक खेती छैन।”

बिच्चेमे भुलनी दादी हड़बड़ाइत पुछलखिन- “तीमन-ले लेबह?”

ओना, भुलनी दादीक बात सुनि रेहनाक मन मुस्कियाएल, मुदा मुँह दाबि बजली- “नइ दादी, रोजगार करब तइले।”

‘रोजगार’ सुनि भुलनी दादी अपनाकेँ कारोबारी नहि मानि बजली- “अखने बाबा खेत गेलखुन हेन, चलह हम कहबैन।”

ओना, दुखमोचन बाबाक नाओं सुनि रेहना सहमल जरूर मुदा भुलनी दादीक बात सुनि निधोख भऽ संगे विदा भेल।

पाँच कट्ठा बरसाती रामझिमनी-खेती दुखमोचन बाबा केने

छैथ। ओना, समयक किरदानीसँ खेती समयपर केलो पछाइत पनरह दिन पछुआ गेल छैन। बरसाती रामझिमनीकेँ समयपर पानिक पियास लगै छै किने, से बरखा नइ भेने बाढ़िमे कमी आबि गेल छेलैन। मुदा राति भरिक हेराएल राहीकेँ जखने भोरक भुरुकबाक भास होइए तखने ने ओकर चान चनैक-चनैक चमकौ लगैए से दुखमोचन बाबाकेँ भइये गेल छैन। खेतक बीचमे ठाढ़ दुखमोचन बाबा अपनो खेती हिया रहल छला आ ओइ सभ किसानपर मने-मन गरमा सेहो रहल छला जे जेसभ सिमान्त किसान अछि। जँ ओकर खेत ऊँचरस छै तँ पानिक ओरियान करि कऽ बरहमसिया खेती पकैड़ बरहमसिया किसान बनि जेबा चाही। तइले तरकारी खेती सेहो अछि आ फलो-फलहरीक संग पानोक खेती कएले जा सकैए आ नहि जँ गहींर खेत अछि तँ माछ-मखान इत्यादि करी। से सभ नहि करि जँ पैघ किसानक[28] देखौंस करब तखन तबाही हेबे करत, जहिना खंजनकेँ हंसक चालि पकड़ने होइ छइ। तहीकाल खेतक आड़िपर अबैत पत्नियोँ आ रेहनोकेँ दुखमोचन बाबा देखलैन। देखिते खेतसँ निकैल आड़िपर आबि बैसला।

फरिक्केसँ भुलनी दादी दुखमोचन बाबाकेँ कहली- "अहींक काज कनियाकेँ छै, तँए भेँट करए आएल अछि।"

झाँपल-तोपल भुलनी दादीक बात सुनि दुखमोचन बाबा झँपले-तोपल बजला- "केहेन काज?"

काजो तँ काज छी, एकर कि कोनो आड़ि-मेड़ अछि। जँ ऐछो तँ कोशिकन्हाक बलुआहा माटिक आड़ि जकाँ अछि, जे केतौ पएरे-पएर उड़ि जाइए, तँ केतौ पानिमे डुमल खेत जकाँ पएरे-पएर तेना

[28] अधिक जमीनबलाक

किचैड़ जाइए जे कदबा-कदबा भेल रहैए, तँ केतौ जिनगीक धुरी बनि सेहो चलैए आ केतौ गप्पक काज बनि मुहेँ-मुँह टहलैत रहैए। खाएर जे जेतए अछि से तेतए रहअ, ऐठाम भुलनी दादी, रेहना आ दुखमोचन बाबाक बीचक बात अछि। जहिना नचार आवेदक अपन आवेदनक अर्जी नचारक संग भोलाबाबाक दरबारमे नचारी गाबि-गाबि मर्जीक लेल लगबैए तहिना रेहना अपन अर्जी पेश करैत दुखमोचन बाबाकेँ कहलकैन-

“बाबा! हिनके दरबारमे आएल छिऐन, शरण दैथ वा भगा दैथ।”

महादेवी वर्माक ‘ठुकरा दो या प्यार करो’ जकाँ रेहनाक बात सुनि दुखमोचन बाबाक मन चकराए लगलैन। चकराइत मनमे विचार उठलैन- बीस-पचीस बर्खक औरतक माँग छी। अखन तक एतबो ने बुझि पेब रहलौं हेन जे गामक छी आ आकि आन गामक, तैबीच कोन सीमापर ठाढ़ भऽ किछु बाजब..? तइ बिच्चेमे भुलनी दादीक मनकेँ सेहो रेहनाक बेथा-कथा धक्का मारलकैन। धक्का लगिते धकियाएल भुलनी दादी पतिकेँ कहलखिन-

“वेचारी दैवक डाँगसँ चुर-चुर भेल अछि तँए अपना ऐठाम आएल अछि।”

‘दैवक डाँग’ सुनि दुखमोचन बाबाक मनमे जेना अस्सी मनक बोझ पड़ि गेलैन। पड़बो केना ने करितैन। दैवक डाँग छी, कोन दैवक डाँग छी, से की कोनो एकेटा दैव छैथ। अपना सबहक हिसाबे चौरासी लाख देव छैथ आ समुद्रकातबला[29] सबहक हिसाबे करोड़मे एकटा कम। मनकेँ असथिर करैत दुखमोचन बाबा विचारए लगला

[29] ऊनि-कुटि- त्रिपुरा

जे रूइयाँक विचौलिया[30] जकाँ देव कोनोमे छिड़ियाएल अछि तँ कोनोमे जोगिया अंडी जकाँ एक्केठाम घोदियाएल अछि, तैठाम किछु भाँज पबैले बीचलाकेँ निकालि धुनि-धुनि कऽ पीर बना पहिने टौकरी आकि चरखामे काटब तखने ने सूत बनत, जइसँ डोरो बनाएब आ डोरासँ वस्त्रो बनाएब, तहिना ओही सूतसँ ने जनेउओ बनाएब आ जनेउ धारक सेहो बनाएब। जने-जन ने बहुजन आ ओही बहुजनमे ने इष्टो जन आ अनिष्ठो जनक बास अछि।

समगम होइत दुखमोचन बाबा रेहनाकेँ कहलैन- “अखन तक नीक जकाँ अहाँकेँ चीन्हि नहि पेलौं, तँए पहिने अपन परिचय कहू पछाइत जे कहैक हुअए से कहब।”

जहिना शरीरमे कोनो घा-घोस रहने ओइमे चोट लगलासँ बेसी दर्द होइ छै तहिना दरदाएल मनमे सेहो होइए मुदा यएह छी मनुक्खक विवेक जेकरा बले लोक विचारि लइए जे जिनगीक सुगम बाट की छी आ दुर्गम बाट की छी। मुदा पोखरिक पानिमे जहिना समाढ़सँ कमल धरिक पैदाइस होइए तहिना केचली-कुमहीक नहि होइए सेहो केना नइ कहल जाएत जे पानिक ऊपरे-ऊपर अपन सिर पसारि भकरार गाछ बनि कमलो फूलसँ नमहर डंटीक बीच फूल फुला नइ चमकैए...।

असमंजसमे पड़ल दुखमोचन बाबाकेँ देखि रेहनाक आँखिमे नोर भरि आएल। नोरसँ ढबकल नयन ज्योति रेहनाक बकार हरण कए रहल छल। मुदा जिनगीक व्याधाक वाणसँ बेधल हंस जकाँ हुकरैत रेहना बाजल- “बाबा! अपन घर तँ आगि लगि जरिये गेल, मुदा परिवारो[31] आ समाजोक मुँह देखि सभ सहैले तैयार छी,

[30] बीचक बीआ

[31] बाल-बच्चा

मुदा..?”

जहिना कोनो कथा-कहानीमे कथाकार वा कहानीकार अपन कथा वा कहानीक पूर्वांसेमे कथा वा कहानीक मर्मकेँ धर्म बुझि प्रतिपादित कए दइ छैथ जइसँ पाठक पवित्र मर्मक परिणाम बुझैले उत्सुक भऽ उठैए तहिना दुखमोचन बाबा उत्सुक भेल जा रहल छला मुदा मनेमे जखन तन-मन जागए लगैन कि जिनगीक खाधिमे विचार लसैक जाइन, जइसँ अपन मनक उद्गार व्यक्त नहि कए पबैथ। होइते अहिना छै जे मर्मभेदी वाणक गति जेतेक गाढ़ सियाहीक रंगसँ लिखलापर रोशनदार होइए ओते घटिया कहियौ कि उड़न्ती सियाहीसँ लिखलापर थोड़े रोशनदार होइए। तँए दुखमोचन बाबा रेहनाक जिनगीक संग जुड़ल बाधापर नजैर अँटकौने अपनाकेँ संयमित करैत रेहनाक ‘मुदा’केँ पकैड़ बजला-

“मुदा की?”

अखन तक बाबाक श्रद्धाक विचारे रेहना अपन मुँहपर जे साड़ीक कोर रखने छल, तेकरा हटबैक विचार करए लगली कि बिच्चेमे दुखमोचन बाबाक नजैर पड़लैन। रेहनाक चेहराक मरचुही रूप देखि दुखमोचन बाबा सिहैर गेला। मनमे उठलैन, बाप रे! ऐ उमेर मे जँ चेहराक रूप एहेन कुदरूप भऽ जाएत तखन ऐ जिनगीक रंग केहेन हएत? मुदा हजारो-लाखो जिनगीक रूप निहारनिहार दुखमोचन बाबाक मनक सिहरन एकाएक कमए लगलैन। किएक तँ दुनियोँक कि कोनो ओर-छोर अछि, ओ तँ अनन्त अछि। ओही अनन्तमे ने आनन्दसँ आनन्दकेँ पकैड़ कऽ आनबो अछि मुदा से तँ बाधा[32] उपस्थिति भेला पछातिये हएत, जे लगले भाँजोपर चढ़ब तँ कठिन अछि। मनकेँ समटैत दुखमोचन बाबा पियासल बेटोही जकाँ

[32] जिनगीमे बाधा

रेहनाक आँखिपर अपन आँखिक ज्योति फेकलैन।

दुखमोचन बाबाक आँखिक ज्योति पबिते रेहनाक आँखिमे पानि पड़ि गेल। पानि पड़िते गुलावक कली जकाँ रेहनाक हृदय कलैश उठल- “बाबा! गामक तँ यएह सभ ने सिरगर छैथ, हिनके सबहक सिरक परसादे ने हमहूँ सभ जिनगीक दर्शन करब।”

रेहनाक विचार जेना दुखमोचन बाबाक विचारकेँ बेध देलकैन। बेधल विचारमे दुखमोचन बाबाक मन गबाही देलकैन जे एका-एकी पुछब नीक नइ हएत, किए तँ बेथित मनक विचार करब कखन थित रहत आ कखन बेथित भऽ जाएत तेकर कोनो ठीक नहि अछि तँए किए ने अल्हा-रूदलक महाराइ जकाँ रेहनो-जिनगीक महराइ सुनि ली। मुदा तइले नीक हएत जे सोझे किए ने पुछिऐ जे अपना मनमे जे अछि से बाजि चलू, पछाइत जे सम्भव हएत तेकर जवाब देब आ जे सम्भव नहि हएत सेहो ठाँहि-पठाँहि कहि देब।

दुखमोचन बाबा बजला-

“पहिने अहाँ अपन सभ बात सुना दिअ, पछाइत बुझल...।”

रेहना दिल खोलि बाजए लगली-

“बाबा, गाममे सभकेँ बुझल छैन जे रेहनाक घरबला राजरोग[33] सँ मरल। नइ उपाय भेल जे इलाज करैबतौं।”

पतिक मृत्युक चर्च सुनि दुखमोचन बाबाक मन चौंकलैन। ओना, हाथमे प्लास्टिकक चूड़ी देखि सेहो नहि परखने छला जे रेहना विधबा अछि। लाहक चूड़ी ने लोक फोड़ि लइए, जे फुटैबला होइ छइ मुदा जे फुटैबला नइ अछि से केना फोड़त। मुदा ई भाँज लगि गेलैन जे रेहना गामेक छी...। दुखमोचन बाबा बजला- “मुँह बन्न नइ करू,

[33] राजरोग भेल कठिन बिमारी, भारी बिमारी

जे बजैक अछि से बाजि जाउ।”

जेना सुखमे अनेको संगी अपने-आप भेटै छै तेना दुखमे थोड़े भेटै छै, जे भेटबो करै छै ओइमे अदहासँ बेसी हँसैबला[34] रहै छै आ अदहासँ बहुत कम हँसबैबला...।

रेहना बाजल-

“बाबा, जखन घरबला जीबै छल तखन दुनू परानी मिलि घर-सँ-बाहर धरिक काज सम्हारि लइ छेलौं, जइसँ तीनटा धियो-पूतो पोसाइ छल आ अपनो दुनू परानीक गुजर चलै छल, मुदा घरबलाकेँ मुइने दुख दोहरा गेल..!”

रेहनाक बात सुनि दुखमोचन बाबाकेँ जेना हृदयक उष्म साँस निकललैन। बजला-

“अखन तक केना खेपैत एलौं?”

दुखमोचन बाबाक प्रश्न सुनि रेहना थरथराए लगल, मुदा मनकेँ सक्कत करैत बाजल-

“बाबा, हिनकासँ लाथ करबैन से ओहन लाथी हम नइ छी। सुख लोक बिसैर जाइ छै मुदा दुख ओहिना मन रहै छइ। पहिनौं घरबलाक संग चिमनीक ईंटो-पजेबो उघै छेलौं आ खेतो-पथारक काज करै छेलौं, तेतबे नहि घर-जोड़ैयामे सेहो मिसतिरी सभक संग ईंटो-मसल्लो उघै छेलौं, मुदा ओकरा सबहक चालि-चलैन देखि मन मानि गेल जे ऐठाम आब बास नइ हएत।”

बिच्चेमे दुखमोचन बाबा बजला-

“तब?”

रेहना- “जे दिन बीत गेल ओ तँ कटि गेल मुदा आगूक जिनगी

---

[34] केकरो कष्टसँ हँसैबला

समयक संग चलए सएह ने हिनका कहबैन?"

दुखमोचन बाबा बजला-

"अपना खेत अछि, जँ गुजर करै-जोकर[35] दऽ दी तइसँ पार-घाट लागत?"

रेहना बाजल- "जहिना करखन्नामे कोनो सामान बनैमे केतेको आइटम काज होइ छै, आ सभ आइटमक काज सभ तरहक करिन्दासँ लेल जाइ छै तहिना ने खेतियो अछि।"

रेहनाक बात सुनि दुखमोचन बाबाक मन मानि गेलैन जे खेतसँ पहिने उपजा हएत तखन ने ओकर निकास समाजक बीच हएत, तइले तँ एक आइटम काज भेल खेत उपजाएब आ दोसर भेल उपजा कऽ बेचब। असगरुआ वेचारी केना सम्हारि पौत। मुदा ईहो तँ अछिए जे केकरो सोझे मुँहक असीरवाद देने तँ मुँहमे मुंगबा नइ भेटै छै, तइले हनुमानजी जकाँ नइ मुगरदन तँ मुगरियो भाँजहि पड़त...।

दुखमोचन बाबा बजला-

"अपन की मन अछि?"

'अपन मन' सुनिते रेहना विस्मित भऽ गेल। विस्मित होइते रेहना बदलए लगल। आब ओ रेहना नहि, जे पहिने छल। आब रेहना अर्द्धनारीश्वर बनए लगली। पुरुषत्वक प्रवेश रेहनाक तन-मनमे हुअ लगल।

रेहना बजली- "बाबा, जाबे लोक जीबैए ताबैये ने धरम-करम निमाहैए। अखन ते हमहूँ तीनू बच्चाक माए बनि जीविते छी, तँए

[35] गुजरक माने दुनू, ओते काजो आ ओते आमदनियोँ

अपन करतब निमाहबे ने अछि।”

दुखमोचनो बाबाक मनक पट जेना खुजि गेलैन, बजला-

“पाँच कट्ठा रामझिगुनिक खेती अछि, अधा-अधार्कें पाहि लगा जँ तोड़ब तँ सभ दिन करखन्ने जकाँ निकलत। ओकरा बेच कऽ जेतेसँ परिवार चलत से रखि लेब, बाँकी हमरा दऽ देब।”

दुखमोचन बाबाक बात सुनि रेहना मुस्किया उठली।

❑

शब्द संख्या : 2132, तिथि : 04 अगस्त 2018

Notes